Chapter - 1

यूरोप में राष्ट्रवाद

➤ यूरोप एक महादेश हैं।

➤ यूरोप महादेश में इटली, जर्मनी आस्ट्रिया, प्रशा, रूस, ब्रिटेन, यूनान, पौलेंड बोहेमिया आदि देश आते है।

राष्ट्रवाद

➤ राष्ट्र के प्रति प्रेम की भावना को राष्ट्रवाद कहते हैं।

➤ राष्ट्रवाद एक ऐसी भावना है जो किसी भौगोलिक, सांस्कृतिक या समाजिक परिवेश में रहने वाले लोगों में एकता का वाहक बनती है।

यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास में सहायक तत्व :-

➤ पुनर्जागरण के फलस्वरुप उत्पन्न परिस्थितियां

➤ 1789 के फ्रांसीसी क्रांति के आदर्श

➤ नेपोलियन का सैन्य अभियान

➤ मेटरनिख की प्रतिक्रियावादी नीति नेपोलियन युग (1804 से 1815)

➤ 1804 में नेपोलियन फ्रांस का सम्राट बना | : 1804 में नेपोलियन ने नेपोलियन सहिंता लागू किया ।

➤ 1815 में नेपोलियन वाटरलू के युद्ध में हार गया।

PDFSARTHI.COM

➤ मित्र राष्ट्रों ने नेपोलियन को कैद कर सेंट हेलेना नमक टापू पर रख दिया। जहां 1821 में नेपोलियन का मृत्यु हो गया।

मेटरनिख युग (1815 से 1848)

➤ यूरोप की विजय शक्तियां नेपोलियन के पतन के बाद 1815 में ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में एक सम्मेलन बुलाया जिसे वियना सम्मेलन के नाम से जाना जाता है।

➤ वियना सम्मेलन की अध्यक्षता ऑस्ट्रिया के चांसलर मेटरनिख ने की।

➤ मेटरनिख प्रतिक्रियावादी शासक था जिसका उद्देश्य था गणतंत्र का विरोध करना और राजतंत्र का करना। पुनः स्थापना

वियना कांग्रेस की उपलब्धियां

➤ इटली पर अपना प्रभाव स्थापित रखने के लिए मेटरनिख ने उसे कई राज्यों में विभाजित कर दिया।

➤ सिसली और नेपल्स के प्रदेश बुर्बोवंश के सम्राट फर्डिनेंड को दे दिया गया।

➤ रोम और उसके आसपास के राज्य पोप को सौंप दिया।

➤ लोम्बाडी और वेनेशिया पर ऑस्टिया की प्रभुता कायम हुई।

➤ परमा, मोडना और टस्कनी के प्रांत हैब्सबर्ग राजवंश को दे दिए गए।

➤ जेनेवा और पिडमॉन्ट के राज्य में सम्मलित कर दिए गए ।

➤ जर्मनी में 39 रियासत का संघ कायम रहा जिस पर ऑस्टिया का अधिकार स्थापित किया गया तथा हर संभव प्रयास किया गया की राष्ट्रीयता की भावना नहीं जगे।

PDF SARTHI.COM

1789 की फ्रांसीसी क्रांति के कारण

➤ समाज 3 वर्ग में विभाजित हुआ था पादरी, कुलीन और निम्न वर्ग। तीनों वर्ग के बीच काफी और असमानता थी।

➤ फ्रांस का राजा लुई 16 वां निरंकुश शासक था।

➤ फ्रांस के लोगों पर टैक्स का बोझ अधिक हो गया था।

1789 की फ्रांसीसी क्रांति के परिणाम

➤ लुई 16वां के राजशाही का अंत

➤ जनतंत्र का स्थापना

➤ यूरोप के देशों में राष्ट्रवाद का प्रसार

1830 के फ्रांसीसी क्रांति के कारण

➤ मेटरनिख की प्रतिक्रियावादी नीति

➤ चाल्स X का निरंकुश शासन

➤ चाल्स X द्वारा जनतंत्रवादी भावना

➤ उदारवादियों द्वारा अभिजात वर्ग व्यवस्था का विरोध 1830 के फ्रांसीसी क्रांति के परिणाम

➤ चार्ल्स X फ्रांस की गद्दी को त्याग कर इंग्लैंड पलायन कर गया

➤ फ्रांस में बुर्बो वंश का अंत

➤ आलेंयेंश वंश के लुई फिलिप का शासक बनना उदारवादी एवं संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना

PDFSARTHI.COM

- मेटरनिख व्यवस्था को चुनौती

1848 के फ्रांसीसी क्रांति के कारण

- लुई फिलिप की कमजोर नीति
- लुई फिलिप के द्वारा प्रतिक्रियावादी गीजो को प्रधानमंत्री बनाना
- वैधानिक, संवैधानिक और आर्थिक किसी भी प्रकार का सुधारात्मक कार्य नहीं करना
- पूंजीपति वर्ग को साथ रखना
- असफल विदेश नीति
- बेरोजगारी एवं भूखमरी का बढ़ना

1848 के फ्रांसीसी क्रांति के परिणाम

- पुरातन व्यवस्था का अंत
- द्वितीय गणराज्य की स्थापना
- लुई नेपोलियन 3 का फ्रांस का सम्राट बनना

इटली के एकीकरण में बाधक तत्व

1. इटली कई छोटे छोटे राज्य में विभक्त था ।
2. इटली और आस्ट्रिया तथा फ्रांस जैसे विदेशी राष्ट्रों का हस्तक्षेप था |
3. पोप का इच्छा था की इटली का एकीकरण स्वंय उसके नेतृत्व में हो ।

इटली के एकीकरण में सहायक तत्वः-

PDF SARTHI.COM

1. राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रभाव

2. फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव

3. इटली विजय के बाद नेपोलियन द्वारा इटली को तीन गणराज्यों में गठन सिसपाईन, लिगुलियन और ट्रांसपेडेन |

4. वियना कोंग्रेस के द्वारा के दो राज्य पीडमाउन्ट और सार्डीनीया जा एकीकरण 5. मेटरनिख की प्रतिक्रियावादी सोच

6. नागरिक आन्दोलन

7. मेजनी, काउन्ट कावुर और गैरीबाल्डी का योगदान मेजिनी मेजिनी साहित्यकार, गणतांत्रिक विचारों गतांत्रिक विच और योग्य सेनापति का समर्थक मेजिनी का सबंध कार्बोनरी नामक गुप्त दल से था |

मेजिनी

➤ मेजिनी साहित्यकार, गणतांत्रिक विचारों का समर्थक और योग्य सेनापति था।

➤ मेजिनी का सबंध कार्बोनरी नामक गुप्त दल से था |

➤ 1830 में मेजिनी उतरी और मध्य इटली का एकीकरण करना चाहा लेकिन मेटरनिख ने नागरिक आंदोलन को दबा दिया | जिसके कारन मेजिनी को इटली से पलायन करना पड़ा |

➤ मेजिनी में 1831 में यंग इटली नामक संस्था का स्थापना किया।

➤ मेजिनी ने 1834 में यंग यूरोप नामक संस्था का स्थापना किया 1848 में मेजिनी पुनः इटली आया ।

PDFSARTHI.COM

➤ मेजिनी इटली का एकीकरण कर गणराज्य बनाना चाहता था लेकिन सार्डीनीया पीडमाउन्ट का शासक चार्ल्स एल्बर्ट अपने नेतृत्व में सभी प्रान्तों का विलय करना चाहता था | पोप इटली को धर्मराज बनाना चाहता था | इस तरह विचारो के टकराव के कारण इटली का एकीकरण का मार्ग अवरुद्ध हो गया | मेजिनी पुनः पलायन कर गया |

19 वीं सदी के मध्य इटली सात राज्यों में विभक्त था।

1. सवोई - सार्डीनीया – राजा
2. लोम्बार्डी-वेनिशिया – आस्ट्रिया
3. सिसली और नेपल्स – फर्डिनेंड
4. पेपल – पोप
5. पदमा हैबसवर्ग राजवंश
6. मोडेना हैबसवर्ग राजवंश
7. टस्कनी हैबसवर्ग राजवंश

काऊंट कावुर

➤ सार्डीनीया पिडमाऊंट के शासक विक्टर इमैनुएल काऊंट कावुर को प्रधानमत्री नियुक्त किया ।

➤ काऊंट कावुर एक सफल कूटनीतिज्ञ एवं राष्ट्रवादी था । काऊंट कावुर इटली के एकीकरण में सबसे बड़ी बाधा आस्ट्रिया को मानता था

➤ 1853-54 के क्रीमिया के युद्ध में आस्ट्रिया को हराने के लिए काऊंट कावुर ने फ्रांस के तरफ से भाग लिया ।

PDF SARTHI.COM

➤ काऊंट कावुर फ्रांस के नेपोलियन 3 से एक कूटनीतिज्ञ संधि कर आस्ट्रिया को पराजित किया ।

➤ काऊंट कावुर आस्ट्रिया को हराकर लोम्बार्डी और पिडमाऊंट पर कब्जा कर लिया। ➤ फ्रांस को मदद करने के बदले में कावुर ने निस और सेवाय नामक रियासत फ्रांस को दे दिया ।

➤ 1860-61 तक कावुर ने सिर्फ रोम को छोड़ कर उतरी और मध्य इटली के सभी रियासत को मिला दिया।

➤ 1862 तक दक्षिणी इटली रोम तथा वेनेशिया को छोड़कर बाकी सब रियासत को मिला लिया।

गैरीबाल्डी

➤ गैरीबाल्डी पेशे से एक नविक था और मेजिनी के विचारो का समर्थक था परन्तु बाद में कावुर ने सवैधानिक राजतंत्र का पक्षकार बन गया।

➤ गैरीबाल्डी सिसली और नेपल्स पर आक्रमण कर वहां गणतंत्र का स्थापना किया।

➤ गैरीबाल्डी ने जब रोम पर आक्रमण का योजना बनाया तो कावुर ने रोम की रक्षा के लिए अपनी सेना भेज दी। इसी बीच गैरीबाल्डी की भेंट कावुर से हुई और वह दक्षिणी इटली के जीते हुए क्षेत्र को विक्टर इमैनुएल को दे दिया।

➤ 1862 में गैरीबाल्डी की मृत्यु हो गया।

➤ 1871 में फ्रांस - प्रशा युद्ध के दौरान विक्टर इमैनुएल ने रोम को इटली में मिला लिया। और रोम अपना राजधानी घोषित कर दिया

➤ इटली का एकीकरण 1871 में पूर्ण हुआ |

जर्मनी के एकीकरण के बाधक तत्वः-

PDFSARTHI.COM

1. जर्मनी लगभग 300 छोटे बड़े राज्य में विभक्त था ।

2. उतरी जर्मनी प्रोटेस्ट एवं दक्षिणी जर्मनी कैथेलिक बाहुल्य क्षेत्र था।

3. राष्ट्रवाद के भावना का अभाव

जर्मनी के एकीकरण के सहायक तत्वः-

1. 1806 में नेपोलियन जर्मन राइन राज्य संघ का निर्माण किया।

2. बुद्धिजीवीयो द्वारा राष्ट्रवादी विचार का प्रभाव

3. मेटरनिख की प्रतिक्रियावादी निति

4. 1834 में व्यापारियों द्वारा जालवेरीन नामक आर्थिक संघ का निर्माण |

5. विलियम एवं बिस्मार्क का योगदान

➤ बिस्मार्क प्रशा के शासक विलियम का चांसलर था ।

➤ बिस्मार्क जर्मन डाइट में प्रशा का प्रतिनिधि था ।

➤ बिस्मार्क हिगेल की विचारो से प्रभावित था ।

➤ बिस्मार्क रक्त एवं लौह नीति का अवलम्बन किया।

➤ जर्मनी के एकीकरण के लिए प्रशा का डेनमार्क आस्ट्रिया और फ्रांस से युद्ध हुआ । ➤ 1866 में आस्ट्रिया - प्रशा के बीच सेडेवा का युद्ध हआ ।

➤ 1870 में फ्रांस - प्रशा के बीच सेडान का युद्ध हआ।

➤ 10 मई 1871 को फ्रांस प्रशा के बीच फ्रैंकफ्रंट का संधि हुई।

PDFSARTHI.COM

➤ 1871 ई० में जर्मनी का एकीकरण पूर्ण हुआ ।

यूनान

➤ यूनान का साहित्य एवं ज्ञान विज्ञान युरोपवासियों के लिए प्रेरणा स्रोत रहा ।

➤ यूनान के यूरोपीय सभ्यता का पालन भी कहा जाता है।

➤ यूनान तुर्की साम्रज्य के अधीन था।

➤ तुर्की को यूरोप का मरीज कहा जाता है।

➤ यूनानियो ने तुर्की से अलग होने किए लिए हीतेरिया फिलायक नामक संस्था का स्थापना ओडेसा नामका स्थान पर की ।

➤ इंग्लैंड फ्रांस तथा रूस यूनान के स्वतंत्रता का पक्षधर था ।

➤ 1821 ई० में अलेक्जेंडर चिपसिलांती के नेतृत्व में यूनान में विद्रोह शुरू हुआ ।

➤ 1827 में लन्दन में एक सम्मेलन हुआ जिसमे इंग्लैंड, फ्रासं तथा रूस तुर्की के खिलाफ तथा यूनान के समर्थक के सयुंक्त कारवाई करने का निर्णय लिया। तीनो की संयुक्त सेना नवारिनों की खाड़ी में तुर्की के खिलाफ एकत्र हुई। युद्ध में मिस्त्र और तुर्की बुरी तरह पराजित हुई।

➤ 1829 में एंड्रीयानोपल की संधि हुई। जिसके तहत यूनान को स्वायत्ता दिया गया ।

➤ 1832 में कुस्तुनतुनिया की सधी के द्वारा यूनान को स्वंत्रत राष्ट्र घोषित किया गया।

हंगरी

➤ हंगरी पर आस्ट्रिया का प्रभुत्व था।

➤ हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट था ।

➤ हंगरी ने 1848 के आन्दोलन का नेतृत्व कोसुथ और फ्रांसीसी डिक के द्वारा किया गया।

PDFSARTHI.COM

➤ 31 मार्च 1848 को हंगरी से आस्ट्रिया का प्रभाव समाप्त हो गया।

पोलैंड

➤ पोलैंड पर रूस का प्रभुत्व था।

➤ 1830 ने पोलैंड में भी रूस से स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन हुआ, परन्तु रूस ने पोलेंड के विद्रोह को दबा दिया ।

बोहेमिया

➤ बोहेमिया पर आस्ट्रिया के अधीन था।

➤ बोहेमिया में बहुसंख्यक जनता चेक प्रजाति की थी।

➤ आस्ट्रिया बोहेमिया को स्वायत्ता देने की मांग को स्वीकार लिया परन्तु आन्दोलन हिंसात्मक होने के कारण इसे कुचल दिया।

राष्ट्रवाद के उदय के प्रभाव

➤ राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर अनेक राष्ट्रों में क्रांतियां, आन्दोलन और नए राष्ट्रों का उदय होने लागा ।

➤ राष्ट्रवाद का प्रभाव एशिया अफ्रीका के उपनिवेशों पर भी पड़ा ।

➤ राष्ट्रवाद के विकास से प्रतिक्रियावादी शक्तियों और निरंकुश शासक का प्रभाव कमजोर कर दिया। राष्ट्रवादी प्रवृति को बढ़ावा दिया। भारत भी यूरोपीय राष्ट्रवाद से प्रभावित हुआ

अति लघु उतरिय

प्रश्न 1. राष्ट्रवाद क्या है?

PDF SARTHI.COM

उत्तर:- देश के प्रति प्रेम की भावना को राष्ट्रवाद कहा जाता है।

या

राष्ट्रवाद एक ऐसी भावना है जो किसी विशेष भौगोलिक, सांस्कृतिक या सामाजिक परिवेश में रहने वाले लोगों में एकला की वाहक बनती है।

2. मेजिनी कौन था?

उत्तर:- मेजिनी साहित्यकार, गणतांत्रिक विचारो का समर्थक और योग्य सेनापति था । मेजिनी कर्बोनरी नामक गुप्त दल का शासक था | मेजिनी ने 1831 में यंग इटली और 1834 में यंग यूरोप नामक संस्था की स्थापना की।

3. जर्मनी के एकीकरण की बाधाएँ क्या थी?

उत्तर:- जर्मनी के एकीकरण की निम्नलिखित बाधाएँ थीं।

जर्मनी लगभग 300 छोटे बड़े राज्य में विभक्त था। उत्तरी जर्मनी में प्रोटेस्ट एवं दक्षिणी में कैथोलिक बाहुल्य क्षेत्र था | जर्मनी में राष्ट्रवाद की भावना का अभाव था ।

4. मेटरनिख युग क्या है ?

उत्तर:- मेटरनिख आस्ट्रिया का चांसलर था । मेटरनिख ने 1815 से 1848 तक यूरोप की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसलिए 1815 से 1848 के काल को मेटरनिख युग कहा जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. 1848 के फ्रांसीसी क्रांति के क्या कारण थे ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर:- 1848 के फ्रांसीसी क्रांति के निम्नलिखित कारण थे:-

(i) लुई फिलिप की कमजोर निति

(ii) लुई फिलिप के द्वारा प्रतिक्रियावादी गीजो को प्रधानमंत्री बना

(iii) पूंजीपति वर्ग को साथ रखना

(iv) असफल विदेशी नीति

(v) किसी भी प्रकार का सुधारात्मक कार्य नहीं

(vi) बेरोजगारी और भुखमरी बढ़ जाना

2. इटली और जर्मनी के एकीकरण में आस्ट्रिया की भूमिका क्या थी ?

उत्तर:- इटली और जर्मनी के एकीकरण आस्ट्रिया का सबसे बड़ा बाधक था | 1830 की क्रांति की बाद इटली में भी नागरिक आन्दोलन शुरू हो गये । इसी समय मेजिनी उतरी और मध्य इटली का एकीकरण करने का प्रयास किया। लेकिन मेटरनिख के नागरिक आन्दोलन को दबा दिया। जर्मनी में राष्ट्रवादी भावना को दबाने के लिए मेटरनिख दमनकारी कानून कार्ल्सवाद के आदेश द्वारा दबा दिया।

3. यूरोप में राष्ट्रवाद को फैलाने में नेपोलियन बोनापार्ट किस तरह सहायक हुआ ?

उत्तर :- यूरोप में राष्ट्रवाद को फैलाना में फ्रांस की क्रांति के बाद में नेपोलियन के आक्रमण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यूरोप के कई राज्यों में नेपोलियन के अभियान से नवयुग का सन्देश पंहुचा | नेपोलियन में इटली और जर्मनी के राज्यों को भौगोलिक नाम की परिधि से निकलकर वास्तविक और राजनीतिक रुपरेखा प्रदान की। जिससे इटली और जर्मनी का एकीकरण का मांग प्रशस्त हुआ ।

4. गैरीबाल्डी के कार्यों का चर्चा करें।

PDFSARTHI.COM

उतर:- गैरीबाल्डी पेशे से एक नाविक था। गैरीबाल्डी सिसली और नेपल्स पर आक्रमण कर वहां गणतंत्र क स्थापना किया। गैरीबाल्डी ने जब रोम पर आक्रमण की योजना बनाई तो काबूर ने रोम की रक्षा के लिए अपनी सेना भेज दी। इसी बीच गैरीबाल्डी की भेंट कावूर से हुई और वह दक्षिणी इटली के जीते गए क्षेत्र विक्टर इमैनुएल को दे दिया। इस तरह गैरीबाल्डी के सहयोग से इटली का एकीकरण संभव हो पाया।

5. विलियम 1 के बगैर जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क के लिए असंभव था - कैसे? उत्तर:- विलियम 1 जानता था कि ऑस्ट्रिया और फ्रांस को पराजित किए बिना जर्मनी का एकीकरण संभव नहीं है। जर्मनी के एकीकरण करने के लिए विलियम ने बिस्मार्क को अपना चांसलर नियुक्त किया। विलियम अगर बिस्मार्क को अपना चांसलर नहीं बनाता तो जर्मनी का एकीकरण असंभव था।

दीर्घ उत्तरीय प्रशन

1. इटली के एकीकरण में मेजिनी, काबूर और गैरीबाल्डी के योगदानों को बतावें। उतर:- इटली के एकीकरण में मेजिनी का योगदान:- मेजनी साहित्यकार, गणतांत्रिक विचारों का समर्थक और योग्य सेनापति था। मेजिनी का संबंध कार्बोनरी नामक गुप्त दल से था। 1830 में मेजनी उतरी और मध्य इटली का एकीकरण करना चाहा लेकिन मेटरनिख ने नागरिक आंदोलन को दबा दिया। जिसके कारण मेजनी को इटली से पलायन करना पड़ा।मेजिनी ने 1831 में यंग इटली और मेजिनी ने 1834 में यंग यूरोप नामक संस्था का स्थापना किया। 1848 में मेजनी पुनः इटली आया। मेजनी इटली का एकीकरण कर गणराज्य बनाना चाहता था लेकिन सार्डिनिया पिडमाउंट का शासक चार्ल्स एल्बर्ट अपने नेतृत्व में सभी प्रांतों का विलय करना चाहता था। पोप इटली को धर्मराज बनाना चाहता था। इस तरह विचारों के टकराव के कारण इटली का एकीकरण का मार्ग अवरुद्ध हो गया। मेजनी पुनः पलायन कर गया।

इटली के एकीकरण में काउंट काबूर का योगदान:

PDFSARTHI.COM

सार्डिनिया पिडमाउंट के शासक विक्टर इमैनुएल काउंट कावूर को प्रधानमंत्री नियुक्त किया। काउंट कावूर एक सफल कूटनीतिज्ञ एवं राष्ट्रवादी था। काउंट कावूर इटली के एकीकरण में सबसे बड़ी बाधा ऑस्ट्रिया को मानता था। 1853-54 के क्रीमिया के युद्ध में ऑस्ट्रिया को हराने के लिए काउंट कावूर ने फ्रांस के तरफ से भाग लिया। काउंट कावूर फ्रांस के नेपोलियन 3 से एक कूटनीतिक संधि कर ऑस्ट्रेलिया को पराजित कर दिया। काउंट कावूर ऑस्ट्रिया को हराकर लोम्बार्डी और पिडमाउंट पर कब्जा कर लिया। फ्रांस को मदद करने के बदले में कावूर ने नीस और सेवाय नामक रियासत फ्रांस को दे दिया। 1860-61 तक कावूर ने सिर्फ रोम को छोड़कर उतरी और मध्य इटली के सभी रियासत को मिला लिया। 1862 तक दक्षिणी इटली, रोम तथा वेनेशिया को छोड़कर बाकी रियासत का विलय कर लिया।

इटली के एकीकरण में गैरीबाल्डी का योगदान:-

गैरीबाल्डी पेशे से एक नाविक था और मेजिनी के विचारों का समर्थन था परंतु बाद में कावूर के संवैधानिक राजतंत्र का पक्षधर बन गया। गैरीबाल्डी सिसली और नेपल्स पर आक्रमण कर वहां गणतंत्र क स्थापना किया।

गैरीबाल्डी ने जब रोम पर आक्रमण की योजना बनाई तो काबूर ने रोम की रक्षा के लिए अपनी सेना भेज दी। इसी बीच गैरीबाल्डी की भेंट कावूर से हुई और वह दक्षिणी इटली के जीते गए क्षेत्र विक्टर इमैनुएल को दे दिया। इस तरह गैरीबाल्डी के सहयोग से इटली का एकीकरण 1871 में पूर्ण हुआ।

2. जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क की भूमिका का वर्णन करें।

उत्तर :- बिस्मार्क प्रशा के शासक विलियम का चांसलर था। बिस्मार्क जर्मन डाइट में प्रशा का प्रतिनिधि था। बिस्मार्क हिगेल के विचारों से प्रभावित था।बिस्मार्क रक्त एवं लौह की नीति का अवलम्बन किया।। जर्मनी के एकीकरण के लिए प्रशा का डेनमार्क, ऑस्ट्रिया और फ्रांस से युद्ध हुआ। 1864 में प्रशा ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर डेनमार्क पर आक्रमण कर दिया। 1866 में

PDFSARTHI.COM

ऑस्ट्रिया- प्रशा के बीच सेडोवा का युद्ध हुआ। 1871 में फ्रांस- प्रशा के बीच सेडान का युद्ध हुआ। 10 मई 1871 को फ्रांस प्रशा के बीच फ्रैंकफ्रंट की संधि हुई।इस तरह 1871 ईस्वी में जर्मनी का एकीकरण पूर्ण हुआ। **3. राष्ट्रवाद के उदय के कारणों और प्रभाव का चर्चा करें**

उत्तर :- यूरोप में राष्ट्रवाद के उदय के कारण :-

i. पुनर्जागरण के फलस्वरुप उत्पन्न परिस्थितिया

ii. 1789 के फ्रांसीसी क्रांति के आदर्श

iii. नेपोलियन का सैन्य अभियान

iv. मेटरनिख की प्रतिक्रियावादी नीति

राष्ट्रवाद के उदय के प्रभाव :-

i. राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर अनेक राष्ट्रों में क्रांतियां, आंदोलन और नए रास्ते का उदय होने लगा।

ii. राष्ट्रवाद का प्रभाव एशिया- अफ्रीका के उपनिवेशों पर भी पड़ा।

iii. राष्ट्रवाद के विकास ने प्रतिक्रियावादी शक्तियों और निरंकुश शासको का प्रभाव कमजोर कर दिया।

iv. राष्ट्रवादी प्रवृत्ति ने साम्राज्यवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया।

v. भारत भी यूरोपीय राष्ट्रवाद से प्रभावित हुआ।

4. जुलाई 1830 के क्रांति का विवरण दे।

PDFSARTHI.COM

उतर:- चार्ल्स X निरंकुश एवं प्रतिक्रियावादी शासक था जिसने फ्रांस में राष्ट्रीयता एवं जनतंत्रवादी भावनाओं को दबाने का प्रधानमंत्री बनाया। पोलिग्नेक अभिजात वर्ग को साथ काम किया। उसने प्रतिक्रियावादी पोलिगनेक को अपना दिया। उदारवादियों ने इसे चुनौती तथा क्रांति के विरुद्ध षड्यंत्र समझा उदारवादियों में पॉलीगेनिक के विरुद्ध गहरा असंतोष प्रकट हुआ। चार्ल्स X ने इस विरोध के प्रतिक्रिया स्वरुप 25 जुलाई 1830 को चार अध्यादेश के द्वारा उदार तत्वों का गला घोटने का प्रयास किया। इस अध्यादेश के विरोध में पेरिस में क्रांति का लहर दौड़ गया और फ्रांस में 28 जून 1830 से गृह हो गया। इसे ही जुलाई 1830 की क्रांति कहते हैं। युद्ध आरंभ इस क्रांति के बाद चार्ल्स X को फ्रांस का गद्दी त्याग कर इंग्लैंड जाना पड़ा और बूर्बो वंश के शासन का अंत हो गया। बूर्बो वंश के स्थान पर वंश के आलेले आर्लेयेंश वंश के लुई फिलिप को गद्दी सोपा गया।

5. यूनानी स्वंत्रतता आंदोलन का संक्षिप्त विवरण दे।

उत्तर:- यूनान तुर्की साम्राज्य के अधीन था। यूनानियों ने तुर्की से अलग होने के लिए हितेरिया फिलायक नामक संस्था का स्थापना उड़ीसा नामक स्थान पर की। इंग्लैंड फ्रांस तथा रूस यूनान के स्वतंत्रता का पक्षधर था। 1821 ईस्वी में अलेक्जेंडर चिपसिलांती के नेतृत्व में यूनान में विद्रोह शुरू हुआ। 1827 में लंदन में एक सम्मेलन हुआ जिसमें इंग्लैंड फ्रांस तथा रूस तुर्की के खिलाफ तथा यूनान के समर्थन में संयुक्त कार्रवाई करने का निर्णय लिया। तीनों की संयुक्त सी नवारिनों की खाड़ी में तुर्की के खिलाफ एकत्र हुई। युद्ध में मिस्र और तुर्की बुरी तरह पराजित हुई। 1829 में एंड्रियानोपल की संधि हुई।जिसके तहत यूनान को स्वायतता दिया गया। 1832 में कुस्तुनतुनिया की संधि के द्वारा यूनान को स्वतंत्र घोषित किया गया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

यूरोप में राष्ट्रवाद - उदय और विकास,

1. राष्ट्रवाद क्या है? अथवा, राष्ट्रवाद को परिभाषित कीजिए।

PDF SARTHI.COM

उत्तर - राष्ट्रवाद आधुनिक राजनीतिक चेतना का प्रतिफल है। 19वीं शताब्दी के यूरोप में राष्ट्रवाद एक शक्तिशाली तत्त्व के रूप में विकसित हुआ। यह अपने राष्ट्र के प्रति सोच और लगाव की भावना का विकास करता है। यह किसी विशेष भौगोलिक, सांस्कृतिक या सामाजिक परिवेश में रहनेवाले लोगों में एकता और लगाव की भावना विकसित करता है। राष्ट्रवाद ने बहुराष्ट्रीय साम्राज्यों के स्थान पर राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

2. नेपोलियन बोनापार्ट ने यूरोप में राष्ट्रवाद का प्रसार कैसे किया ? अथवा, यूरोप में राष्ट्रवाद को फैलाने में नेपोलियन बोनापार्ट किस तरह सहायक हुआ ?

उत्तर - नेपोलियन बोनापार्ट ने विजित राज्यों में राष्ट्रवादी भावना जागृत कर दी। फ्रांसीसी आधिपत्य वाले राष्ट्रों में नेपोलियन संहिता, फ्रांसीसी शासन और अर्थव्यवस्था समान रूप से लागू की गई। नेपोलियन के इन कार्यों से इटली एवं जर्मनी के एकीकरण का मार्ग सुगम हो गया। वहाँ राष्ट्रवाद का विकास हुआ। दूसरी ओर, नेपोलियन के युद्धों और विजयों से अनेक राष्ट्रों में फ्रांसीसी आधिपत्य के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई एवं आक्रोश बढ़ा। इससे भी राष्ट्रवाद का विकास हुआ।

3. 1830 की फ्रांसीसी क्रांति (जुलाई क्रांति) के कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - फ्रांस का सम्राट चार्ल्स x स्वेच्छाचारी और निरंकुश शासक था। वह संवैधानिक राजा के रूप में काम नहीं करना चाहता था। उसने पोलिगनेक नामक प्रतिक्रियावादी को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया। इन दोनों ने लुई xviiवें द्वारा स्थापित समान नागरिक संहिता के स्थान पर शक्तिशाली आभिजात्य वर्ग की स्थापना का प्रयास किया। उदारवादियों ने जब इसका विरोध किया तब चार आज्ञप्तियों द्वारा उनपर अंकुश लगा दिया गया। इससे गृहयुद्ध आरंभ हो गया। जुलाई में पेरिस की जनता ने विद्रोह कर पेरिस पर अधिकार कर लिया। चार्ल्स गद्दी छोड़कर इंगलैंड भाग गया।

4. 1848 की फ्रांसीसी क्रांति के कारणों का उल्लेख करें।

उत्तर - फ्रांस के सम्राट लुई फिलिप का प्रधानमंत्री गिजो प्रतिक्रियावादी एवं सुधारों का विरोधी था। सुधारवादी दल के नेता थेयर्स ने 22 फरवरी 1848 को पेरिस में 'सुधार भोज' का आयोजन किया। राजा ने इसपर रोक लगा दी। अतः, पेरिस में विरोध प्रदर्शन हुए और जुलूस निकाले गए। इसपर पुलिस ने गोली चला दी जिसमें अनेक लोग मारे गए। परिणामस्वरूप, क्रुद्ध जनता ने लुई को गद्दी छोड़कर इंगलैंड भागने को विवश कर दिया।

PDFSARTHI.COM

5. मेटरनिक अथवा, युग से आप क्या समझते हैं? मेटरनिक व्यवस्था से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - यूरोपीय इतिहास में 1815-48 की अवधि मेटरनिक युग के नाम से जानी जाती है। नेपोलियन बोनापार्ट की पराजय के बाद वियना काँग्रेस और उसके बाद की व्यवस्था की स्थापना मेटरनिक व्यवस्था नाम से जानी जाती है। इसका उद्देश्य फ्रांस की क्रांति की देनों, प्रजातंत्रात्मक एवं राष्ट्रवादी भावना को कुचलना तथा पुरातन, व्यवस्था की पुनर्स्थापना करना था ।

6. इटली एवं जर्मनी के एकीकरण में ऑस्ट्रिया की क्या भूमिका थी?

उत्तर - ऑस्ट्रिया इटली और जर्मनी के एकीकरण का विरोधी था ।

इटली - वेनेशिया और लोम्बार्डी पर ऑस्ट्रिया का अधिकार था। सेडोवा के युद्ध (1866) में ऑस्ट्रिया की पराजय के बाद उसका प्रभाव इटली पर से समाप्त हो गया।

जर्मनी - जर्मनी ऑस्ट्रिया के अधीन शक्तिहीन संघ राज्य था। उत्तरी जर्मन महासंघ की स्थापना के बाद जर्मनी से ऑस्ट्रिया का प्रभाव समाप्त हो गया।

7. इटली के एकीकरण में कावूर की भूमिका का उल्लेख करें। अथवा, कावूर का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर - कावूर को इटली के एकीकरण का 'राजनीतिज्ञ' कहा जाता है। 1850 में वह सार्डिनिया के राजा विक्टर इमैनुएल का मंत्री एवं 1852 में प्रधानमंत्री बना। उसने सैनिक और आर्थिक सुधारों द्वारा सार्डिनिया की स्थिति सुदृढ़ की । पेरिस शांति-सम्मेलन में उसने इटली के एकीकरण का प्रश्न उठाया। उसने इटली की समस्या को यूरोपीय समस्या बना दिया। 1859 में फ्रांस की सहायता से ऑस्ट्रिया को पराजित कर कावूर ने लोम्बार्डी पर अधिकार कर लिया।

8. गैरीबाल्डी कौन था? इटली के एकीकरण में उसकी क्या भूमिका थी? अथवा, गैरीबाल्डी के कार्यों की चर्चा करें।

उत्तर – गैरीबाल्डी एक राष्ट्रभक्त था। वह युद्ध की नीति में विश्वास करता था। इटली - के एकीकरण का द्वितीय चरण गैरीबाल्डी की तलवार ने पूरा किया। उसने सशस्त्र युवकों की एक टुकड़ी बनाई जो 'लाल कुर्ती' कहलाए। इनकी सहायता से उसने सिसली पर अधिकार कर वहाँ गणतंत्र की स्थापना की। वह पोप के राज्य पर भी आक्रमण करना चाहता था, परंतु कावूर ने इसकी अनुमति नहीं दी।

PDF SARTHI.COM

9. जर्मनी के एकीकरण में क्या बाधाएँ थीं?

उत्तर - 1870 के पूर्व नॉर्डिक ट्यूटन प्रजातियों का देश जर्मनी अनेक छोटे-बड़े राज्यों एवं रजवाड़ों में विभक्त था। यह एक राष्ट्र नहीं, बल्कि जर्मन-भाषी राज्यों का एक समूह था। इनमें राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक विषमताएँ थीं। साथ ही, राष्ट्रवाद का मुद्दा भी गौण था। जर्मन राज्यों पर फ्रांसीसी सभ्यता-संस्कृति का व्यापक प्रभाव था। यह परिस्थिति जर्मनी के एकीकरण में बाधक थी।

10. विलियम प्रथम के बिना जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क के लिए कैसे असंभव था ?

उत्तर - विलियम प्रथम प्रशा के नेतृत्व में शक्ति के बल पर जर्मनी का एकीकरण करना - चाहता था। बिस्मार्क का भी मानना था कि जर्मनी का एकीकरण 'रक्त और लौह' की नीति से ही संभव है । उसकी इस नीति को विलियम प्रथम से समर्थन और सहयोग मिला। अगर ऐसा नहीं होता तो बिस्मार्क के लिए जर्मनी का एकीकरण करना संभव नहीं था।

11. बिस्मार्क के कार्यों की चर्चा करें। अथवा, जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क की क्या भूमिका थी? अथवा, बिस्मार्क की उपलब्धियों की विवेचना करें।

उत्तर - जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। वह विख्यात राष्ट्रवादी और कूटनीतिज्ञ था। फ्रैंकफर्ट संसद में उसने भाग लिया था। वह रूस और फ्रांस में राजदूत भी रहा था। 1862 में बिस्मार्क प्रशा का चांसलर बना। चांसलर के रूप में सर्वप्रथम उसने प्रशा की आर्थिक और सैनिक शक्ति सुदृढ़ की। वह 'रक्त और लौह की नीति' में विश्वास करता था। अतः, उसने डेनमार्क (1864), ऑस्ट्रिया (1866, सेडोवा का युद्ध) तथा फ्रांस (1870, सीडान का युद्ध) को पराजित कर जर्मनी का एकीकरण किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. राष्ट्रवाद के उदय के कारणों एवं प्रभावों की विवेचना कीजिए।

उत्तर - कारण – राष्ट्रवाद की भावना का जन्म पुनर्जागरण काल में ही हो चुका था, परंतु इसका उदय और विकास 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से हुआ। इस क्रांति से यूरोप में निरंकुशवाद के विरुद्ध राष्ट्रीयता की भावना जागृत हुई। इसका प्रभाव अन्य राष्ट्रों पर भी पड़ा। बाद में नेपोलियन ने अपनी विजयों एवं नीतियों से राष्ट्रवादी भावना को आगे

PDFSARTHI.COM

बढ़ाया। इसके साथ ही, नेपोलियन के आधिपत्य के विरुद्ध भी राष्ट्रवादी भावना का विकास हुआ। मेटरनिक की नीतियों ने भी राष्ट्रवादी भावना को बढ़ावा दिया। समस्त यूरोप इसके प्रभाव में आ गया।

प्रभाव - (i) राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित होकर 1830-48 के मध्य यूरोपीय राष्ट्रों में क्रांतियाँ हुईं जिनके परिणामस्वरूप अनेक नए राज्यों का उदय हुआ। यूनान, जर्मनी एवं इटली जैसे स्वतंत्र राष्ट्रों का उदय भी राष्ट्रवाद के कारण हुआ।

(ii) उपनिवेशों में औपनिवेशिक शासकों के विरुद्ध मुक्ति आंदोलन चले।

(iii) भारतीयों पर भी राष्ट्रवाद का गहरा प्रभाव पड़ा।

(iv) भारतीय धर्मसुधार आंदोलन के नेताओं पर भी राष्ट्रवादी भावना का व्यापक प्रभाव पड़ा।

(v) राष्ट्रवाद के विकास से प्रतिक्रियावादी और निरंकुश शक्तियाँ कमजोर पड़ गईं।

(vi) राष्ट्रवाद के विकास से साम्राज्यवादी प्रवृत्ति भी बढ़ी और संकीर्ण राष्ट्रवाद का उदय हुआ।

2. मेटरनिक व्यवस्था का परिचय दीजिए।

उत्तर - मेटरनिक ऑस्ट्रिया का चांसलर था। 1815 का वियना काँग्रेस आयोजित करने में उसकी प्रमुख भूमिका थी। वह घोर प्रतिक्रियावादी एवं पुरातन व्यवस्था बनाए रखने का समर्थक था। उसकी नीति थी- 'शासन करो और कोई परिवर्तन न होने दो। उसके द्वारा यूरोप में स्थापित व्यवस्था 'मेटरनिक व्यवस्था' कहलाती है। इसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रवादी एवं प्रजातंत्रात्मक व्यवस्था को कुचलना एवं पुरातन व्यवस्था को बनाए रखना था। क्रांति के सिद्धांतों का प्रसार रोकने के लिए प्रेस पर कठोर प्रतिबंध लगाया गया। विश्वविद्यालय के छात्रों और शिक्षकों पर भी निगरानी रखी गई। कार्ल्सबाद आज्ञप्तियों द्वारा उदारवाद के प्रचार पर रोक लगा दी गई। मेटरनिक के प्रयासों के बावजूद क्रांतिकारी एवं राष्ट्रवादी विचारों का दमन पूर्णतः नहीं हो सका। 1830 में यूरोप के अनेक भागों में क्रांतियाँ हुई। इन क्रांतियों ने मेटरनिक व्यवस्था और उसके 'वैधता के सिद्धांत' को गंभीर चुनौती दी। शीघ्र ही 1848 में ऑस्ट्रिया में हुई क्रांति के साथ ही मेटरनिक व्यवस्था धराशायी हो गई। राष्ट्रवाद और उदारवाद की भावना बलवती हुई।

3. 1830 की जुलाई क्रांति का विवरण दीजिए।

उत्तर - 1830 की जुलाई क्रांति के कारण निम्नलिखित थे।

PDF SARTHI.COM

(i) राजा की निरंकुशता - 1824 में चार्ल्स दशम फ्रांस का राजा बना। वह स्वेच्छाचारी और निरंकुश था। उसने कुलीनों, पादरियों और चर्च को विशेषाधिकार दिए। उदारवादियों का दमन किया गया। इससे चार्ल्स का विरोध बढ़ने लगा।

(ii) पोलिगनेक का प्रधानमंत्री बनना - चार्ल्स ने 1830 में पोलिगनेक को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया। वह प्रतिक्रियावादी था।

(ii) चार आज्ञप्तियाँ-चार्ल्स ने चार आज्ञप्तियाँ पारित किए। इनके अनुसार, प्रेस की स्वतंत्रता समाप्त कर दी गई, प्रतिनिधि सभा भंग कर दी गई, मतदान का अधिकार सीमित कर कुलीनों को लाभ पहुँचाया गया तथा नए चुनाव की घोषणा की गई। क्रांति का स्वरूप - जुलाई 1830 में पेरिस की जनता ने विद्रोह कर दिया। विद्रोह का नेतृत्व लफायते ने किया। सैनिक विद्रोह पर नियंत्रण नहीं कर सके। बाध्य होकर चार्ल्स गद्दी छोड़कर इंगलैंड चला गया।

परिणाम - (i) चार्ल्स के चले जाने पर फ्रांस में बूब वंश के स्थान पर आर्लेयंस वंश के शासक लुई फिलिप को राजा बनाया गया।

(ii) संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना हुई।

4. यूनानी स्वतंत्रता आंदोलन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर - प्राचीन काल में यूनान सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र था। 15वीं शताब्दी में यह तुर्की के ऑटोमन साम्राज्य के अंतर्गत आ गया। 18वीं शताब्दी से तुर्की की शक्ति कमजोर पड़ने लगी और उसे 'यूरोप का मरीज' कहा जाने लगा। 18वीं सदी के अंतिम चरण तक यूनान में राष्ट्रवादी धारणा प्रबल होने लगी। राष्ट्रवादी विकास में यूनानी चर्च, फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव तथा बौद्धिक आंदोलन का प्रमुख योगदान था। कोरेंइस नामक दार्शनिक ने यूनानियों में राष्ट्रप्रेम की भावना का प्रचार किया। कान्सटेंटाइन रीगास ने गुप्त समाचारपत्र प्रकाशित कर स्वतंत्रता की भावना प्रज्वलित की। हिटेरिया फिल्के नामक गुप्त क्रांतिकारी समिति यूनान को तुर्की से स्वतंत्र कराना चाहती थी।

फिल्के नामक गुप्त क्रांतिकारी सामात यून शक्तिशाली मध्यम वर्ग भी स्वतंत्रता की भावना जगा रहा था। इन्हीं परिस्थितियों में 1821 में एलेक्जेंडर हिप्सलांटी के नेतृत्व में यूनानियों ने मोलडेविया में विद्रोह किया। इसे तुर्की के सुलतान ने क्रूरतापूर्वक दबा दिया। इससे यूनानी हताश नहीं हुए। यूरोप के विभिन्न भागों से उन्हें सहायता मिलने लगी। विख्यात अँगरेज कवि लॉर्ड बायरन ने यूनानियों की धन से सहायता की तथा स्वयं युद्ध में भाग लेने के लिए

PDFSARTHI.COM

यूनान आए। मोरिया में भी विद्रोह हुआ। इसे धार्मिक स्वरूप प्रदान कर सुलतान महमूद द्वितीय ने हजारों यूनानियों को मार डाला। इस घटना से आक्रोशित होकर इंगलैंड, फ्रांस तथा रूस ने तुर्की के विरुद्ध संयुक्त कार्रवाई करने का निर्णय लिया। नावारिनो की खाड़ी में हुए युद्ध में तुर्की और मिस्र की पराजय हुई। 1829 में तुर्की और रूस में एड्रियानोपुल की संधि हुई। इसके द्वारा तुर्की के आधिपत्य के अंदर यूनान को स्वायत्तता देने का निर्णय लिया गया। यूनानियों ने इसे स्वीकार नहीं किया। अतः, 1832 में कुस्तुनतुनिया की संधि द्वारा स्वतंत्र यूनान राष्ट्र का उदय हुआ। बवेरिया के राजकुमार ऑटो यूनान के शासक बने।

5. 1848 की यूरोपीय क्रांतियों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर - 1848 में यूरोप में क्रांतियों का दौर आरंभ हुआ। इसका प्रमुख कारण प्रतिक्रियावादी शक्तियों का पुनरुत्थान, सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन तथा राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रबल होना था।

फ्रांस - फरवरी 1848 में फ्रांस में क्रांति हुई। इसके परिणामस्वरूप फ्रांस में द्वितीय गणराज्य की स्थापना हुई।

इटली - मिलान और पोप के राज्य में विद्रोह हो गया। चार्ल्स एलबर्ट ने उदारवादी संविधान लागू किया।

जर्मनी - जर्मनी के विभिन्न भागों में विद्रोह हुए।

ऑस्ट्रिया - मेटरनिक व्यवस्था समाप्त हो गई।

हंगरी - लुई कोसुथ और फ्रांसिस डिक के प्रयासों से हंगरी में संवैधानिक सुधार लागू हुए। हंगरी पर से ऑस्ट्रियाई प्रभाव समाप्त कर दिया गया।

बोहेमिया - ऑस्ट्रिया ने बोहेमिया में प्रशासनिक स्वायत्तता देने की मांग मान ली, परंतु आंदोलन के हिंसक होने से इसे कुचल दिया गया। पोलैंड - पोलैंड की क्रांति को रूस ने कुचल दिया।

6. मेजिनी की उपलब्धियों की विवेचना करें।

उत्तर - इटली के एकीकरण में मेजिनी का बहुमूल्य योगदान था। उसे इटली के एकीकरण का 'मसीहा' कहा जाता है। वह दार्शनिक साहित्यकार, राजनेता और गणतंत्र का समर्थक था। उसका जन्म 1805 में जिनोआ नगर में हुआ था। वह तरुणावस्था से ही गुप्त राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेता था। उसने कार्बोनारी नामक गुप्त संगठन की सदस्यता ग्रहण की। 1821 में नेपल्स के विद्रोह को जिस तरह दबाया गया उससे क्षुब्ध होकर उसने काला वस्त्र

PDFSARTHI.COM

पहनना आरंभ किया। विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण उसे कुछ वर्ष कारावास में व्यतीत करना पड़ा। जेल से छूटकर वह विदेश चला गया। गणतंत्रवादी उद्देश्यों के प्रचार के लिए उसने क्रमशः 'यंग इटली' (1831), 'यंग यूरोप' (1834) तथा 'फ्रेंड्स ऑफ इटली' नामक संस्थाओं का गठन किया। मेटरनिक के पतन के बाद वह इटली वापस लौटा। मेजिनी जनसंप्रभुता के सिद्धांत में विश्वास रखता था। उसने 'जनता-जनार्दन तथा इटली' का नारा दिया। उसका उद्देश्य ऑस्ट्रिया के प्रभाव से इटली को मुक्त करवाना तथा संपूर्ण इटली का एकीकरण करना था। वह संपूर्ण इटली को गणतंत्रात्मक राज्य में परिणत करना चाहता था। चार्ल्स एलबर्ट और पोप के स्वार्थों की आपसी टकराहट में मेजिनी के समय में इटली का एकीकरण नहीं हो सका।

7. इटली के एकीकरण में मेजिनी, कावूर और गैरीबाल्डी के योगदानों का उल्लेख करें।

उत्तर - इटली के एकीकरण के तीन प्रमुख नायक थे। मेजिनी, कावूर तथा गैरीबाल्डी उनके संयुक्त प्रयासों के परिणामस्वरूप 1870 में इटली का एकीकरण हो सका।

मेजिनी - वह इटली के एकीकरण का 'पैगंबर' या 'मसीहा' था। युवावस्था से ही वह गुप्त राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेता था। उसने कार्बोनारी नामक संस्था की सदस्यता ग्रहण की। 1830-31 के विद्रोह में उसने सक्रियता से भाग लिया, अतः उसे कारावास की सजा दी गई। जेल से छूटकर वह विदेश चला गया। मेजिनी गणतंत्र का समर्थक था। गणतंत्र का प्रचार करने के लिए उसने यंग इटली और यंग यूरोप की स्थापना की । मेजिनी ने 'जनता-जनार्दन तथा इटली' का नारा दिया। मेजिनी द्वारा एकीकरण के प्रयास विफल हो गए, अतः वह इटली से बाहर चला गया।

कावूर - कावूर कूटनीतिज्ञ एवं राष्ट्रवादी था। उसका मानना था कि सार्डिनिया के नेतृत्व में ही इटली का एकीकरण हो सकता था। वह राजतंत्र का समर्थक था। उसनें कूटनीतिक रूप से ऑस्ट्रिया को अलग करने की नीति अपनाई। 1852 में विक्टर इमैनुएल ने उसे अपना प्रधानमंत्री बनाया। इस पद पर रहते हुए उसने पिडमौंट की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ की । क्रीमिया के युद्ध (1854) में उसने संयुक्त शक्तियों का साथ दिया। पेरिस शांति सम्मेलन में उसने इटली के एकीकरण का प्रश्न उठाया। 1858 में उसने फ्रांस के साथ प्लोम्बियर्स समझौता किया जिससे उसे ऑस्ट्रिया के विरुद्ध फ्रांस की सहायता मिली। 1859 में कावूर ने फ्रांस की सहायता से ऑस्ट्रिया को पराजित कर लोम्बार्डी पर अधिकार कर लिया। बाद में मध्य इटली के अनेक राज्यों ने विक्टर इमैनुएल को अपना राजा घोषित कर दिया। इन राज्यों को सार्डिनिया में मिला लिया गया।

PDF SARTHI.COM

गैरीबाल्डी - गैरीबाल्डी युद्ध की नीति में विश्वास करता था। उसने सशस्त्र युवकों की एक टुकड़ी 'लाल कुर्ती का गठन किया। इनकी सहायता से उसने सिसली पर अधिकार कर लिया। वहाँ उसने गणतंत्र की स्थापना की। वह पोप के राज्य पर भी अधिकार करना चाहता था, परंतु कावूर की अनुमति नहीं मिलने के कारण वह ऐसा नहीं कर पाया। गैरीबाल्डी के प्रयासों से इटली के एकीकरण का दूसरा चरण पूर्ण हुआ।

8. जर्मनी में राष्ट्रवाद का उदय कैसे हुआ ?

उत्तर - जर्मनी में राष्ट्रवाद का उदय 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ। इस समय जर्मनी में अनेक राजनीतिक चिंतकों एवं बुद्धिजीवियों का प्रादुर्भाव हुआ। इनलोगों ने जर्मनी में राष्ट्रीय चेतना की भावना जगाई। इनमें स्टीन, गॉटफ्रीड, कांट, फिक्टे, हीगेल, अंडर्ट, हम्बोल्ट और ग्रिम बंधुओं के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। स्टीन संवैधानिक राजतंत्र में विश्वास करते थे। गॉटफ्रीड का विचार था कि जर्मन संस्कृति उसके आमलोगों में निहित थी, यह राष्ट्र की आत्मा अथवा 'वोल्कजिस्ट' थी। हरडर के दार्शनिक चिंतन से जर्मनी में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की नींव पड़ी। गॉटफ्रीड से प्रेरणा लेकर ग्रिम बंधुओं ने जर्मन लोककथाओं का संग्रह 'ग्रिम्स फेयरी टेल्स' प्रकाशित किया। कांट ने स्वतंत्रता का आदर्श प्रस्तुत किया जबकि फिक्टे ने उग्र राष्ट्रवाद का। हीगेल ने ऐतिहासिक द्वंद्ववाद की व्याख्या की तथा राज्य में सर्वोच्च सत्ता की कल्पना की। बिस्मार्क पर हीगेल के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। अंडर्ट ने अपनी कविताओं के माध्यम से देशभक्ति की भावना जागृत की। हर्डेनबर्ग तथा नोवोलिस ने जर्मनी के गौरवमय अतीत को उजागर किया। चित्रकारों ने भी जर्मन संस्कृति को उजागर किया। जर्मनी में राष्ट्रवाद के प्रसार में विद्यार्थियों एवं शिक्षण संस्थाओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान था। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने जर्मनी के एकीकरण को मूर्त रूप देने के लिए 'बुशेन शैफ्ट' नामक संस्था का गठन कर राष्ट्रीय एकता आंदोलन चलाया। वाइमर राज्य का येना विश्वविद्यालय राष्ट्रीय आंदोलन का मुख्य केंद्र था। राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित होकर फादर जॉन ने 'तरुण आंदोलन' आरंभ किया। ‘नैतिक संघ’, ‘वैज्ञानिक संघ’ तथा राजनीतिक व्यायामशालाओं द्वारा राष्ट्रीय चेतना जागृत की गई। आर्थिक एकीकरण जैसे, जॉल्वेराइन शुल्क संघ की स्थापना से भी राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन मिला । नेपोलियन बोनापार्ट द्वारा जर्मन राइन राज्यसंघ की स्थापना ने भी राष्ट्रवादी भावना का विकास किया। 1848 की फ्रांसीसी क्रांति ने भी जर्मन राष्ट्रवाद, को बढ़ावा दिया। फ्रैंकफर्ट संसद में जर्मनी को एकीकृत करने का प्रयास किया गया, परंतु यह विफल हो गया।

9. जर्मनी के एकीकरण में विस्मार्क की भूमिका का वर्णन करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - बिस्मार्क का मानना था कि जर्मनी की समस्या का समाधान बौद्धिक भाषणों से नहीं, आदर्शवाद से नहीं, बहुमत के निर्णयों से नहीं, बल्कि प्रशा के नेतृत्व में 'रक्त और लौह' की नीति से होगा। अपनी नीति अनुसार, उसने कार्य आरंभ किया। चांसलर के रूप में बिस्मार्क ने सबसे पहले प्रशा की आंतरिक स्थिति सुदृढ़ करने का प्रयास किया। आर्थिक और सैनिक सुधारों द्वारा प्रशा की स्थिति सुदृढ़ की गई। तत्पश्चात उसने युद्ध की नीति अपनाई। जर्मनी के एकीकरण के लिए उसने तीन युद्ध किए।

डेनमार्क से युद्ध – शेल्सविग और हॉल्सटीन में जर्मन निवासी बड़ी संख्या में थे, परंतु डेनमार्क इनपर अपना प्रभाव बनाए रखना चाहता था। अतः, बिस्मार्क ने डेनमार्क से युद्ध का निर्णय लिया। 1864 में हुए युद्ध में डेनमार्क की पराजय हुई। शेल्सविग पर प्रशा ने अधिकार कर लिया। हॉल्सटीन पर ऑस्ट्रिया का प्रभाव स्वीकार किया गया।

सेडोवा का युद्ध - हॉल्सटीन के प्रश्न पर 1866 में ऑस्ट्रिया-प्रशा युद्ध (सेडोवा का युद्ध) हुआ। युद्ध में ऑस्ट्रिया की पराजय हुई। हॉल्सटीन पर प्रशा का अधिकार हो गया। प्राग की संधि के अनुसार, जर्मन महासंघ भंग कर 22 उत्तरी जर्मन राज्यों का उत्तरी जर्मन महासंघ प्रशा के नेतृत्व में बनाया गया।

सीडान का युद्ध – यह युद्ध फ्रांस के साथ 1870 में हुआ। इसमें फ्रांस का सम्राट नेपोलियन तृतीय पराजित हुआ। फ्रैंकफर्ट की संधि (1871) द्वारा जर्मनी के दक्षिणी राज्य उत्तरी जर्मन महासंघ में मिल गए। इस प्रकार, तीन युद्धों ने जर्मनी का एकीकरण पूरा कर दिया।

1. यूरोप में राष्ट्रवाद

1. फ्रांस की क्रांति का प्रमुख कारण था-

(A) प्रजातंत्र शासन

(B) निरंकुश शासन

(C) गिरफ्तारी पत्र

(D) मनसबदारी प्रथा

Ans – B

PDFSARTHI.COM

2. फ्रांस में किस शासक वंश की स्थापना वियना कांग्रेस के द्वारा की गई थी?

(A) हैब्सबर्ग

(B) ऑलिया वंश

(C) बूर्बो वंश

(D) जार शाही

Ans – C

3. नेपोलियन संहिता किस वर्ष लागू की गई?

(A) 1789 में

(B) 1791 में

(C) 1801 में

(D) 1804 में

Ans – D

4. वियना सम्मेलन (काँग्रेस) का अध्यक्ष कौन था?

(A) नेपोलियन बोनापार्ट

(B) लुई अठारहवाँ

(C) चार्ल्स दशम

(D) मेटरनिक

Ans – D

5. मेटरनिक व्यवस्था का उद्देश्य क्या था?

PDF SARTHI.COM

(A) गणतंत्र की स्थापना करना

(B) प्रजातंत्र की स्थापना करना

(C) पुरातन व्यवस्था की पुनर्स्थापना

(D) नेपोलियन की पुनर्स्थापना

Ans – C

6. मेटरनिक कौन था?

(A) आस्ट्रिया का चांसलर

(B) फ्रांस का सम्राट

(C) रूस का जार

(D) प्रशा का चांसलर

Ans – A

7. किसने कहा था, "फ्रांस जब छींकता है तो बाकी यूरोप को सर्दी-जुकाम हो जाता है।"

(A) नेपोलियन

(B) हिटलर

(C) मेटरनिक

(D) गैरीबाल्डी

Ans – C

8. नेपोलियन कोड में कुल कितने कोड थे?

(A) तीन

PDF SARTHI.COM

(B) पाँच

(C) चार

(D) सात

Ans – B

9. रोमानीवाद क्या था?

(A) एक राजनीतिक आंदोलन

(B) एक सांस्कृतिक आंदोलन

(C) एक आर्थिक क्रांति

(D) एक धार्मिक क्रांति

Ans – B

10. इटली एवं जर्मनी वर्तमान में किस महादेश के अन्तर्गत आते हैं

(A) उत्तरी अमेरिका

(B) दक्षिण अमेरिका

(C) यूरोप

(D) पश्चिम एशिया

Ans – C

11. मारीआन किस देश के राष्ट्रवाद का प्रतीक था?

(A) फ्रांस

(B) जर्मनी

PDF SARTHI.COM

(C) इटली

(D) रूस

Ans – A

12. राष्ट्रवाद की अवधारणा का जन्म किस घटना से माना जाता है?

(A) पुनर्जागरण

(B) धर्मसुधार आंदोलन

(C) गौरवपूर्ण क्रांति

(D) फ्रांस की क्रांति

Ans – A

13. वियना काँग्रेस कब हुआ था?

(A) 1815

(B) 1818

(C) 1820

(D) 1848

Ans – A

14. 1830 की क्रांति के बाद फ्रांस में किस प्रकार का शासन स्थापित हुआ?

(A) संघीय शासन-व्यवस्था

(B) संवैधानिक राजतंत्र

(C) निरंकुश राजतंत्र

PDF SARTHI.COM

(D) गणराज्य

Ans – B

15. ऐक्ट ऑफ यूनियन किस वर्ष पारित हुआ?

(A) 1688 में

(B) 1707 में

(C) 1788 में

(D) 1807 मे

Ans – B

16 “यंग यूरोप" का संस्थापक कौन था?

(A) मेजिनी

(B) गैरीबाल्डी

(C) विक्टर इमैनुएल

(D) मुसोलिनी

Ans – A

17. इटली के एकीकरण का मसीहा कहा जाता है—

(A) नेपोलियन बोनापार्ट

(B) मेजिनी

(C) काबूर

(D) गैरीबाल्डी

PDF SARTHI.COM

Ans – B

18. मेजिनी का संबंध किस संगठन से था?

(A) लाल सेना

(B) कार्बोनरी

(C) फिलिक हेटारिया

(D) डायट

Ans – B

19. किसने अपनी कूटनीति के बल पर इटली की समस्या को संपूर्ण यूरोप की समस्या बना दिया?

(A) काउंट कावूर

(B) गैरीबाल्डी

(C) मेजिनी

(D) विक्टर इमैनुए

Ans – A

20. यंग इटली का संस्थापक कौन था?

(A) काबू

(B) गैरीबाल्डी

(C) मेजिनी

(D) मुसोलिनी

Ans – C

PDF SARTHI.COM

21. 'लाल कुर्ती' का गठन किसने किया था?

(A) काबूर

(B) मेजिनी

(C) बिस्मार्क

(D) गैरीबाल्डी

Ans – D

22. कावूर कौन था?

(A) जर्मनी का राजा

(B) इटली का प्रधानमंत्री

(C) इटली का राजा

(D) जर्मनी का मंत्री

Ans – B

23. 'फ्रेंड्स ऑफ इटली' नामक संस्था का गठन किसने किया था?

(A) जियोबार्टी ने

(B) चार्ल्स एलबर्ट ने

(C) विक्टर इमैनुएल ने

(D) मेजिनी ने

Ans – D

24. कार्बोनारी की स्थापना किस वर्ष हुई थी?

PDF SARTHI.COM

(A) 1810 में

(B) 1815 में

(C) 1830 में

(D) 1848 में

Ans – A

25. गैरीबाल्डी पेशे से क्या था?

(A) सिपाही

(B) किसान

(C) जमींदार

(D) नाविक

Ans – D

26. काउंट कावूर को विक्टर इमैनुएल ने किस पद पर नियुक्त किया?

(A) सेनापति

(B) फ्रांस में राजदूत

(C) प्रधानमंत्री

(D) गृहमंत्री

Ans – C

27. इटली के एकीकरण में निम्न में से किसका संबंध नहीं है?

(A) बिस्मार्क

PDF SARTHI.COM

(B) मेजिनी

(C) कावूर

(D) गैरीबाल्डी

Ans – A

28. विलियम प्रथम कहाँ का शासक था?

(A) इटली

(B) प्रशा

(C) ऑस्ट्रिया

(D) यूनान

Ans – B

29. जॉल्वेराइन की स्थापना किस राज्य ने की?

(A) प्रशा ने

(B) ऑस्ट्रिया ने

(C) सार्डिनिया ने

(D) नेपल्स ने

Ans – A

30. सीडान का युद्ध किसके बीच हुआ था?

(A) आस्ट्रिया-प्रशा

(B) प्रशा-डेनमार्क

PDF SARTHI.COM

(C) प्रशा-फ्रांस

(D) इटली-रोम

Ans – C

31. बिस्मार्क किस विद्वान की विचारधारा से प्रभावित था?

(A) रूसो

(B) हीगेल

(C) अण्डर्ट

(D) जैकब

Ans – B

32. जर्मनी एवं इटली के एकीकरण के विरुद्ध निम्न में कौन था?

(A) इंगलैंड

(B) रूस

(C) आस्ट्रिया

(D) प्रशा

Ans – C

33. नेपोलियन ने जर्मनी में किस संघ की स्थापना की?

(A) ट्रांसपेडेन संघ

(B) सिसेल्पाइन संघ

(C) राइन संघ

PDF SARTHI.COM

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – C

34. किस युद्ध के बाद जर्मनी का एकीकरण हुआ?

(A) क्रीमिया का युद्ध

(B) सेडोवा का युद्ध

(C) प्रशा-डेनमार्क युद्ध

(D) सीडान का युद्ध

Ans – D

35. जर्मेनिया क्या थी?

(A) ब्रिटिश राष्ट्र का प्रतीक

(B) जर्मन राष्ट्र का प्रतीक

(C) रूसी राष्ट्र का प्रतीक

(D) ऑस्ट्रियन सम्राट का प्रतीक

Ans – B

36. जर्मनी का एकीकरण कब पूरा हुआ?

(A) 1890 ई० में

(B) 1848 ई० में

(C) 1871 ई० में

(D) 1870 ई० में

PDF SARTHI.COM

Ans – C

37. " जालवेरिन" एक संस्था थी—

(A) क्रांतिकारियों की

(B) व्यापारियों की

(C) विद्वानों की

(D) पादरी सामंतों की

Ans – B

38. सेडाओं के युद्ध में किसकी पराजय हुई?

(A) ऑस्ट्रिया की

(B) प्रशा की

(C) नेपल्स की

(D) सार्डिनिया की

Ans – A

39. बिस्मार्क क्या था?

(A) कवि

(B) नाटककार

(C) संगीतज्ञ

(D) कूटनीतिज्ञ

Ans – D

PDF SARTHI.COM

40. हीगेल कौन था?

(A) जर्मन चांसलर

(B) राजनीतिज्ञ

(C) दार्शनिक

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – C

41. सन् 1870 में फ्रांस और प्रशा के बीच हुआ था?

(A) सेडान

(B) सेडोवा

(C) साइराइन

(D) फ्रैंकफर्ट

Ans – A

42. किस संधि द्वारा जर्मनी का एकीकरण पूरा हुआ?

(A) डेनमार्क की संधि

(B) गैस्टीन की संधि

(C) प्राग की संधि

(D) फ्रैंकफर्ट की संधि

Ans – D

43. शेल्स विग और होल्सटीन का संबंध किस देश के एकीकरण से है?

PDF SARTHI.COM

(A) इटली के एकीकरण

(B) जर्मनी के एकीकरण

(C) यूनान के एकीकरण

(D) अमेरिका के एकीकरण

Ans – B

44. जर्मन राईन राज्य का निर्माण किसने किया था?

(A) लुई 18वाँ

(B) नेपोलियन बोनापार्ट

(C) नेपोलियन- III

(D) बिस्मार्क

Ans – B

45. रक्त एवं लौह की नीति का अवलम्बन किसने किया था?

(A) मेजिनी

(B) हिटलर

(C) बिस्मार्क

(D) विलियम

Ans – C

46. फ्रैंकफर्ट की संधि कब हुई?

(A) 1864

PDF SARTHI.COM

(B) 1866

(C) 1870

(D) 1871

Ans – D

47. सेडान युद्ध कब हुआ?

(A) 1871

(B) 1870

(C) 1848

(D) 1815

Ans – B

48. जर्मनी के एकीकरण का प्रमख वास्तुकार कौन था?

(A) मेजिनी

(B) गैरीबाल्डी

(C) लेनिन

(D) बिस्मार्क

Ans – D

49. 1871 में कौन-सी संधि हुई थी?

(A) फ्रैंकफर्ट की संधि

(B) पेरिस की संधि

PDF SARTHI.COM

(C) वियना काँग्रेस

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – A

50. जर्मनी के एककीकरण के लिए कौन उत्तरदायी था?

(A) काउंट कावूर

(B) बिस्मार्क

(C) गैरीबाल्डी

(D) मेजिनी

Ans – B

51. 'यूरोप का मरीज' किसे कहा जाता था?

(A) तुर्की

(B) इटली

(C) इंग्लैंड

(D) फ्रांस

Ans – A

52. यूरोपवासियों के लिए किस देश का साहित्य एवं विज्ञान प्रेरणा का स्रोत रहा है?

(A) जर्मनी

(B) यूनान

(C) तुर्की

PDF SARTHI.COM

(D) इंगलैंड

Ans – B

53. यूनान के स्वतंत्रता संग्राम में किसकी पराजय हुई?

(A) यूनान की

(B) तुर्की की

(C) रूस की

(D) फ्रांस की

Ans – B

54. 1829 ई० की एड्रियानोपुल की संधि किस देश के साथ हुई?

(A) रूस

(B) यूनान

(C) ब्रिटेन

(D) पोलैंड

Ans – A

55. 'यूरोपीय सभ्यता का पालना' किस देश को कहा जाता है?

(A) इटली

(B) रोम

(C) स्पेन

(D) यूनान

PDF SARTHI.COM

Ans – D

56. हंगरी की भाषा क्या थी?

(A) इतालवी

(B) मैग्यार

(C) पोलिश

(D) फ्रेंच

Ans – B

57. यूरोपीय राष्ट्रवाद से प्रभावित होकर किस भारतीय शासक ने जैकोबिन क्लब की स्थापना की?

(A) हैदरअली

(B) टीपू सुल्तान

(C) सफदरजंग

(D) शिवाज

Ans – B

58. 19 वीं शताब्दी में यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास का क्या परिणाम हुआ?

(A) साम्राज्यवाद का विकास

(B) उपनिवेशवाद का विकास

(C) निरंकुश राज्यों की स्थापना

(D) राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना

Ans – D

PDFSARTHI.COM

2. समाजवाद एवं साम्यवाद

• **समाजवाद -** समाजवाद एक ऐसी विचारधारा होती है। जिसके तहत समाज के किसी भी वर्ग के साथ कोई भेदभाव न किया जाता है, समाजवाद कहलता है। यह राज्य को अपनाना चाहता है। यह सभी वर्गों के समन्वय की बात करता है। समाजवाद शब्द का पहला प्रयोग 1827 ई० में हुई।

• **समाजवादी विचारधारा -** जिन व्यक्तियों के अन्दर समाजवाद की भावना उत्पन्न होती थी या जिन्होंने समाजवाद को आगे बढाया। जो मजदूरों के बारे में सोचा करते थे। उन्हें समाजवादी कहा जाता था। जिसमे मुख्य नाम सेंट साइमन, रावर्ट ओबेन, फौरियर, कार्ल मार्क्स एवं एगेंल्स इत्यादी ।

समाजवादी दो तरह के होते थे।

1. आरंभिक समाजवादी - कार्ल मार्क्स से पहले के समाजवादी को आरंभिक समाजवादी कहा गया। इन्हें ही स्वप्नदर्शी या यूटोपीयन समाजवादी कहा गया। सबसे प्रथम यूटोपीयन समाजवादी सेंट साईमन था। जिनका यह कहना था की प्रत्येक व्यक्ति को उनकी क्षमता के अनुसार काम मिले और काम के अनुसार उसका पारिश्रमिक भी मिलना चाहिए। ये औधोगिकरण के खिलाफ थे।

2. कार्ल मार्क्स के बाद का समाजवाद –

Q. फैक्ट्री के मालिकों ने मजदूरों पर कैसे-कैसे अत्याचार किये।

- मजदरों को मजदूरी कम देते थे।

समय से ज्यादा घंटे काम लेते थे। मजदरों के काम करने के लिए स्थिती बिलकुल अच्छी नही थी।

*** रावर्ट ओवेन :-** इंग्लैंड में समाजवाद का जनक ब्रिटिश उधोगपति रावर्ट ओवेन को ही कहा जाता है। इनका ऐसा मानना था की औधोगिकरण व्यवस्था के फलस्वरूप जो कारखाना का जन्म हुआ है उससे श्रमिकों का शोषन किया जा रहा है। अतः श्रमिको को शोषण से बचाने के लिए इन्होने

PDF SARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

स्कॉटलैंड के न्यू लूनार्क नामक जगह पर आदर्श कारखाना की स्थापना की। और इन्होने मजदरों के हित में सोचा और अच्छा काम किया।

जैसे :- ★ मजदूरों के मजदूरी को बढ़ा दिया।

★ काम के घंटे कम कर दिए।

★ मजदूरों के बच्चों को पढने का व्यवस्था किया। ताकि मजदुर के बच्चे भी पढ़ सके।

★ रहने, खाने, ईलाज का व्यवस्था किया।

2. साम्यवाद - साम्यवाद भी एक ऐसी विचारधारा होती है। जो समाज मे रहने वाले किसी भी वर्ग के साथ कोई भेदभाव नही करता है। साम्यवाद कहलाता है। साम्यवाद का देन कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स को कहा जाता है यह मजदूरों के साथ हो रहे अत्याचार को मिटाना चाहता है। इनका कहना था की अधिकार और कर्तव्य में सामंजस्य स्थापित होना चाहिए। न्याय से कोई वंचित नहीं होगा और मानवता एक मात्र जाति होगी।

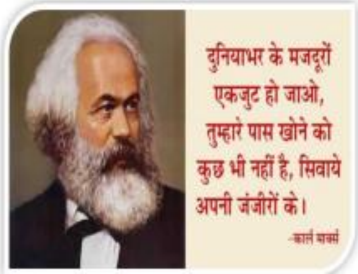

*** कार्ल मार्क्स :**

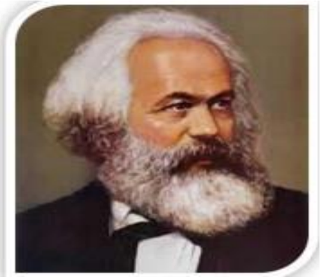

★ **जन्म -** 5 मई 1818 ई० में (जर्मनी के राइन प्रान्त में)

★ **पिता का नाम -** हेनरिक मार्क्स (वकील)

★ **धर्म -** यहूदी (बाद में इसाई धर्म को अपनाया)

★ **शिक्षा -** बोन और बर्लिन विश्वविद्यालय में –

★ यह मॉन्टेस्क्यु और हिगेल के विचारो से प्रभावित था।

PDFSARTHI.COM

★ 1843 ई० में वचपन की दोस्त जेनी से विवाह किया –

★ 1844 में इन्होने घर छोड़ दिया और पेरिस में फ्रेडरिक एंगल्स से मुलाकात हुई –

★ 1848 ई० में इन्होने साम्यवादी घोषणापत्र (कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो) निकाला –

★ इन्हें आधुनिक समाजवाद का जनक कहा जाता है।

★ 1867 में इन्होने एक किताब लिखा दास कैपिटल जिसे समाजवादियों का बाइबिल कहा जाता है

★ 1883 में 65 वर्ष की आयु में कार्ल मार्क्स का निधन हो गया।

कार्ल मार्क्स के सिद्धांत –

1. द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत
2. वर्ग-संघर्ष का सिद्धांत
3. इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या
4. मूल्य एवं अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
5. राज्यहीन व वर्गहीन समाज की स्थापना

★ कार्ल मार्क्स ने इतिहास को 5 भागों में बाँटा

1. सबसे पहले आदिम साम्यवादी युग था
2. दासता युग आया
3. सामंती युग

★ 1 मई 1890 ई० को मजदूरों ने अमेरिका में हड़ताल किया और मजदुर दिवस मनाया, और आज भी इस दिन को हम मजदुर दिवस के रूप में मनाते है।

PDF SARTHI.COM

4. पूंजीवादी युग

5. समाजवादी युग और साथ ही कार्ल मार्क्स ने यह बोला की एक छठा युग भी आएगा जो वर्गविहीन युग आएगा, जिसे मजदुर लोग लेकर आयेंगे।

Q. यूटोपियन समाजवादियों के विचारो को प्रकट करे।

उत्तर - ऐतिहासिक दृष्टिकोण से आधूनिक समाजवाद को दो वर्गो मे बाँटा गया है।

1. माक्स से पहले समाजवाद को यूटोपियन समाजवाद कहा जाता है।

2. माक्र्स के बाद समाजवाद को वैज्ञानिक समाजवाद कहा जाता है। अधिकतम यूटोपियन विचारक फ्रांसीसी थे।

प्रमुख विचारक –

1. सेन्ट साईमन - इन्होने समाजवादी विचारधारा को काफी आगे बढ़ाने का कार्य किया। इनका मानना था कि राज्य एवं समाज को इस तरह संगठित करना चाहिए ताकि लोग एक दुसरे का शोसन न कर सके।

2. चार्ल्स फौरियर - अगर कोई व्यक्ति किसी गाँव, कस्वा, नगर मे रहता है तो उसे भी कोई काम करना चाहिए।

3. लुई ब्लां - इनका कथन था कि आर्थिक सुधार से पहले राजनीतिक सुधार आवश्यक है ।

Q. मार्क्सवाद के आर्दश को लिखे।

उत्तर - मार्क्सवाद का मुख्य उद्देश्य एक वर्गहीन समाज की स्थापना करना तथा समाज में फैले हुए बुराईयो को हटाना हम सभी के समाज में हर संप्रदाय के लोग रहते है। उनके साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नही किया जाना चाहिए।

PDF SARTHI.COM

Q. कार्ल मार्क्स के जीवनी को लिखे।

उत्तर - कार्लमार्क्स का जन्म 5 मई 1818 ई० को जर्मनी के राइन प्रांत में ट्रीयर नगर में एक यहुदी परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम हेनरिक मार्क्स था। जो पेशे से वकील थे। इन्होने 1824 ई० मे आगे चलकर इसाई धर्म को अपनाया । इनकी प्रारंभिक शिक्षा वोन एवं बरलिन विश्व विद्यालय मे 1836 ई० मे हुआ। यह बचपन से ही मेघावी छात्र थे। इन्होने अर्थशास्त्र का गहन अध्ययन किया। 1843 ई० मे बचपन के मित्र जेनी के साथ विवाह किया और 1844 ई० मे फ्रेडरिक एंगेल्स से मुलाकात हुई और इनके विचार से प्रभावित हुए और गरीबो की समस्या पर विचार किए। कार्ल मार्क्स ने नारा लगाया की दुनिया के मजदुरो एक हो जाओ । साथ ही पूँजीवाद का घोर विरोध किया। जो कि पूँजीवाद लोग गरीबो को जमकर शोषण कर रहे थे। इनकी प्रसिद्ध रचना दास कैपिटल है। जो 1867 ई० मे प्रकाशित हुआ था। इसे समाजवादियों का बाईबील भी कहा जाता है। कार्ल मार्क्स का मौत 1883 मे लंदन में हो जाता है। **Q. पूँजीवाद क्या है ?**

उत्तर - यह एक प्रकार की राजनितिक एवं आर्थिक संस्था होती है। जो निजी लाभ और निजी सम्पति के बारे मे सोचता है, पूँजीवाद कहलाता है। इसमे उत्पादन के साधनों पर सरकार का अधिकार नही होता बल्कि कोई निजी संस्था संस्था का अधिकार होता है। ★ यह सार्वजनिक एवं आर्थिक गतिविधियों का विरोध करता है।

★ इसमे ज्यादा से ज्यादा मुनाफा और व्यापार प्राप्त किया जाता है। जैसे- अमेरिका, बिट्रेन इत्यादि ।

Q. उपनिवेशवाद क्या है?

उत्तर - जब कोई शक्तिशाली एवं उन्नत देश किसी कमजोर देश के ऊपर अपना शासन और नियंत्रण स्थापित कर लेता है, उसे उपनिवेश कहा जाता है। और उपनिवेश स्थापित करने की प्रक्रिया को अपनिवेशवाद कहा जाता है। इसमें तानाशाही शासन होता है। जो संस्कृति, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्रो पर जमकर शोषण करते है। और अधीक से अधिक लाभ कमाते है।

PDF SARTHI.COM

Q. बाम्यपन्तीं और दक्षिणापन्थ मे क्या अंतर है?

उत्तर – वाम्यपन्थी - यह एक ऐसी विचारधारा होती है जिसमें सरकार के द्वारा एक निती बनाया जाता है जिसमे गरीब, दलित, पिछड़ा दबाकुचला लोगों को सहायता किया जाता है जिसे वामपन्थी कहते है। यह पूँजीवाद का विरोधी होती है । **दक्षिणापन्थ -** यह एक ऐसा विचारधारा होती है जिसमें सरकार अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप नही करता है इसमे खुली प्रतियोगता होती है। यह पूँजीवाद का समर्थक होता है।

रूस में क्रांति

रूस में मुख्य रूप से दो क्रांति हुई ।

1. 1905 ई० की क्रांति **(रोमनोव राजवंश)**

2. 1917 ई० की क्रांति

- फरवरी की क्रांति (जारशाही समाप्त हुआ)
- अक्टूबर की क्रांति (लेनिन ने यह क्रांति किया)

Q. खुनी रविवार से आप क्या समझते है?

उत्तर - 9 जनवरी 1905 ई० को जारसत्ता को मिटाने के लिए लगभग एक लाख मजदूर आपस मे मिलकर रोटी दो का नारा लगाते हुए राजा के सेंट पिट्सवर्ग महल की ओर जार रहे थे। जिसकी सुचना मिलते ही राजा ने सैनिको को निहथे लोगो पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। जिससे हजारो हजार की संख्या मे लोगो को मौत हो गई और यह घटना दिन रविवार को घटा था। जिसके कारण इसे

PDFSARTHI.COM

खुनी रविवार कहा जाता है। इसे लाल रविवार भी कहा जाता है। यह आंदोलन खुनी रविवार के नाम से जाना जाता है।

Q. रूस के क्रांति (1917) के मुख्य कारण को लिखे।

उत्तर - रूस प के क्रांति के मुख्य कारण निम्नलिखित थे-

राजनितिक कारण

1. जार का निंरकुश शासन - रूस के क्रांति का यह सबसे बड़ा कारण माना जाता है। जिसमे रोमनोव राजवंश का जार अपने इच्छा के अनुसार काम करता था। यह एक आयोग्य शासक था। जिसे जनता की सुख दुख का कोई चिन्ता न थी। वह अपने आप को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था।

2. रूसीकरण की नीति - रूस में अनेक प्रकार की जातियाँ पाई जाती थी जैसे यहुदि, जर्मन, फिन, पोल, स्लाव इत्यादि। ये लोग अलग-अलग भाषा बोलते थे एवं इनका रस्म-रिवाज भी अलग-अलग था। इन सभी जातियो पर शासक ने अत्याचार किया और जार-निकोलस द्वितीय द्वारा जारी रुसीकरण की नीति से काफी परेशान था। कहा कि एक जार, एक भाषा, एक रूस, एक धार्मिक निती को अपनाओ जिसका विरोध जनता ने किया।

3. राजनितिक दलों का उदय - 1883 ई० में एक पार्टी बनी थी जिसका नाम था रुसी सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी । इसमें बहुत सारे वैसे लोग जुड़ गये थे जो जार के खिलाफ लड़ाई-झगड़ा करना चाहते थे। लेकिन बाद में 1903 में कुछ दिनों के बाद यह पार्टी टूट गयी थी। और दो हिस्सों में बंट गया जिसमे पहला था मेंसेविको की पार्टी (अमीरों की पार्टी) और दूसरा था बोल्सेविको की पार्टी (गरीबों की पार्टी)

4. नागरिक एवं राजनितिक स्वतंत्रता का अभाव &

PDFSARTHI.COM

रूस की प्रतिष्ठा में कमी &

1905 ई० के क्रांति का असर

5. प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय - प्रथम विश्व युद्ध 1914 से 1918 तक चला। इसमे रूस मित्र राष्ट्र की ओर से लड़ा था। जिसका मुख्य उद्देश्य था की तमाम जनता आंतरिक असंतोष को भूलकर बाहरी मामलो में उलझ जायेगा और रूसी सरकार की समर्थन भी करेगा। लेकिन जार निकोलस द्वितीय की आशा पर निराशा छा गई। चुकि रूसी सेनाओ का कमान जार ने खुद संभाला था। इनके पास न तो अच्छे हथियार था और न ही पर्याप्त भोजन की सुविधा। और विश्व युद्ध मे लगातार हार होने के कारण इसका प्रतिष्ठा मिट्टी मे मिल गया। परिणाम ये हुआ कि उसका पुरा दरबार खाली हो गया।

6. रासपुटीन का प्रभाव - रासपुटीन एक भ्रष्ट पादरी था। जो जार के यहाँ ही रहता था। एवं जार का ही तथाकथित गुरु था। लेकिन उसका संबंध रूस के जार (राजा) के पत्नी जरीना से था। रासपुटिन ने जरीना को अपने वश में कर ही रखा था और जार के अनुपस्थिति में जार के खिलाफ ही षडयंत्र करने का मौका मिल गया। जरीना के सहारे वह रूस के बागडोर को भी संभाल रखा था ।

सामाजिक कारण

7. किसानो की दैनिय स्थिती - रूस के क्रांति के समय किसानो की स्थिती अत्यंत दैनिय थी क्योंकि वह अपने खेतो मे पुराने तकनीक से खेती करते थे। जिससे फसल का पैदावार अच्छा नही होता था। इसके अलावा शासको के द्वारा टैक्स वसुली करने से इन लोगो की स्थिती और दयनीय हो गई। 1861 में कृषि दासता समाप्त कर किसानों से जमीन के बदले मोटी रकम ली गयी। ऐसे में किसानों के पास क्रांति के सिवाय कोई दूसरा चारा नही था।

8. मजदुरो की दैनिय स्थिती - रूस में मजदूरो की दशा बहुत खराब हो चुकी थी। क्योंकि इन मजदूरो से अधिक समय तक कठोर काम तथा उसके बदले मे बहुत कम मजदुरी देता था। उत्तम आवास

PDF SARTHI.COM

और स्वास्थय का कोई प्रबंध नही था। मजदुर लोग अपनी मांगों के समर्थन में हड़ताल भी नही कर सकते थे। इन मजदूरो के सारे विद्रोह को दबा देता था।

9. बेकारी / बेरोजगारी की समस्या - रूस के क्रांति मे बेरोजगारी की भयंकर समस्या उत्पन्न हो गई थी। लाखो लाख की संख्या मे लोग बेरोजगार हो गये थे। चुकि जीने को कोई साधन नही था। अतः लोग क्रांति पर उतर आये ।

बौद्धिक कारण

रूस में लोग धीरे-धीरे बुद्धजीवी होते जा रहे थे जो अपने लेखों और रचनाओं के जरिये लोगों को जागरूक करने का कार्य कर रहे थे। जैसे लियो टाल्सटाय ने युद्ध और शांति (War and Peace) नामक एक पुस्तक लिखी और मजदूरों में जोश भरने का कार्य किया ।

Q. रूस की क्रांति के प्रभाव परिणाम को लिखे ।

उत्तर - बोल्शेविक क्रांति ने पुरे रूस के क्षेत्रों मे विकास का परचम लहराने का कार्य किया। इन्होने जाराशाही सत्ता को मिटाकर समाजवादी गणतंत्र की स्थापना की तथा सत्ता का बागडोर किसानो एवं मजदूरो के हाथ में सौप दिया।

प्रमुख प्रभाव / परिणाम

1. रूस में स्वेच्छाचारी शासन का अंत - सदियों से चली आ रही रूस मे स्वेच्छाचारी शासन का अंत कर दिया गया तथा जार और उसकी पत्नी जरिना की हत्या (1918) कर समाजवादी गणतंत्र की स्थापना की गई।

2. ल्युनोव का नेतृत्व - ल्युनोव के नेतृत्व में उदारवादियों ने अपना सरकार बनाया और जार का सत्ता समाप्त हो गया।

PDF SARTHI.COM

2. विश्व का दो खेमो मे बॅंट जाना - रूस की क्रांति ने पूरा विश्व दो भागो मे बाँट दिया। पुँजीवाद & साम्यवाद इसके साथ-साथ रूस भी दो भागो मे बॅंट गया। पुर्वी रूस एवं पश्चिमी रूस

3. रूसी पंचाग:- 1917 ई० के रूस की क्रांति के समय रूस मे दो प्रकार के कैलेंडर थे। जुलियन कैलेंडर और ग्रेगोरियन कैलेंडर । जुलियन कैलेंडर को समाप्त कर ग्रेग्रेरियन को मानता दिया गया। ग्रेगोरियन कैलेंडर, जुलियन कैलेंडर से 13 दिन आगे चलता था।

4. किसानो एवं मजदूरो की स्थिती मे सुधार - रूस मे जार का शासन समाप्त होते ही सत्ता का बागडोर मजदूरो एवं किसानो के हाथो मे आ जाता है और लोग खुशीपूर्वक जीवन निर्वाह करने लगते है।

5. संविधान की रचना - 1918 ई० मे लेनिन एक संविधान बनाया था। जिसमे सबको समानता का अधिकार दिया गया और इसने धर्मनिपेक्ष की निती अपनाई ।

अक्टूबर की क्रांति –

★ जुलाई 1918 में जार और जरीना को गोली मारकर हत्या करने के बाद यानी फरवरी की क्रांति के बाद रूस में ल्युनोव के नेतृत्व में सरकार बनी ।

★ लेकिन ल्युनोव भी शासन अच्छे से नही चला पा रहा था और जनता उससे भी नाराज हो गयी क्योंकि यह मेंसेविको का नेता था, अतः ल्युनोव को हटा कर रूस में एक नया राजा बनाया गया जिसका नाम था करेंसकी।

★ लेकिन लेलिन को यह जानकर बहुत हैरानी हुई की जिस लिए यह क्रांति हुई उसमे तो कोई परिवर्तन ही नही हुआ । न तो किसानों की स्थिति सुधरी और न ही मजदूरों की, अतः उसने कहा की अभी एक क्रांति और होगा।

PDFSARTHI.COM

★ अत: लेलिन ने अपने एक खास दोस्त ट्राटास्की और सभी किसान और मजदूरों के साथ मिलकर 25 अक्टूबर 1917 ई० मे बोल्शेविको के द्वारा पेट्रोगाद के रेलवेस्टेशन, बैंक, टेलीफोन डाकघर, सरकारी भवनो पर अधिकार कर लिया जाता है। और बोल्शेविको दल का कार्यक्रम स्पस्ट किया जो अप्रैल थीसिस के नाम से जाना जाता है। लेनिन ने तीन नारे दिए भूमि, शांति और रोटी। इसमे कैरेंसकी की सरकार भाग जाती है। और सत्ता का बागडोर बोल्शेविको के पास आ जाती है। जिसका नेता लेनिन को बनाया गया। इस क्रांति को बोल्शेविक नवम्बर की क्रांति भी कहा जाता है।

Q. लेलिन कौन था ?

- लेलिन बोल्सेविक दलों का सबसे बड़ा नेता था। बचपन से ही लेलिन का झुकाव साम्यवाद की तरफ था। यह जारसाही के विरुद्ध थे। जिसका सबसे बड़ा कारण था, इसके बड़े भाई की एक जार के हत्या के इल्जाम में गोली मारकर हत्या कर देना। 1905 के क्रांति में भी लेलिन का बहुत बड़ा योगदान था। लेकिन खुनी रविवार के घटना के बाद यह भाग कर स्विट्जरलैंड चले गये और निर्वासित जीवन व्यतीत करने लगे। लेकिन पुन: 1917 में वह वापस लौटकर केरेंसकी की सरकार को हटाया और खुद गरीबों का मसीहा बन गया। और ट्राटास्की को अपना युद्धमंत्री बनाया। और ट्राटास्की के नेतृत्व में लाल सेना का गठन किया।

★ लेलिन के द्वारा किये गये कुछ महत्वपूर्ण काम

★ सबसे पहले लेकिन ने पूर्ण रूप से रूस में युद्ध बंद करवाया। और प्रथम विश्व युद्ध से भी रूस के सभी सेना को बापस बुला लिया।

★ इसने जर्मनी के साथ एक संधि किया जिसका नाम था ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि । यह सिंघी जर्मनी और रूस के बीच हुआ था। जिसका गठन 1918 ई० मे लेनिन ने किया था। जिसका उद्देश्य

1. शांति स्थापित करना

PDF SARTHI.COM

2. अर्थव्यवस्था मे सुधार

3. सेनाओ के राहत मे सुधार

★ अमीरों से जमीन को छिनकर किसानों और गरीबों में बाँट दिया।

★ उपद्रवियों को शांत करने के लिए एक सेना बनाया जिसका नाम था चेका ।

★ लाल सेना का गठन किया और प्रतिक्रांति का दमन किया ।

★ नई आर्थिक निति को बनाया

★ शिक्षा में सुधार किया और प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य किया ।

★ प्रशासनिक सुधार हुआ और जारशाही के लोगों को हटाया ।

★ 1918 में एक नया संविधान बनाया और USSR का गठन किया

Union of Soviet Socialist Republics

नई आर्थिक निती –

Q. नई आर्थिक निती से आप क्या समझते है?

उत्तर - लेनिन के द्वारा 1921 ई० मे एक निती अपनाया गया था जिसे नई आर्थिक निती के नाम से जाना जाता है। इसे Nep (New Economic Policy) व्यवस्था मे परिवर्तन करके किसानो और जनता के हित मे सकारात्मक कार्य किए गए है जैसे :- है। लेनिन साम्यवादी

1. किसानों से अनाजों लेने के बदले एक निश्चित कर लगा दिया गया।

2. जगह- जगह पर बैंक खोल दिए गए।

PDF SARTHI.COM

3. बीस कर्मचारी से कम रहने पर भी व्यक्तिगत रूप से कल - कारखाने चलेंगे।

4. व्यापार संद्य की सदस्यता को रद्द कर दिया गया।

5. जमीन राज्य का है, लेकिन भुमि किसानो का दे दे दी जाए।

6. उद्योगो का विकेन्द्रीकरण

7. विदेशी पूँजी भी सिमित तौर पर आमंत्रित की गयी।

8. व्यक्तिगत सम्पति और जीवन की बीमा भी राजकीय एजेंसी द्वारा शुरू की गयी।

Q. क्रांति के पहले रूस की किसानो की स्थिती कैसी थी?

उत्तर - क्रांति के पहले रूस की किसानो की स्थिती दयनीय थी, क्योंकि वे अपने खेतो मे पूराने तकनीक से खेती किया करते थे। जिससे फसल का पैदावार बहुत कम होता था। साथ ही शासक के द्वारा किसानो पर टैक्स लगा दिया गया।

Q. अप्रैल थिसिस क्या है?

उत्तर - इसका गठन 16 अप्रैल 1917 ई० को लेनिन के द्वारा किया गया था। जिसका उद्देश्य कैरेंसकी की सरकार को गिराने के लिए लेलिन पेट्रोगाद शहर पहुँचाता है और अपना जोरदार भाषण देकर जनता को आर्कषित कर लिया और नारा दिया कि तुम्हे क्या चाहिए भुमि, शांति, रोटी चाहिए की युद्ध और भुखमरी ।

Q. शीतयुद्ध से आप क्या समझते है?

उत्तर - वैसा युद्ध जिसमे किसी भी प्रकार का अस्त्र शस्त्र का प्रयोग नही किया जाता है केवल बातो-बात होता है। जिसे शीत युद्ध कहते है। इसे वाक् युद्ध भी कहा जात है। यह युद्ध रूस और अमेरिका के बीच हुआ था।

PDFSARTHI.COM

Q. ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि क्या है ?

उत्तर - यह सिंघी जर्मनी और रूस के बीच हुआ था। जिसका गठन 1918 ई० मे लेनिन ने किया था। जिसका उद्देश्य

1. शांति स्थापित करना

2. अर्थव्यवस्था मे सुधार

3. सेनाओ के राहत मे सुधार

Q. प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय क्रांति हेतु मार्ग प्रशस्त करे।

उत्तर - प्रथम विश्व युद्ध की शुरूआत 1914 मे हुई जो 1918 तक चला। इसमे रूस मित्र राष्ट्र की ओर से लड़ा था जिसका मुख्य उद्देश्य तमाम जनता रूसी सरकार की समर्थन करेगा लेकिन जार निकोलस द्वितीय की आशा पर निराशा छा गई। चुकिं रूसी सेनाओ का कमान जार ने संभाला था। और विश्व युद्ध मे लगातार हार होने के कारण इसका प्रतिष्ठा मिट्टी मे मिल गया। परिणाम ये हुआ कि उसका पुरा दरबार खाली हो गया।

Short Answer Type Question

समाजवाद, साम्यवाद और रूस की क्रांति

1. समाजवाद की संक्षिप्त व्याख्या करें। अथवा, समाजवाद की क्या विशेषताएँ थीं?

उत्तर - समाजवादी नागरिक और कानूनी समानता से अधिक महत्त्व सामाजिक और आर्थिक समानता को देते हैं। समाजवादियों ने ऐसी व्यवस्था की माँग की जिसमें उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व नहीं हो। आरंभिक समाजवादियों को 'स्वप्नदर्शी समाजवादी' (Utopian Socialists) कहा गया। आगे चलकर कार्ल मार्क्स और एंगेल्स ने समाजवाट की नई व्याख्या प्रस्तुत की जिसे 'वैज्ञानिक समाजवाद' का नाम दिया गया।

2. यूटोपियन समाजवादियों के विचारों का वर्णन करें।

PDF SARTHI.COM

उत्तर - इनके लिए समाजवाद एक आदर्श सिद्धांत मात्र था। वे उच्च और अव्यावहारिक आदर्शों से प्रभावित थे। वे 'वर्गसंघर्ष' की अपेक्षा 'वर्गसमन्वय' के सिद्धांत में विश्वास करते थे। सेंट साइमन, चार्ल्स फूरिए, लुई ब्लाँ तथा रॉबर्ट ओवेन इनमें प्रमुख थे। स्वप्नदर्शी समाजवादी राज्य और समाज का पुनर्गठन इस प्रकार चाहते थे जिससे शोषण की प्रक्रिया समाप्त हो जाए।

3. कार्ल मार्क्स का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर - कार्ल मार्क्स का जन्म 1818 में जर्मनी में हुआ था। उन्होंने समाजवाद की एक नई व्याख्या की। इसे वैज्ञानिक समाजवाद कहा जाता है। दास कैपिटल उनकी विख्यात पुस्तक है। मार्क्स पूँजीवाद के विरोधी थे। वे श्रमिकों को एकजुट होकर शोषण का विरोध करने को उत्प्रेरित करते थे। वे वर्गसंघर्ष में विश्वास करते थे। उन्होंने इतिहास की आर्थिक व्याख्या प्रस्तुत की।

4. साम्यवाद एक नई आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था कैसे थी?

उत्तर - साम्यवाद ने समाजवाद की एक नई व्याख्या प्रस्तुत की । इतिहास की आर्थिक (भौतिक) विवेचना कर मार्क्स ने बतलाया कि मानव इतिहास उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण करने के लिए दो वर्गों, पूँजीपतियों और श्रमिकों, में संघर्ष की कहानी है। इसमें अंतिम विजय श्रमिकों की होगी, वर्गविहीन समाज की स्थापना होगी तथा सर्वहारा वर्ग की विजय होगी।

5. रूसीकरण की नीति क्रांति हेतु कहाँ तक उत्तरदायी थी ?

उत्तर - रूस में विभिन्न प्रजातियाँ निवास करती थीं। इनकी भाषा एवं संस्कृति अलग- अलग थी, परंतु जार ने देश की एकता के लिए रूसीकरण की नीति अपनाई, सब पर समान भाषा, शिक्षा और संस्कृति थोपने का प्रयास किया। 1863 में रूसीकरण की नीति के विरुद्ध पोलों ने विद्रोह कर दिया जिसे दबा दिया गया। इससे विद्रोह को भावना बलवती हुई और रूसी क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

6. प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय ने क्रांति के लिए मार्ग कैसे प्रशस्त किया?

उत्तर - प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय 1917 की रूसी क्रांति का तात्कालिक कारण बना। इस युद्ध में रूस की पराजय लगातार होती गई। युद्ध आरंभ होने पर जार निकोलस द्वितीय ने सेना की कमान अपने हाथों में ले ली। युद्ध

PDFSARTHI.COM

में रूस की पराजय जारशाही के लिए घातक सिद्ध हुई। उसकी शक्ति और प्रतिष्ठा गिर गई। क्षुब्ध और क्रुद्ध होकर जनता विद्रोह पर उतारू हो गई।

7. रूस की क्रांति ने पूरे विश्व को कैसे प्रभावित किया ? अथवा, रूसी क्रांति का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - रूस की क्रांति के विश्वव्यापी प्रभाव पड़े-

(i) सर्वहारा वर्ग के सम्मान में वृद्धि हुई।

(ii) रूस के समान अनेक देशों में साम्यवादी सरकारों की स्थापना हुई।

(iii) विचारधारा के आधार पर विश्व और यूरोप दो खेमों में विभक्त हो गया।

(iv) अंतरराष्ट्रवाद को प्रोत्साहन मिला।

(v) शीतयुद्ध आरंभ हुआ।

(vi) एशिया और अफ्रीका में साम्राज्यवाद का पतन हुआ तथा उपनिवेश-मुक्ति आंदोलन को बल मिला।

8. लेनिन की नई आर्थिक नीति मार्क्सवादी सिद्धांतों के साथ कैसे समझौता थी ?

उत्तर - साम्यवादी व्यवस्था में व्यक्तिगत संपत्ति की अवधारणा नहीं थी, परंतु लेनिन ने तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए किसानों को जमीन का स्वामित्व दिया। व्यक्तिगत स्वामित्व में उद्योग चलाने का भी अधिकार नई आर्थिक नीति में दिया गया। स्पष्टतः, यह नीति मार्क्सवादी सिद्धांतों के साथ समझौता थी, परंतु इससे सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ।

9. स्टालिन का परिचय दीजिए ।

उत्तर - लेनिन के बाद सोवियत संघ की सत्ता स्टालिन (1879-1953) के हाथों में आई। स्टालिन का अर्थ 'फौलादी पुरुष' है। सत्ता सँभालते समय उसके समक्ष अनेक समस्याएँ थीं जिनके निराकरण के लिए उसने प्रयास किया। सोवियत संघ के विकास के लिए उसने तीन पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा औद्योगिकीकरण को बढ़ावा दिया। कृषि, विज्ञान एवं शिक्षा में सुधार किया तथा श्रमिकों की स्थिति को बेहतर बनाने का प्रयास किया। उसकी नीतियों से सर्वाधिकारी शासन की स्थापना हुई।

PDFSARTHI.COM

Long Answer Type Question

समाजवाद, साम्यवाद और रूस की क्रांति

1. यूटोपियन समाजवादियों के विचारों का वर्णन करें।

उत्तर - प्रथम यूटोपियन समाजवादी फ्रांस का सेट साइमन था। उसका मानना था कि राज्य और समाज का पुनर्गठन इस प्रकार होना चाहिए जिससे शोषण की प्रक्रिया समाप्त हो तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुसार कार्य तथा प्रत्येक को उसके कार्य के अनुसार पारिश्रमिक मिले। इसके लिए सभी लोगों को समन्वित रूप से काम करना चाहिए। उसका यह भी मानना था कि राज्य और समाज को निर्धन वर्गों के भौतिक और नैतिक उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। यह कथन समाजवाद का मूलभूत नारा बन गया। चार्ल्स फूरिए औद्योगिकीकरण का विरोधी था। वह चाहता था कि श्रमिकों को बड़े कारखानों की अपेक्षा छोटी औद्योगिक इकाइयों में काम करना चाहिए जिससे उनका शोषण नहीं हो सके। वह किसानों की स्थिति में भी सुधार लाना चाहता था। लुई ब्लाँ ने सुधारों की जो योजना प्रस्तुत की वह अधिक व्यावहारिक थी। उसका मानना था कि आर्थिक सुधारों को प्रभावशाली बनाने के लिए पहले राजनीतिक सोच और व्यवस्था में सुधार आवश्यक है। इंगलैंड में रॉबर्ट ओवेन ने समाजवादी विचारधारा का प्रचार किया। उसने श्रमिकों के लिए अनेक सुधार कार्यक्रम चलाए। उसने स्कॉटलैंड के न्यू लूनार्क में एक आदर्श कारखाना खोला और मजदूरों के लिए आवास, अच्छा भोजन, अच्छी शिक्षा और अच्छी चिकित्सा की व्यवस्था की गई। वृद्धावस्था बीमा योजना लागू की गई, उचित मजदूरी दी गई, बाल मजदूरी समाप्त की गई तथा काम के घंटे घटाए गए। उसका मानना था कि संतुष्ट श्रमिक ही वास्तविक श्रमिक है। इन समाजवादियों ने वर्गसंघर्ष के स्थान पर वर्गसमन्वय की विचारधारा पर बल दिया।

2. समाजवाद के उदय और विकास को रेखांकित करें। समाजवाद और साम्यवाद में क्या अंतर है?

उत्तर - 1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने समाज और अर्थव्यवस्था की पुनर्रचना से संबद्ध अनेक नई विचारधाराओं को जन्म दिया। इसमें समाजवादी और साम्यवादी विचारधारा भी थी। ये सामाजिक-आर्थिक बदलाव के आधार पर समाज और अर्थव्यवस्था को पुनर्सरचना करना चाहते थे। औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप समाज में पूँजीपति और श्रमिक वर्ग का उदय हुआ। दोनों वर्गों के बीच गहरी आर्थिक खाई थी। इसे पाटने के लिए कुछ चिंतकों ने ऐसी अर्थव्यवस्था के निर्माण की वकालत की जिसमें उत्पादन के साधनों और पूँजी पर राज्य का नियंत्रण हो तथा उत्पादन व्यक्तिगत लाभ के लिए न होकर संपूर्ण समाज के लिए हो। ऐसे लोग समाजवादी कहलाए। आरंभिक

PDFSARTHI.COM

समाजवादी (कार्ल मार्क्स के पहले के) 'आदर्शवादी' या स्वप्नदर्शी' कहलाए। वे वर्गसंघर्ष के स्थान पर वर्गसमन्वय की बात करते थे। ऐसे लोगों में प्रमुख में सेव साइमन, चार्ल्स फुरिए, लई ब्लों तथा रॉबर्ट ओवेन । फ्रेडरिक एंगेल्स, कार्ल मार्क्स और अन्य ने समाजवाद की नई व्याख्या प्रस्तुत की जो 'वैज्ञानिक समाजवाद अथवा साम्यवाद के नाम से जाना गया। 18वी - 20बी शताब्दियों में, विशेषकर बोल्शेवि क्रांति के बाद साम्यवाद का तेजी से प्रचार-प्रसार हुआ। समाजवादियों और साम्यवादियों में प्रमुख अंतर यह है कि जहाँ समाजवादियों ने समाज और अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन के लिए राज्य और समाज की भूमिका एवं वर्गसमन्वय की बात की, वहीं साम्यवादियों ने वर्गसंघर्ष, राज्यहीन और वर्गविहीन समाज की स्थापना पर बल दिया।

3. रूसी क्रांति के कारणों की विवेचना करें।

उत्तर - 1917 की रूस की क्रांति के पाँच कारण थे-

(i) राजनीतिक

(ii) सामाजिक

(iii) आर्थिक

(iv) धार्मिक

(v) बौद्धिक ।

(i) राजनीतिक – रोमोनोव वंश का शासक जार निकोलस द्वितीय सर्वशक्तिशाली और स्वेच्छाचारी था। प्रशासन भ्रष्टाचार व्याप्त था। सरकार की रूसीकरण की नीति ('एक जार, एक चर्च और एक रूस) से रूस में निवास करनेवाली विभिन्न प्रजातियों में असंतोष व्याप्त हुआ। अनेक विद्रोह हुए जिन्हें क्रूरतापूर्वक दबा दिया गया। बाल्कन युद्धों, क्रीमिया युद्ध और रूसी जापानी युद्ध में पराजय से जारशाही की शक्ति और प्रतिष्ठा कमजोर हो गई। प्रथम विश्वयुद्ध में पराजय तो क्रांति का तात्कालिक कारण बनी।

(ii) सामाजिक - रूस की अधिकांश जनसंख्या किसानों की थी। उनकी स्थिति दयनीय थी। 1861 में कृषिदासता समाप्त किए जाने के बाद भी उनकी स्थिति में सुधार नहीं आया । अतः, किसानों ने बार-बार विद्रोह किया और क्रांति के आधार बन गए।

PDF SARTHI.COM

(iii) आर्थिक – औद्योगिक दृष्टि से रूस एक पिछड़ा हुआ देश था। उद्योगों पर जार एवं कुलीनों का आधिपत्य था तथा राष्ट्रीय पूँजी का अभाव था। व्यापार का भी समुचित विकास नहीं हो सका । लगातार युद्धों से देश की अर्थव्यवस्था दिवालियापन के कगार पर पहुँच गई।

(iv) धार्मिक - रूस पर कट्टरपंथी ईसाई धर्म एवं चर्च का व्यापक प्रभाव था। नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता नहीं थी ।

(v) बौद्धिक - 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रूस में बौद्धिक जागरण हुआ। अनेक साहित्यकारों; जैसे – प्लेखानोव, लियो टॉल्स्टॉय, इवान तुर्गनेव, मैक्सिम गोर्की, एंटन चेखव इत्यादि ने अपने लेखों और पुस्तकों द्वारा भ्रष्ट राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्था की ओर रूसियों का ध्यान आकृष्ट कर उन्हें परिवर्तन के लिए उत्प्रेरित किया। मार्क्सवाद के बढ़ते प्रभाव से भी क्रांति की प्रेरणा मिली।

4. कार्ल मार्क्स के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डालें। अथवा, मार्क्सवादी सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - कार्ल मार्क्स (1818–83) का जन्म जर्मनी के ट्रियर नगर में एक यहूदी परिवार में हुआ था। उसने बॉन तथा बर्लिन विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण की। 1843 में उसने अपने बचपन की मित्र जेनी से विवाह किया। मार्क्स रूसो, मॉन्टेस्क्यू एवं हीगेल के विचारों से गहरे रूप से प्रभावित था। पेरिस में फ्रेडरिक एंगेल्स से भेंट होने पर वह उसके विचारों से भी प्रभावित हुआ। एंगेल्स के साथ मिलकर मार्क्स ने 1848 में कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो नामक पुस्तक प्रकाशित किया। 1867 में उसने दास कैपिटल का प्रकाशन किया। मार्क्स पूँजीवाद का विरोधी था। उसने 'दुनिया के श्रमिकों एक हो' का नारा दिया। उसने यह भी कहा कि श्रमिकों को अपनी बेड़ियों के अलावा कुछ भी नहीं खोना है। मार्क्स के क्रांतिकारी विचारों के कारण उसे जर्मनी से निष्कासित कर दिया गया। उसने अपना शेष जीवन लंदन में व्यतीत किया। मार्क्स ने समाजवाद की एक नई व्याख्या प्रस्तुत की जिसे वैज्ञानिक समाजवाद अथवा साम्यवाद कहा जाता है। मार्क्स का मानना था कि आर्थिक गतिविधियाँ ही मानवजीवन और इतिहास के स्वरूप को निर्धारित करती हैं। मानव इतिहास वर्गसंघर्ष का इतिहास है। मार्क्स के अनुसार, इतिहास के पाँच चरण हैं-

(i) आदिम साम्यवादी युग

(ii) दासता का युग

PDFSARTHI.COM

(iii) सामंती युग

(iv) पूँजीवादी युग

(v) समाजवादी युग। इतिहास का छठा चरण आनेवाला है जो वर्गविहीन और वर्गसंघर्षमुक्त साम्यवादी युग होगा। मार्क्स ने निम्नलिखित सिद्धांतों का भी प्रतिपादन किया। ये हैं-

(i) द्वंद्वात्मक भौतिकवाद

(ii) वर्गसंघर्ष

(iii) इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या

(iv) मूल्य एवं अतिरिक्त मूल्य तथा

(v) राज्यहीन एवं वर्गविहीन समाज की स्थापना का सिद्धांत।

5. लेनिन की विदेश नीति का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर - लेनिन की सरकार ने जार के समय से चली आ रही विदेश नीति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए गए-

(i) सर्वप्रथम, लेनिन ने रूस के जार अथवा केरेन्सकी सरकार द्वारा विदेशों के साथ की गई सभी गुप्त संधियों को भंग कर दिया।

(ii) अब सोवियत संघ में राष्ट्रीयता का सिद्धांत लागू किया गया। सोवियत संघ में रहनेवाली सभी पराधीन जातियों को स्वतंत्र कर उन्हें स्वायत्तता प्रदान की गई।

(iii) जर्मनी के साथ चलनेवाला युद्ध 1918 में ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि द्वारा समाप्त कर दिया गया।

(iv) लेनिन ने साम्राज्यवाद-विरोधी नीति अपनाई। उसने वैसे सभी देशों को सहायता और समर्थन का आश्वासन दिया जो उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्षरत थे। 1921 में उसने इंगलैंड के साथ एक व्यापारिक संधि की। चीन एवं अफगानिस्तान के साथ भी उसने सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए।

PDFSARTHI.COM

(v) लेनिन की एक प्रमुख उपलब्धि थी थर्ड इंटरनेशनल एवं कौमिन्टर्न की स्थापना करना । लेनिन के इस कार्य ने सोवियत संघ का कायापलट कर दिया। वह शांति और प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हुआ। 1924 तक इटली, जर्मनी और इंगलैंड ने सोवियत संघ की सरकार को मान्यता प्रदान कर दी।

6. लेनिन की नई आर्थिक नीति की विवेचना कीजिए।

उत्तर - लेनिन की नई आर्थिक नीति की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित थीं।

(i) किसानों से जबरदस्ती अनाज लेने के बदले उन्हें अनाज पर निश्चित कर देने को कहा गया।

(ii) सैद्धांतिक रूप से जमीन पर राज्य का स्वामित्व माना गया, परंतु व्यावहारिक रूप में जमीन पर किसानों को स्वामित्व दिया गया।

(iii) वैसे उद्योग जिनमें कामगारों की संख्या बीस से अधिक नहीं थी, उन्हें व्यक्तिगत स्वामित्व में चलाने का अधिकार पूँजीपतियों को दिया गया।

(iv) समुचित औद्योगिक विकास के लिए उद्योगों का विकेंद्रीकरण किया गया।

(v) औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए सीमित रूप से और निश्चित शर्तों पर विदेशी पूँजी निवेश की अनुमति दी गई।

(vi) जीवन एवं व्यक्तिगत संपत्ति की सुरक्षा के लिए राजकीय बीमा एजेंसियाँ खोली गईं।

(vii) विभिन्न स्तरों पर बैंक खोलकर बैंकिंग सेवा का विस्तार किया गया।

(viii) कामगारों के लिए ट्रेड यूनियन की अनिवार्य सदस्यता समाप्त कर दी गई। लेनिन की इस नीति की आलोचना की गई। इसे साम्यवादी सिद्धांतों और आदर्शों के प्रतिकूल माना गया, परंतु तत्कालीन परिस्थितियों में यह आवश्यक था।

1. समाजवादी भावना का उदय किस क्रांति क फलस्वरूप हुआ था?

(A)फ्रांसीसी क्रांति

(B) औद्योगिक क्रांति

PDFSARTHI.COM

(C) अमेरिकी क्रांति

(D) रूसी क्रांति

Ans – B

2. किस क्रांति के फलस्वरूप पूँजीपति वर्गों द्वारा मजदूरों का शोषण चरमोत्कर्ष पर था?

(A) अमेरिकी क्रांति

(B) फ्रांसीसी क्रांति

(C) रूसी क्रांति

(D) औद्योगिक क्रांति

Ans – B

3. किस अर्थव्यवस्था में उत्पादन के सभी साधनों कारखानों तथा विपणन में सरकार का एकाधिकार होता है?

(A) पूँजीवादी

(B) मिश्रित

(C) समाजवादी

(D) B और C दोनों

Ans – C

4. औद्योगिक क्रांति के कारण समाज का विभाजन कितने वर्गों में हो गया?

(A) एक

(B) दो

(C) तीन

PDF SARTHI.COM

(D) चार

Ans – B

5. फ्रांसीसी समाजवाद के विकास का जन्मदाता था—

(A) फुरिए

(B) राबर्ट ओवेन

(C) कार्ल मार्क्स

(D) सेंट साइमन

Ans – D

6. स्वप्नदर्शी समाज' का संस्थापक कौन था?

(A) ओवन

(B) मार्क्स

(C) एंजिल्स

(D) लेनिन

Ans – A

7. यूटोपियन समाजवादी कौन नहीं था?

(A) लुई ब्लां

(B) सेंट साइमन

(C) कार्ल मार्क्स

(D) रॉबर्ट ओवन

PDF SARTHI.COM

Ans – C

8. इंगलैंड में समाजवाद का जनक किसे माना जाता है?

(A) सेंट साइमन

(B) चार्ल्स फूरिए

(C) रॉबर्ट ओवेन

(D) लूई ब्लॉ

Ans – C

9. कार्ल मार्क्स का जन्म कहाँ हुआ था?

(A) जर्मनी

(B) इंग्लैंड

(C) फ्रांस में

(D) पोलैंड

Ans – A

10. प्रथम इंटरनेशनल की स्थापना हुई थी।

(A) रूस में

(B) फ्रांस में

(C) जर्मनी में

(D) लंदन में

Ans – D

PDF SARTHI.COM

11. साम्यवादी घोषणा-पत्र किसने प्रकाशित किया?

(A) कार्ल मार्क्स

(B) राबर्ट ओवेन

(C) सेंट साइमन

(D) मार्क्स एवं एंगेल्स

Ans – D

12. साम्यवादी घोषणा पत्र कब प्रकाशित हुआ?

(A) 1830

(B) 1883

(C) 1848

(D) 1857

Ans – C

13. 1919 ई० में तृतीय इंटरनेशनल अथवा कामिन्ट की स्थापना कहाँ हुई थी?

(A) जेनेवा

(B) मास्को

(C) पेरिस

(D)इटली

Ans – B

14. वर्ग संघर्ष के सिद्धांत की व्याख्या किसने की थी?

PDF SARTHI.COM

(A) फेड्रिक एंगेल्स

(B) रॉबर्ट ओवेन

(C) कार्ल मार्क्स

(D) इनमें कोई नहीं

Ans – C

15. कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो का प्रकाशन किस वर्ष हुआ था?

(A) 1844 में

(B) 1848 में

(C) 1864 में

(D) 1867 में

Ans – B

16. अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस किस तिथि को मनाया जाता है?

(A) 1 फरवरी को

(B) 1 मार्च को

(C) 1 अप्रैल को

(D) 1 मई को

Ans – D

17. द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय संघ (द्वितीय इंटरनेशनल) कब बना?

(A) 1848

PDF SARTHI.COM

(B) 1889

(C) 1890

(D) 1830

Ans – C

18. प्रथम अंतर्राष्ट्रीय संघ (प्रथम इंटरनेशनल) कब स्थापित हुआ?

(A) 1870

(B) 1864

(C) 1871

(D) 1890

Ans – B

19. दास कैपिटल किसकी रचना है ?

(A) कार्ल मार्क्स और एंगेल्स

(B) टॉलस्टाय और कार्ल मार्क्स

(C) एंगेल्स और टॉलस्टाय

(D) लेनिन और स्टालिन

Ans – C

20. 'कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' के लेखक थे।

(A) मैक्सिम गोर्की

(B) कार्लमार्क्स और फ्रेडरिकएंगेस

PDF SARTHI.COM

(C) कार्लमार्क्स

(D) लियो टॉल्सटॉय

Ans – B

21. किसे समाजवादियों का बाइबल कहा जाता है?

(A) अप्रैल थीसिस को

(B) सोशल कन्ट्रैक्ट को

(C) दास कैपिटल को

(D) कम्युनिस्ट ने मेनिफेस्टो को

Ans – C

22. वैज्ञानिक समाजवाद की अवधारणा का प्रतिपादन किसने किया?

(A) रॉबर्ट ओवन

(B) कार्ल मार्क्स

(C) लाला लाजपत राय

(D) लुई ब्लॉक

Ans – B

23. "दास कैपिटल" का प्रकाशन किस वर्ष हुआ था?

(A) 1848 में

(B) 1864 में

(C) 1867 में

PDF SARTHI.COM

(D) 1883 में

Ans – C

24. समाजवादियों की बाइबिल किसे कहा जाता है?

(A) सोशल कांट्रैक्ट

(B) दास कैपिटल

(C) अप्रैल थीसिस

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – B

25. 'वार एंड पीस' किसकी रचना है?

(A) कार्ल मार्क्स

(B) लियो टॉलस्टॉय

(C) दोस्तोयेव्स्की

(D) ऐंजल्स

Ans – B

26. रूस की संसद को क्या कहा जाता है ?

(A) पार्लियामेंट

(B) संसद

(C) ड्यूमा

(D) इनमें से कोई नहीं

PDF SARTHI.COM

Ans – C

27. खूनी रविवार किस तिथि को तथा किस वर्ष हुआ था?

(A) 3 जनवरी, 1905 में

(B) 9 जनवरी, 1905 में

(C) 6 जनवरी, 1905 में

(D) 8 जनवरी, 1905 में

Ans –B

28. रासपुटिन कौन था?

(A) समाज सुधारक

(B) भ्रष्ट पादरी

(C) दार्शनिक

(D) वैज्ञानिक

Ans – B

29. रूस का पहला समाजवादी था—

(A) लेनिन

(B) टॉलस्टाय

(C) प्लेखानोव

(D) स्टालिन

Ans – C

PDF SARTHI.COM

30. 1917 की रूसी क्रांति के समय किस जार का शासन था ?

(A) पीटर

(B) एलेक्जेंडर प्रथम

(C) निकोलस प्रथम

(D) निकोलस द्वितीय

Ans – D

31. निहलिस्ट आंदोलन कहाँ शुरू हुआ था?

(A) रूस

(B) जापान

(C) टॉलैंट

(D) इंगलैंड

Ans – A

32. रूस में सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना कब हुई?

(A) 1961

(B) 1917

(C) 1883

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – C

33. बोल्शेविक क्रांति कब हुई?

PDFSARTHI.COM

(A) फरवरी, 1917

(B) नवम्बर, 1917

(C) अप्रैल, 1918

(D) दिसम्बर, 1918

Ans – B

34. रूस में कृषक दास प्रथा का अंत कब हुआ?

(A) 1861

(B) 1862

(C) 1860

(D) 870

Ans – A

35. रूस में निहिलिस्टों ने सुधार के लिए कौन-सा मार्ग अपनाया?

(A) वार्ता का

(B) हड़ताल का

(C) विद्रोह का

(D) आतंक का

Ans – D

36. रूस में जार का अर्थ क्या होता था?

(A) पीने का बर्तन

PDF SARTHI.COM

(B) पानी रखने का मिट्टी का पात्र

(C) रूस का सामंत

(D) रूस का सम्राट

Ans – D

37. रूस में कृषि दासता किसने समाप्त की?

(A) जार॰ निकोलस |

(B) जार॰ निकोलस ||

(C) जार॰ एलेक्जेंडर प्रथम

(D) जार॰ एलेक्जेंडर द्वितीय

Ans – D

38. 1917 की पहली रूसी क्रांति किस नाम से जानी जाती है?

(A) फरवरी क्रांति

(B) अप्रैल क्रांति

(C) अक्टूबर क्रांति

(D) नवम्बर क्रांति

Ans – A

39. लेनिन ने ब्रेस्ट लिटोव्स्क की संधि (1918) किस राष्ट्र के साथ की थी?

(A) इंगलैंड

(B) फ्रांस

PDF SARTHI.COM

(C) जर्मनी

(D) इटली

Ans – C

40. 'अप्रैल थीसिस' किसने तैयार की?

(A) लेनिन

(B) ट्राटस्की

(C) स्टालिन

(D) मार्क्स

Ans – A

41. लाल सेना का गठन किसने किया था?

(A) कार्ल मार्क्स

(B) स्टालिन

(C) ट्रॉटस्की

(D) केरेंसकी

Ans – C

42. ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि किन देशों के बीच हुआ था?

(A) रूस और इटली

(B) रूस और फ्रांस

(C) रूस और इंगलैंड

PDF SARTHI.COM

(D) रूस और जर्मनी

Ans – D

43. कौमिंटर्न की स्थापना का उद्देश्य क्या था?

(A) सैन्यवाद का प्रचार करना

(B) साम्यवाद का प्रचार करना

(C) पूँजीवाद का प्रचार करना

(D) समाजवाद का प्रचार करना

Ans – B

44. 'काम के अधिकार' को संवैधानिक अधिकार का रूप सबसे पहले कहाँ मिला?

(A) सोवियत संघ

(B) जर्मनी

(C) इंगलैंड

(D) फ्रांस

Ans – A

45. 1917 की बोल्शेविक क्रांति का नेतृत्व किसने किया था?

(A) स्टालिन

(B) लेनिन

(C) ट्राटस्की

(D) खुश्चेव

PDF SARTHI.COM

Ans – B

46. चेका क्या था?

(A) सेना की टुकड़ी

(B) पुलिस दस्ता

(C) पादरी वर्ग

(D) श्रमिक वर्ग

Ans – B

47. भूमि, शांति और रोटी ये तीन नारे किसने दिए?

(A) लेनिन ने

(B) ट्रॉटस्की ने

(C) स्टालिन ने

(D) कार्लमार्क्स ने

Ans – A

48. साम्यवादी शासन का पहला प्रयोग कहाँ हुआ था

(A) रूस

(B) जापान

(C) चीन

(D) क्यूबा

Ans – A

PDF SARTHI.COM

49. रूस की बोल्शेविक क्रांति का नेतृत्व किसन किया?

(A) केरेन्सकी

(B) ट्रॉटस्की

(C) लेनिन

(D) स्टालिन

Ans – C

50. नई आर्थिक नीति (NEP) का जन्मदाता था—

(A) कार्ल मार्क्स

(B) स्टालिन

(C) लेनिन

(D) ट्रॉटस्की

Ans – C

51. लेनिन ने नई आर्थिक नीति (NEP) की घोषणा कब की ?

(A) 1921

(B) 1922

(C) 1923

(D) 1924

Ans – A

52. लेनिन की मृत्यु कब हुई?

PDF SARTHI.COM

(A) 1921

(B) 1922

(C) 1923

(D) 1924

Ans – D

53. सोवियत संघ का विघटन किस वर्ष हुआ?

(A) 1991 मे

(B) 1985 में

(C) 1964 में

(D) 1952 में

Ans – A

PDF SARTHI.COM

3. हिन्दी – चीन में राष्ट्रवादी आंदोलन

Q. हिन्द चीन का क्या अर्थ है ?

उत्तर - हिन्द-चीन का तात्पर्य लाओस, वियतनाम और कंबोडिया के सम्मलित क्षेत्र से है, जिसका विस्तार लगभग 3 लाख वर्ग कि०मी० में है।

• वियतनाम, लाओस और कम्बोडिया के सम्मलित क्षेत्र को ही हिन्द-चीन या इंडो चाईना कहा जाता है।

★ **वियतनाम -** कोंचीन-चीन अन्नाम (चंपा) + तोंकीन

• दक्षिण पूर्व एशिया में स्थित था।

• इसका क्षेत्रफल 2.8 लाख वर्ग कि०मी०

• फ्रांस का उपनिवेश

• 1945 में वियतनाम आजाद हुआ।

• हो-ची मिन्ह की अध्यक्षता मे एक लोकतांत्रिक राज्य बना।

• आजाद होने के बाद वियतनाम 2 भागों में बंट गया।

1. उत्तरी वियतनाम

2. दक्षिणी वियतनाम

★ अंततः उत्तरी वियतनाम और दक्षिणी वियतनाम में गृह युद्ध छिड़ गया। और इस युद्ध में अमेरिका दक्षिणी वियतनाम का साथ देने लगा। यह लड़ाई काफी लंबा चला और अमेरिका को पीछे हटना पड़ा और 30 अप्रैल 1975 को वियतनाम का एकीकरण पुरा हुआ।

PDFSARTHI.COM

• वियतनाम पर चीन का प्रभाव था, लेकिन लाओस और कम्बोडिया पर भारत का प्रभाव था।

वियतनाम - कोचीन-चीन + अन्नाम (चंपा) + तोंकीन

अन्नाम - अन्नाम का दुसरा नाम चंपा था जो लगभग 200 ई० में बना था। जिसे एक मुस्लिम आक्रमणकारी (कुबलई खान) ने चंपा शहर को समाप्त कर दिया।

कम्बोडिया - कम्बोडिया में सूर्यदेववर्मन ने भगवन विष्णु का एक भव्य मंदिर का निर्माण कराया था जिसे अंकोरवाट का मंदिर कहते है।

★ हिन्द-चीन में फ्रांसीसी का उपनिवेशवाद –

Q. हिन्द -चीन में फ्रांसीसी का प्रसार कैसे हुआ ?

उत्तर - हिन्द-चीन का निर्माण हिन्द देशो से मिलकर किया जाता है। जिसका नाम लाओस वियतनाम और कंबोडिया है। 17वीं शताब्दी में बहुत सारे पादरी और व्यापारी हिन्द-चीन में आकर बस गये और कोचीन-चीन के राजा का इस्तेमाल कर 18वीं शताब्दी तक फ्रांसिसियों ने सम्पुर्ण क्षेत्रों पर धीरे-धीरे उपनिवेशवाद और सम्राज्यवादी प्रतियोगता के आधार पर कब्जा करने लगा। इसने प्रारंभ मे कुछ अच्छा काम किया लेकिन बाद में सारा सभ्यता संस्कृति धर्म, भाषा तथा शिक्षा फ्रांसिसी अपनाने को कहा और इस प्रकार से इसका आगमन हो जाता है। और 1787 ई० से फ्रांसीसीयों ने कब्जा करना शुरू कर दिया और लगभग 1887 ई० में फ्रेंच-इंडो-चाइना के स्थापना के साथ-साथ पुरे हिन्द-चीन पर अपना कब्जा जमा लिया।

★ हिन्द-चीन में फ्रांसीसी उपनिवेशवाद का कारण

1. आर्थिक कारण : हिन्दचीन मे अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि तथा बगान था। जिसमें प्रचुर मात्रा में धान और रबड़ की खेती होती थी। इसके अलावा खनिज सम्पदा जैसे टीन, टंगस्टन,

PDFSARTHI.COM

कोयला, जस्ता से भी परिपूर्ण था। इन सभी वस्तुओ पर अधिकार का अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत किया।

2. बर्बर / असभ्यों को सभ्य बनाने की नीती- फ्रांसीसियों को ऐसा लगता था उनके पास बहुत ज्यादा दिमाग है और बाकी हिन्द-चीन के सभी लोग अकलमंद है। और भगवन ने हमें सभी को सभ्य बनाने के लिए भेजा है। अतः फ्रांसीसी लोगों ने हिन्द चीन की निष्क्रीयता को हटाने का प्रयास किया तथा लोगों को सिमित मात्रा मे शिक्षित किया। साथ ही साथ समाजिक और धार्मिक परम्परा के अनुसार सुधारवादी साबित किया।

3. व्यापारिक सुरक्षा :- व्यापार के दृष्टीकोण से फ्रांसीसियों को हिन्द-चीन बहुत सुरक्षित स्थान लगता था। व्यापार करने के दृष्टिकोण से सबसे पहले पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी, बिट्रीश और स्पेन आया था। इसमें सबसे ज्यादा प्रसार फ्रांसीसी ने किया। इसका विदेय डच और बिट्रिश मिलकर करता है। जिससे उसका व्यापार ठप हो जाता है। और इसके बाद फ्रांसीसी लोग हिन्द-चीन पर अपना ध्यान केंद्रित कर लिए और अधिकार करना शुरू कर दिया।

4. कच्चे माल की आपूर्ति :- वियतनाम फ्रांस के लिए कच्चे माल का आधार और बिक्री बाजार का उपनिवेश बन गया था।

★ हिन्द-चीन में प्रशासनिक व्यवस्था –

Q. हिन्द-चीन में प्रशासनिक व्यवस्था कैसा था ।

उत्तर - हिन्द-चीन में फ्रांसीसीयों के कब्जा के बाद कोचीन-चीन पर फ्रांस का प्रत्यक्ष सरकार बना। और बाकी सभी जगह पर अप्रत्यक्ष सरकार बना।

★ औपनिवेशिक आर्थिक निति

PDF SARTHI.COM

1. पॉल बर्नाड की निति - लेखक तथा नीति-निर्माता था जिसने फ्रांसीसी उपनिवेशों को विकसित करने का प्रारूप प्रस्तावित किया उसका कहना था कि उपनिवेश लाभ कमाने के लिए बनाए जाते हैं। यदि उपनिवेश बनाए जाते हैं और लोगों के प्रति व्यक्ति आय उच्च होती है तो इससे उनकी क्रय-शक्ति बढ़ेगी और वे और अधिक वस्तुएँ खरीद सकेंगे। परिणामस्वरूप बाजार को विस्तार मिलेगा जिससे फ्रांसीसी व्यवसाय को बेहतर लाभ मिलेगा।

2. जमींदारी प्रथा - जिसमें भूमि का स्वामित्व उस पर काम करने वालों का न होकर किसी और (जमींदार) का होता था जो खेती करने वालों से कर वसूलते थे। जमींदारी प्रथा 1793 मै लॉर्ड कार्नवालिस ने चलाई थी। इसके अन्तर्गत ब्रिटिश सरकार द्वारा लोगो पर लगान वसूल करने के लिए जमीदार को नियुक्त किया जाता है।

Q. एकतरफा अनुबंध से आप क्या समझते है ?

उत्तर - यह भी एक प्रकार का बंधुआ मजदूर होता है। जिसमे फ्रांसीसी सरकार ने वियतनाम के मजदूरो के रबड़ की खेती तथा खाद्यानो मे काम करने के लिए मजबूर कर देता था और काम न करने पर उसे पिट-पिट कर जेल में बंद कर देता था।

इसमे मजदूरो को कोई अधिकार नही दिया गया। जबकि मालिक को भरपूर अधिकार दिया गया ।

Q. बंधुआ मजदूर किसे कहते है ?

उत्तर - वह व्यक्ति जो अपना ऋण चुकाने के लिए ऋणदाता के यहाँ काम करते है। जिसे बंधुआ मजदूर / बंधक मजदूर कहा जाता है। इसे बंधक मजदूरी बहुत कम कहा जाता है। इसे मजदूरी बहुत कम दिया जाता है। जिससे उसका भरण- पोषण सही ढंग से नही हो पाता है। प्राचीन काल मे इस प्रथा का प्रचलन युनान से था।

PDFSARTHI.COM

★ संरचनात्मक विकाश और औपनिवेशिक शिक्षा निति –

संरचनात्मक विकाश - फ्रांसीसियों ने पुरे हिन्द-चीन में सड़क और रेलवे का जाल बिछवाया जिससे पुरे हिन्द-चीन पर नियंत्रण रखा जा सके और व्यापार के रास्ते सुगम हो जाए।

औपनिवेशिक शिक्षा निति –

- फ्रांसीसियों ने (कोलोन) वियतनाम के लोगों को सिमित मात्रा मे शिक्षित किया।
- हिन्द-चीन के स्कूलों में पढने वाले सभी बच्चों को वियतनामी और फ्रांसीसी दोनों भाषा में शिक्षा दिया जाने लगा।
- फ्रांसीसियों ने अपने अनुसार किताब छपवाये जिसमें फ्रांसीसियों के बारे में अच्छी बातें और वियतनाम के बारे नकारात्मक बातें लिखी थी।
- अपने अनुसार शिक्षकों को पढाई के लिए नियुक्त किया।
- लोगों को यह पढाया जाने लगा की फ्रांसीसी धर्म (इसाई धर्म) और रीती-रिवाज वियतनाम के धर्म और रीती- रिवाज से बहुत अच्छा है।
- टोंकिन फ्री स्कूल की स्थापना करना

इस शिक्षा निति का विरोध सबसे पहले " साईबौन के गर्ल्स नेटिव स्कूल " में युवाओं ने शुरू किया।

★ टोंकिन फ्री स्कुल –

Q. वियतनाम टोंकिन फ्री स्कुल की स्थापना का क्या राज है।

उत्तर - वियतनाम में टोंकिन फ्री स्कुल की स्थापना 1907 मे किया गया था। इसमें यूरोपीय लोगो का कहना था कि खुन और रंग के आधार पर भले ही वियतनामी हो परंतु आचरण और व्यवहार से

PDF SARTHI.COM

नही। चुकि वियतनामी लोग फ्रांसीसी, धर्म, भाव, शिक्षा, रिती रिवाज सब अपना संस्कृति मे अवगत कराया। लंबे लंबे बाल के स्थान पर छोटा इसका विरोध वियतनाम के लोगों ने जम कर किया, और स्कॉलर्स रिवॉल्ट की घटना हुई।

Q. स्कॉलर्स रिवॉल्ट क्या है?

उत्तर - 1868 ई० में फ्रांसीसीयों के द्वारा इसाई धर्म का जोर शोर एवं उग्र तरीके से प्रसार-प्रसार किया जा रहा था। जिनके विरोध मे वियतनामी लोगो ने खास कर नुयेन और हातियेन्ह लोगों ने इसाईयों को हजारों हजार की संख्या मे मौत के घाट उतार दिया। इस घटना को ही स्कॉलर्स रिवॉल्ट कहा जाता है। नुयेन और हातियेन्ह को वियतनाम की लपलपाती तलवार भी कहा जाता है

Q. होआ - हाओ अंदोलन क्या है ?

उत्तर - यह एक प्रकार का क्रांतिकारी धार्मिक अंदोलन था। जिसकी शुरूआत 1939 ई० मे हुइन-फू-सो (समाज सुधारक) ने की। सबसे पहले मेकॉन डेल्टा नामक जगह से इसकी शुरुआत हुई । इसका उद्देश्य

1. गरीबो को सहायता करना

2. व्यर्थ खर्च पर रोक

3. लड़की को क्रय-विक्रय पर विरोध

★ आधुनिकीकरण और राष्ट्रवाद

फान बोई चाउ :- फ्रांसीसियों के बढ़ते उग्र रवैये के कारण हिन्द-चीन के लोगों में राष्ट्रवाद की भावना पनप रही थी। और वे फ्रांसीसियों को किसी भी कीमत पर यहाँ से भगाना चाहते थे। शुरुआत के दिनों में वियतनाम के दो बड़े-बड़े राष्ट्रवादी (फान बोई चाउ और फान-चु-त्रिन्ह) फ्रांसीसियों के ईस रवैये से तंग आकर सन् 1903 ई० में फान बोई चाउ ने रिवोल्यूशनरी सोसाइटी का गठन किया। और

PDF SARTHI.COM

कुआंग दे को ईस सोसाइटी का अध्यक्ष बनाया। फान बोई चाउ पर चीनी सुधारक लियांग किचाऊ का बहुत प्रभाव था। और लियांग किचाऊ के कहने पर ही फान बोई चाउ ने "द हिस्ट्री ऑफ द लॉस ऑफ वियतनाम" नामक किताब की रचना की।

★ पूर्व की ओर चलो आन्दोलन

- वियतनाम में युवा वर्ग के लोग क्रांतिकारी गतिविधियों में संलिप्त होने के लिए और फ्रांसीसियों के अत्याचार से बचने के लिए जापान और चीन के इलाकों में जाकर शरण लेते थे। और वहीं से शिक्षा ग्रहण कर क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम देते थे। चुकी चीन और जापान दोनों ही वियतनाम के पूर्व में था, और लोगों ने चीन और जापान जाने के लिए एक आन्दोलन जैसा माहौल खड़ा कर दिया। इसी को पूर्व की और चलो आन्दोलन के नाम से जाना जाता है।

★ वियतनाम में साम्यवाद और राष्ट्रवाद

• शुरूआती दिनों में वियतनाम में जो भी क्रांतिकारी गतिविधि चल रही थी वो सब शांतिपूर्ण तरीके से चल रही थी। और इस वजह से फ्रांसीसियों पर इसका कोई प्रभाव नही पड़ रहा था। फलतः वियतनाम के राष्ट्रवादियों ने अपनी निति बदली और साम्यवाद की ओर अग्रसर हो गये। और वियतनामियों को साम्यवाद की ओर लेकर जाने वाले जो नेता थे, उनका नाम था हो-चि-मिन्ह ।

Q. हो- चि मिन्ह का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर - हो- चि मिन्ह का जन्म 1890 ई० में मध्य वियतनाम के क्षेत्र में एक गरीब किसान परिवार मे हुआ था। इनका बचपन का नाम ड्युएन शिन्ह कुंग था।

इन्हे अंकल हो भी कहा जाता है। ये मार्क्स वादी विचारधारा से प्रभावित थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा फ्रांसीसी स्कुल मे हुआ था। 1910 ई० मे शैक्षिणक विभाग मे भाग लिया। किंतु घर की आर्थिक

PDFSARTHI.COM

स्थिती दैनिय होने के कारण कुछ वर्षों तक बच्चो को पढ़ाने का कार्य किया। साथ ही जहाज चलाने का नौकरी किया। ये अच्छा शिक्षण ग्रहण के लिए रूस की राजधानी मास्को गए और वहाँ कुछ साम्यवादी नेताओं से इनका मुलाकात हुआ और इन्होने 1917 में साम्यवादी गुट का गठन किया और इससे प्रभावति होकर 1925 ई० में क्रांतिकारी वियतनामी दल का गठन किया और तमाम जनता को जागरूक किया और साथ ही साथ 1930 ई० में वियतनाम कम्युनिस्ट पार्टी का गठन किया। बाद में इस पार्टी का नाम बदलकर इंडो-चाईनिज कम्युनिस्ट पार्टी का किया गया । और इस प्रकार वियतनाम 1945 ई० में फ्रांस से मुक्त हो गया। इनके काल में आर्थिक विकास चरम सीमा पर पहुँच गई और अंत में हो- ची मिन्ह की मौत 1969 BOA ई० में हो जाती है।

Q. हिन्द चीन में राष्ट्रवाद विकास के कारणो का वर्णन करे।

उत्तर - हिन्द चीन मे राष्ट्रवाद के विकास की भावना 20वीं शताब्दी से झलक दिखाई देने लगा। इसके कई प्रमुख कारण है-

1. औपनिवेशिक शोसन: फ्रांसीसी सरकार द्वारा हिन्द चीन का जमकर शोसन किया जा रहा था। इस बात से राष्ट्रवादी विचारधारा और राष्ट्रीय चेतना का विकास किया। इसमें संस्था और छात्रो का आंदोलन सक्रीय रहा।

2. औपनिवेशिक धार्मिक निती: फ्रांसीसी हिन्द-चीन के क्षेत्रो मे रहने वाले लोगो के जीवन मे परिवर्तन लाना चाहते थे। जिसका केन्द्र बिन्दु इसाई धर्म को अपनाना था। अतः इस धर्म से जनता मे असंतोष फैल गई और अपनी राष्ट्र भावना का विकास किया।

3. विश्व घटना का प्रभाव: विश्व की कई प्रमुख घटना ने राष्ट्रवाद के विकास में सहायक साबित हुआ। जैसे - 1905 ई० मे रूस - जापान युद्ध हुआ था। जिससे रूस की बुरी तरह हार हो गई 1911 ई० में चीनी क्रांति हुआ था। जिसके नेता डा० सन्यात सेन थे। 1914 ई० में प्रथम विश्व युद्ध, 1929 मे

PDFSARTHI.COM

आर्थिक संकट तथा 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध । इन सभी घटनाओ से प्रेरणा लेकर हिन्द - चीन में राष्ट्रवाद का विकास किया। और अंततः 1945 में वियतनाम आजाद हो गया।

Q. हनोई समझौता क्या है ?

उत्तर वियतनाम और फ्रांस के बीच 1946 ई० मे एक समझौता हुआ जिसे हनोई समझौता के नाम से जाना जाता है। इस समझौते के अनुसार फ्रांस ने वियतनाम को एक स्वतंत्र गणराज्य के रूप में स्वीकार कर लिया था।

आजादी और गृह युद्ध

दिएन – विएन – फु – युद्ध - यह युद्ध 7 मई 1954 को हुआ जो वियतनाम के लिए एक निर्णायक युद्ध साबित हुआ । इस युद्ध में फ्रांसीसियों की बुरी तरह से हार हुई और इस युद्ध में यह फैसला लिया गया की अब फ्रांसीसी लोग वियतनाम में नही रहेंगे।

Q. जेनेवा समझौता से आप क्या समझते है ?

उत्तर - हिन्द चीन की वार्ता की समस्या को लेकर 1954 में एक समझौता हुआ। जिसे जेनेवा समझौता के नाम से जाना जाता है। इस समझौता में वियतनाम दो भागों मे बॅट गया।

उत्तरी वियतनाम का नेता:- हो-ची-मिन्ह

दक्षिणी वियतनाम का नेता:- बाओदाई

विभाजन के बाद वियतनाम युद्ध का स्थल बनकर रह गया। चारो ओर तबाही मच गई।

★ अमेरिका का हिन्द चीन मे प्रवेश –

Q. अमेरिका हिन्द चीन मे कैसे प्रवेश किया।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - जेनेवा समझौता के तहत पूरा वियतनाम दो भागों मे बॅट गया। जिसमें हो-ची- मिन्ह ने संभाला था। इसका समर्थन रूस और चीन ने (1980) मे किया था। जबकि दक्षिणी वियतनाम का बागडोर बाओदाई ने संभाला था। इसका समर्थन अमेरिका तथा फ्रांस ने किया। अमेरिका हिन्द चीन में साम्यवाद का विस्तार नही चाहता था। इसने साम्यवाद को कुचलते हुए हिन्द चीन में प्रवेश कर गया।

★ **वियतनाम में गृह युद्ध –**

1954 ई० में जेनेवा समझौता के बाद दक्षिणी वियतनाम पर बाओदाई राज्य कर रहा था, लेकिन सन् 1955 ई० में अमेरिका के सपोर्ट से नगों-दिन्ह-दिएन ने बाओदाई को हटाकर खुद राजा बन गया। जो एक स्वेच्छाचारी राजा था। इसने कुछ कानून बनाये जो जनहित में नही था। अतः 1963 आते-आते पूरा वियतनाम अशांत हो गया। और गृह युद्ध का दौर शुरू हो गया तथा अमेरिका खुल कर के सपोर्ट में उतर गया।

Q. रासायनिक हथियार, ऐंजेट अरिंज और नापाम बम की व्याख्या करे।

उत्तर - अगस्त 1964 ई० में अमेरिका के द्वारा उत्तरी वियतनाम के लोगो के ऊपर अनेक प्रकार का असूत्र शस्त्र के प्रयोग किया जा रहा था। जैसे गोला, बारूद, बम वर्षक विमान, टैंक इत्यादि। इसके अलावा रसायनिक पद्वार्थो का भी छिड़काव किया गया था। जो अत्यंत घातक एवं पर्यावरण के लिए घातक थे। जैसे-

1. नापाक बम :- नापाम बम रासायनिक हथियार था जो एक तरह का ऑर्गेनिक कंपाउंड है। यह अग्नि बमों में गैसोलीन के साथ मिलाकर एक ऐसा मिश्रण तैयार करता था जो त्वचा से चिपक जाता था।

2. ऐंजेट ऑरेंज : एक ऐसा जहर था जिससे पौधों की पत्तियां झुलस जाती थी एवं पेड़ मर जाते थे। अमेरिका इनका इस्तेमाल जंगलों के साथ खेती और आबादी दोनों पर जमकर किया। यह काफी

PDF SARTHI.COM

जहरीला था। ऐसा माना जाता है कि 1.1 करोड़ गैलन का छिड़काव किया गया था। जिससे फसल के साथ साथ जंगल भी जलकर राख हो गए। **ऐसा कहा जाता ही की अमेरिका एक युद्ध में लगभग 2 से 2.5 अरब डॉलर खर्च किया था।** इसमे डाइऑक्सीजन पद्वार्थ का प्रयोग किया गया था। जो शरीर में कैंसर रोग उत्पन्न करता है। इसके प्रभाव के कारण कई वर्षों तक वियतनाम में जन्म लेने वाला बच्चा विकलांग पैदा होने लगा।

Q. हो- चि मिन्ह मार्ग से आप क्या समझते है ?

उत्तर - यह मार्ग उत्तरी वियतनाम के लोगों ने बनाया था, जिसे भूलभुलैया भी कहा जाता था। यह मार्ग हनोई से चलकर लाओस कंबोडिया होते हुए वियतनाम तक जाता है जिससे 100 से अधिक कच्ची पक्की सड़के मिलती है। इसी सड़क के माध्यम से लोग आयात-निर्यात करते थे और अपने सैनिकों के पास हथियार और खाना ले जाते थे। लेकिन अमेरिका के द्वारा सड़को पर बम गिराकर मार्ग को नष्ट कर दिया। परंतु उतना ही जल्दी वियतनाम के लोग खास कर महिलाएं आपस मे मिलकर सड़कों का मरम्त कर देते थे ताकि व्यापार और आवागमन बाधित न हो। इसमें अमेरिका को असफलता हुआ था।

★ युद्ध में महिलाओं का योगदान –

अमेरिकी - वियतनामी युद्ध में महिलाओं का योगदान बहुत सराहनिये है। इस युद्ध में उत्तरी वियतनाम के महिलाओं ने पुरुषो के साथ कंधा से कंधा मिलकर युद्ध में हिस्सा लिया।

1. सामान को एक जगह से दुसरे जगह ले जाने के लिए कुली के रूप में कार्य किया। 2. घायल सैनिकों के देख-रेख के लिए नर्सों के रूप में भी कार्य किया।

3. सभी सैनिकों को समय पर खाना पहुचाने का कार्य किया।

4. सैनिकों के लिए बंकर बनाने का कार्य किया।

PDF SARTHI.COM

Q. माइली गाँव की घटना से आप क्या समझते है ?

उत्तर - यह घटना 1968 ई० में घटा था। जिसमे अमेरिका के सैनिक के द्वारा दक्षिणी वियतनाम में माइली गाँव को चारो ओर से घेर कर पुरुषों को बंदी बनाकर पिट-पिट कर उसकी हत्या कर दी। साथ ही महिलाओं और बालिकाओं के बंधक बनाकर कई दिनों तक सामुहिम बलत्कार किया। 12 वर्ष की बालिका और 10 घंटे पहले जन्म देने वाली महिलायों को भी गोली मार दी जाती है। इसके बाद उस गाँव में आग लगा दी। इस सनसनीखेज खबर को एक बुढ़ा व्यक्ति के द्वारा सभी को बताया जाता है। अतः इस घटना को ही माइली गाँव की घटना कहा जाता है।

Q. राष्ट्रपति निक्सन के हिन्द चीन में शांति के संबंध में पाँच सुत्री योजना क्या थी ? इससे क्या प्रभाव पड़ा।

उत्तर - माइली गाँव की घटना 1968 ई० में घटा था जो एक सनसनी भरी खबर थी। इसके कारण अमेरिका के आँखों मे किरकिरी छा गई और वह शर्म मे मारे लज्जित हो गया। अमेरिकी जनता भी हजारों सैनिकों के बलिदान एवं अरबों डॉलर की बर्बादी का विरोध करने लगी जिससे अमेरिका पर निरंतर दबाव बढ़ने लगा। अमेरिका के समक्ष आर्थिक संकट एवं सैनिक मनोबल के ह्रास की स्थिति उत्पन्न हो गयी। विश्व के कोने कोने में इसकी बहुत आलोचना होने लगी। इस बात को लेकर निक्सन की पाँच सुत्री योजना इस प्रकार से प्रस्तुत की जाती है:

1. हिन्द चीन की सभी सेनाए युद्ध बंद करो।

2. युद्ध विराम के दौरान सभी प्रकार की लड़ाई बंद करो।

3. युद्ध विराम के दौरान कोई भी देश अपनी शक्ति का विस्तार नही करेगा।

4. युद्ध विराम का अंतिम लक्ष्य शांति स्थापित करना होगा।

PDF SARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

5. युद्ध विराम की देख भाल प्रयवेक्षक करेंगे। **इसका प्रभाव असफल रहा।**

★ राष्ट्रपति निक्सन के आठ-सूत्री प्रस्ताव

- पाँच-सूत्री योजना के विफल हो जाने के बाद सन् 1972 ई० में राष्ट्रपति ने पुनः आठ-सूत्री प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इसका भी उद्देश्य हिंदचीन (Indochina) के संघर्ष को समाप्त करना था। प्रस्ताव के महत्त्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार थे-

1. समझौता होने के छह महीनों के अंदर दक्षिणी वियतनाम से अमेरिकी और अन्य विदेशी सैनिकों को वापस बुला लिया जाएगा।

2. सेना की वापसी के बाद बंदी नागरिकों और सैनिकों को स्वतंत्र कर दिया जाएगा। 3. छह महीनों के अंदर दक्षिण वियतनाम में राष्ट्रपति के लिए चुनाव करवाए जाएंगे । यह चुनाव अंतरराष्ट्रीय निरीक्षण में करवाया जाएगा।

4. सभी पक्ष जेनेवा समझौता की शर्तों का पालन करेंगे।

5. हिंदचीन के सभी देश अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकेंगे।

6. हिंदचीन में युद्ध-विराम लागू होगा तथा कोई भी विदेशी सेना हिंदचीन में प्रवेश नहीं कर सकेगी।

7. समझौते के सैनिक पक्ष की देखभाल एक अंतरराष्ट्रीय संस्था करेगी।

8. हिंदचीन के नागरिकों के मौलिक अधिकारों की सुरक्षा एक अंतरराष्ट्रीय संस्था करेगी। साथ ही, यही संस्था दोनों वियतनाम, लाओस और कंबोडिया की स्थिति निर्धारित करेगी। निक्सन का यह प्रस्ताव भी विफल हो गया। उत्तरी वियतनाम ने इस प्रस्ताव को भी अस्वीकृत कर दिया।

Short Answer Type Question

इंडो-चाइना (हिंदचीन) में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद

PDFSARTHI.COM

1. 'एकतरफा अनुबंध व्यवस्था' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - उत्पादकता बढ़ाने के लिए फ्रांसीसी सरकार वियतनामी मजदूरों से बागानों, फार्मों एवं खदानों में 'एकतरफा अनुबंध व्यवस्था' के अंतर्गत काम करवाती थी। यह अनुबंध मालिकों और मजदूरों के बीच होता था। अनुबंध में सभी अधिकार मालिकों के हाथों में सुरक्षित थे, श्रमिकों को कोई अधिकार नहीं दिया गया। काम पूरा नहीं करने पर मालिक मजदूरों को दंडित कर सकते थे एवं जेल भेज सकते थे। उनकी स्थिति गुलामों के समान थी।

2. 'स्कॉलर्स रिवोल्ट' पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर - 1868 में वियतनाम में ईसाई धर्म के बढ़ते प्रभाव और फ्रांसीसी आधिपत्य के विरुद्ध एक सशक्त आंदोलन हुआ । इस आंदोलन को राजदरबार के अधिकारियों ने चलाया। विद्रोहियों ने हजारों ईसाइयों को मार डाला। यद्यपि यह विद्रोह क्रूरतापूर्वक दबा दिया गया, परंतु इससे राष्ट्रवादी भावना का विकास हुआ।

3. होआ हाओ आंदोलन के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर - यह आंदोलन उपनिवेशवाद-विरोधी था। यह आंदोलन 1939 में वियतनाम में आरंभ हुआ। इसका प्रभाव सबसे अधिक मेकोंग डेल्टा में था। इस आंदोलन को आरंभ करनेवाला हुइन्ह फू सो था। वह लौकिक शक्तियों में विश्वास रखता था तथा समाज- सुधारक था। यह आंदोलन राष्ट्रवाद की मुख्यधारा से जुड़कर उपनिवेशवाद-विरोधी बन गया। हुइन्ह फू सो के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए सरकार ने कठोर कार्रवाई की।

4. फान बोई चाऊ पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर - फान बोई चाऊ वियतनाम के महान राष्ट्रवादी थे। वे फ्रांसीसी सत्ता के विरोधी थे। इसे समाप्त करने के लिए उन्होंने आंदोलन चलाया। 1903 में उन्होंने दुई तान होई नामक क्रांतिकारी संगठन बनाया। इस दल ने उपनिवेशवाद-विरोधी आंदोलन चलाया। उन्होंने दि हिस्ट्री ऑफ दि लॉस ऑफ वियतनाम नामक पुस्तक लिखकर जनमानस को झकझोर दिया। वियतनाम की स्वतंत्रता के लिए वे राजशाही का समर्थन और सहयोग लेने के हिमायती थे।

5. हो ची मिन्ह का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - हो ची मिन्ह (1890-1969) वियतनाम के प्रमुख राष्ट्रवादी नेता थे। उनके नेतृत्व में वियतनाम ने फ्रांसीसी आधिपत्य से मुक्ति पाने के लिए लंबा संघर्ष किया। वे आरंभ से ही साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित थे। उन्होंने वियतनामी कम्युनिस्ट पार्टी (वियतनाम काँग सेन देंग) तथा लीग फॉर दि इंडिपेंडेंस ऑफ वियतनाम (वियतमिन्ह) की स्थापना कर स्वतंत्रता आंदोलन चलाया। द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान के आत्मसमर्पण के बाद उन्होंने 1945 में वियतनाम लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना की एवं इसके अध्यक्ष बने। हनोई समझौता के अनुसार वियतनाम को गणराज्य का दर्जा मिल गया। बाद में वियतनाम में गृहयुद्ध छिड़ने के बाद भी वे अपनी मृत्यु तक राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रहे।

6. अमेरिका हिंदचीन में कैसे दाखिल हुआ? चर्चा करें।

उत्तर- अमेरिका दक्षिणी वियतनाम और हिदचीन में बढ़ते साम्यवादी प्रभाव को रोकना चाहता था। वह पहले से ही वहाँ आर्थिक और सैनिक सहायता दे रहा था। राष्ट्रपति कैनेडी के शासनकाल में 1962 में अमेरिका ने दक्षिणी वियतनाम में सेना भेजकर प्रत्यक्ष रूप से युद्ध में भाग लिया।

7. जेनेवा समझौता (1954) का हिंदचीन के इतिहास में क्या महत्त्व है ?

उत्तर - जेनेवा समझौता द्वारा

(i) लाओस और कंबोडिया स्वतंत्र कर दिए गए।

(ii) वियतनाम का विभाजन अस्थायी रूप से उत्तरी वियतनाम और दक्षिणी वियतनाम में कर दिया गया। उत्तरी वियतनाम में हो ची मिन्ह की सरकार को मान्यता दी गई। दक्षिण में बाओदाई की सरकार बनी रही।

(iii) 1956 में वियतनाम में आम चुनाव करवाने की व्यवस्था की गई। जेनेवा समझौता ने पूरे हिंदचीन में राजनीतिक अशांति ला दी। लाओस, कंबोडिया और वियतनाम में गृहयुद्ध आरंभ हो गया।

8. नापाम और एजेंट ऑरेंज क्या था ? अथवा, रासायनिक हथियारों एवं एजेंट ऑरेंज का परिचय दीजिए। अथवा, नापाम और एजेंट ऑरेंज से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - ये घातक रासायनिक हथियार थे जिनका उपयोग अमेरिका ने वियतनामी युद्ध में किया। नापाम में गैसोलिन मिला रहता था जो ज्वलनशील होकर त्वचा से चिपककर जलता रहता था। एजेंट ऑरेंज खतरनाक जहर था। उसे

PDFSARTHI.COM

जिन ड्रमों में रखा जाता था उनपर नारंगी (ऑरेंज) रंग की पट्टियाँ बनी होती थीं। इनके प्रयोग से धन-जन की भारी हानि हुई। अमेरिका ने व्यापक रूप से एजेंट ऑरेंज का छिड़काव वियतनाम में किया। इसके प्रभाव से जंगल और फसल नष्ट हो गए तथा मानवों में जन्मजात विकलांगता उत्पन्न हुई।

9. हिंदचीन में फ्रांस की औपनिवेशिक महासंघ की योजना क्या थी?

उत्तर - द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात फ्रांस ने पुनः हिंदचीन में अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए फ्रांसीसी महासंघ की योजना प्रस्तुत की। इसके अनुसार

(i) फ्रांसीसी साम्राज्य को एक महासंघ में बदल दिया जाएगा। इनमें सभी अधीनस्थ उपनिवेशों को रखा जाएगा।

(ii) हिंदचीन इस महासंघ का एक स्वशासित अंग होगा।

(iii) हिंदचीन के संरक्षित राज्यों और कोचीन-चीन को मिलाकर एक संघ राज्य का गठन होगा जिसमें हिंदचीन के सभी नागरिकों को समान रूप से राजकीय पद प्राप्त करने का अधिकार होगा।

(iv) हिंदचीन संघ की विदेश और सैन्य नीति पर फ्रांस का नियंत्रण रहेगा। हिंदचीन के राष्ट्रवादियों ने इस योजना को अस्वीकृत कर दिया।

10. बाओदाई का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर - द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान के पराजय के बाद जापानियों ने अन्नाम का शासन वहाँ के प्राचीन राजवंश के सम्राट बाओदाई को सौंप दिया, परंतु उसने शीघ्र ही पद त्याग दिया। इससे वियतनामी गणराज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो गया। हनोई समझौता के दौरान फ्रांस ने पुनः बाओदाई को कोचीन चीन का शासक बना दिया। जेनेवा समझौता के बाद बाओदाई दक्षिण वियतनाम का शासक बना रहा। 1961 में बाओदाई की सरकार का तख्तापलट कर दिया गया।

Long Answer Type Question

इंडो-चाइना (हिंदचीन) में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद

1. हिंदचीन में उपनिवेश स्थापना का उद्देश्य क्या था ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - हिंदचीन में फ्रांसीसियों ने निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपनिवेश स्थापित किए।

आर्थिक – हिंदचीन में अर्थव्यवस्था का आधार कृषि और बागान था । प्रचुर मात्रा में धान एवं रबर का उत्पादन होता था। इसका लाभ उठाकर फ्रांसीसी अपनी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करना चाहते थे। कृषि के साथ ही हिंदचीन खनिज पदार्थों से भी परिपूर्ण था। कोयला, टिन, जस्ता, टंग्स्टन, क्रोमियम जैसे खनिज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। इनका उपयोग फ्रांस अपने उद्योगों के विकास के लिए कर सकता था। औद्योगिकीकरण के साथ ही फ्रांस को अपने उत्पादित सामानों के लिए बड़ा बाजार भी मिल सकता था। इससे फ्रांस के व्यापार-वाणिज्य का भी विकास होता ।

व्यापारिक सुरक्षा - फ्रांस को डच एवं अँगरेजी व्यापारिक कंपनियों की प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ रहा था। हिंदचीन में अँगरेजी प्रभाव नहीं था। अतः, व्यापारिक और आर्थिक दृष्टिकोण से हिंदचीन फ्रांसीसियों के लिए भारत और चीन से अधिक सुरक्षित था।

असभ्यों को सभ्य बनाने का उद्देश्य - अन्य यूरोपीय प्रजातियों के समान फ्रांसीसी भी विश्व के 'असभ्यों' को 'सभ्य' बनाना अपना उत्तरदायित्व मानते थे। यह कार्य फ्रांस हिंदचीन में उपनिवेश की स्थापना करके ही कर सकता था। अतः, हिंदचीन के औपनिवेशीकरण की नीति अपनाई गई।

2. हिंदचीन में फ्रांसीसियों द्वारा किए गए सकारात्मक कार्यों की समीक्षा करें।

उत्तर - **(i) कृषि का विकास** - कृषि के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण सुधार किए गए। दलदली और जंगली क्षेत्रों में कृषि का विस्तार किया गया। उत्पादकता बढ़ाने के लिए मेकांग डेल्टा क्षेत्र में नहरों एवं जलधाराओं का निर्माण कर सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराई गई। इससे धान की खेती का विस्तार हुआ तथा उपज बढ़ गई।

(ii) संरचनागत विकास - संरचनागत विकास के लिए अनेक परियोजनाएँ आरंभ की गईं। एक विशाल रेल नेटवर्क द्वारा संपूर्ण हिंदचीन को जोड़ दिया गया। इससे वियतनाम, चीन, कंबोडिया, थाईलैंड आपस में जुड़ गए। सड़कों का भी जाल बिछा दिया गया तथा बंदरगाहों का विकास किया गया।

(iii) नई शिक्षा नीति - हिंदचीन पर अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए नई शिक्षा नीति बनाई गई। परंपरागत शैक्षणिक व्यवस्था समाप्त कर दी गई। नए फ्रांसीसी स्कूल खोले गए। फ्रांसीसी भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की गई। नई पुस्तकें तैयार करवाई गई जिनमें फ्रांसीसियों का गुणगान किया गया तथा फ्रांसीसी शासन को लाभदायक

PDF SARTHI.COM

बतलाया गया। 1907 में वियतनाम में टोकिन फ्री स्कूल स्थापित किए गए। इनका उद्देश्य आधुनिकता की शिक्षा देना था।

(iv) **धार्मिक सुधार** - धार्मिक जीवन पर से फ्रांसीसी चीन का प्रभाव समाप्त करना चाहते थे। वियतनाम में चीनी धर्मसुधारक कन्फ्यूशियस की शिक्षाओं का व्यापक प्रभाव था। फ्रांसीसी इसे समाप्त कर ईसाई धर्म का प्रचार करना चाहते थे। इसके लिए प्रयास आरंभ किए गए। ईसाई मिशनरियों को सुविधा और संरक्षण दिया गया। फलस्वरूप, ईसाई धर्म का तेजी से प्रचार-प्रसार हुआ।

औपनिवेशिक सरकार के इन कार्यों का मुख्य उद्देश्य फ्रांसीसी हितों की रक्षा करना एवं अभिजात वर्ग का समर्थन प्राप्त करना था।

3. कंबोडिया के इतिहास में नोरोडोम सिहानुक की भूमिका का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - जेनेवा समझौता (1954) के द्वारा कंबोडिया को स्वतंत्र राष्ट्र का दर्जा दिया गया। राजकुमार नोरोडोम सिहानुक को शासनाध्यक्ष बनाया गया। सिहानुक ने तटस्थतावादी नीति अपनाई। वे अमेरिका समर्थित दक्षिण-पूर्व एशियाई संगठन में सम्मिलित नहीं हुए। इससे चिढ़कर अमेरिका ने बदले की कार्रवाई आरंभ कर दी। 1969 में अमेरिकी जहाजों ने कंबोडिया में जहर की वर्षा कर हजारों एकड़ रबर की फसल नष्ट कर दी। सिहानुक ने क्षतिपूर्ति की माँग की जिसे ठुकरा दिया गया। अब सिहानुक ने साम्यवादी पूर्वी जर्मनी से संबंध बढ़ाने आरंभ कर दिए। अमेरिका कंबोडिया में साम्यवादी प्रभाव नहीं बढ़ने देना चाहता था। इसलिए, उसने 1970 में सी० आई० ए० की सहायता से सिहानुक का तख्तापलट कर जनरल लोन नोल के नेतृत्व में अमेरिका समर्थित दक्षिणपंथी सरकार की स्थापना की। सिहानुक ने पेकिंग में अपनी नई सरकार बनाई तथा लोन नोल की सरकार को अवैध घोषित कर दिया। उत्तरी वियतनाम की सहायता तथा चीन के समर्थन से उन्होंने लोन नोल के विरुद्ध युद्ध आरंभ कर दिया। जब सिहानुक की विजयी सेना राजधानी नोम पेन्ह की ओर बढ़ी तब अमेरिका ने कंबोडिया में अपनी सेना भेज दी। युद्ध के भयंकर होने पर 1970 में जकार्ता सम्मेलन बुलाया गया, लेकिन शांति की स्थापना नहीं हो सकी। खूनी संघर्ष चलता रहा। 1975 में सिहानुक की 'लाल खमेर सेना' ने राजधानी पर अधिकार कर लिया। 1975 में स्वदेश वापस आकर सिहानुक पुनः शासनाध्यक्ष बने। कंबोडिया का नाम बदलकर कंपूचिया कर दिया गया। 1978 में उन्होंने राजनीति से संन्यास ले लिया। अमेरिकी नीति कंबोडिया में भी विफल हो गई।

4. वियतनाम के स्वतंत्रता संग्राम में हो ची मिन्ह के योगदान का मूल्यांकन करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - वियतनामी स्वतंत्रता संग्राम में हो ची मिन्ह की अग्रणी भूमिका थी। वियतनाम की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने लंबा और कठिन संघर्ष किया। वे मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थे। 1925 में उन्होंने 'वियतनामी क्रांतिकारी दल', 1930 में 'वियतनामी कम्युनिस्ट पार्टी' तथा 'वियेतमिन्ह' की स्थापना की। द्वितीय विश्वयुद्ध में इसने फ्रांसीसियों और जापानियों, दोनों को परेशान किया। सितंबर 1945 में वियतनाम लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना की गई। इसके अध्यक्ष हो ची मिन्ह बने ।

गणराज्य की स्थापना के बाद भी वियतनाम की समस्या का अंत नहीं हुआ। फ्रांस हिंदचीन पर अपना प्रभाव खोना नहीं चाहता था। उसने फ्रांसीसी महासंघ की योजना बनाई, परंतु वियतनाम ने इसे स्वीकार नहीं किया। 1946 के हनोई समझौता के अनुसार, वियतनामी गणराज्य को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में फ्रांस ने मान्यता प्रदान कर दी। इसके बावजूद फ्रांस और वियतनाम का संघर्ष नहीं रुका। जेनेवा समझौता (1954) के द्वारा शांति बहाली का प्रयास किया गया। वियतनाम का विभाजन उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम में कर दिया गया। उत्तरी वियतनाम में हो ची मिन्ह की साम्यवादी सरकार बनी रही तथा दक्षिण में फ्रांस-समर्थित बाओदाई की सरकार। इसके बाद भी स्थिति सामान्य नहीं हुई। हो ची मिन्ह ने वियतनाम के एकीकरण के लिए प्रयास आरंभ कर दिया। फलतः, गृहयुद्ध आरंभ हो गया। अमेरिका के युद्ध में प्रवेश और उसके द्वारा साम्यवादियों को कुचलने की नीति से वियतनामी युद्ध लंबा खींचा। युद्ध के दौरान ही 1969 में हो ची मिन्ह की मृत्यु हो गई।

5. माई ली गाँव की घटना क्या थी? इसका क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - माई ली दक्षिणी वियतनाम का एक गाँव था। अमेरिका को शक था कि इस गाँव के निवासी वियतकांग समर्थक थे। अतः, उन्हें दंडित करने के उद्देश्य से अमेरिकी सेना ने पूरे गाँव को घेरकर उसपर आक्रमण कर दिया। गाँव के सभी पुरुषों की निर्दयतापूर्वक हत्या कर दी गई। इतने से ही सेना संतुष्ट नहीं हुई। स्त्रियों और बच्चियों को भी नहीं बख्शा गया। उन्हें बंधक बनाकर रखा गया और कई दिनों तक उनके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया। इसके बाद आग लगाकर पूरे गाँव को जलाकर राख के ढेर में बदल दिया गया। हत्याकांड और आगजनी के बाद, लाशों के ढेर में दबा हुआ एक वृद्ध व्यक्ति जिंदा बच गया। किसी प्रकार वह लुकते-छिपते गाँव से भागने में सफल हो सका। बाहर आकर उसने इस लोमहर्षक घटना का आँखों देखा विवरण लोगों को सुनाया। इससे अमेरिकी नीति के विरुद्ध रोष और घृणा की भावना बढ़ी। अमेरिकी नीति की कटु आलोचना हुई। दूसरी ओर वियतनामियों में इस घटना से सदमा और रोष उत्पन्न हुआ। वे अमेरिकी वियतनामी युद्ध में दुगुने जोश से लड़ने लगे।

PDFSARTHI.COM

6. राष्ट्रपति निक्सन की हिंदचीन में शांति के लिए पाँच-सूत्री योजना क्या थी? इसका क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - वियतनामी गृहयुद्ध में अमेरिका की भागीदारी को लेकर उसकी कटु आलोचना हो रही थी। इसलिए, 1965 से ही शांति वार्ता के प्रयास होने लगे थे, परंतु वे विफल रहे। माई ली गाँव की घटना के बाद आलोचना और दबाव से विवश होकर निक्सन ने 1970 में पाँच सूत्री प्रस्ताव (योजना) प्रस्तुत किया। इसके अनुसार,

(i) हिंदचीन में सभी पक्षों को युद्ध-विराम करते हुए यथापूर्व स्थिति बनाए रखनी थी।

(ii) अंतरराष्ट्रीय प्रेक्षकों और संबद्ध देशों को देखना था कि युद्ध-विराम का उल्लंघन नहीं हो।

(iii) युद्ध-विराम के दौरान कोई देश अपनी शक्ति बढ़ाने का प्रयास नहीं करेगा।

(iv) युद्ध-विराम के दौरान सभी प्रकार की लड़ाइयाँ, बमबारी और आतंकी कार्रवाइयाँ बंद रहेंगी।

(v) युद्ध-विराम का अंतिम लक्ष्य समस्त हिंदचीन में संघर्ष का अंत होना चाहिए। निक्सन की यह योजना स्वीकार्य नहीं थी, अतः इसे अस्वीकृत कर दिया गया। अमेरिकी सेना ने पुनः बमबारी आरंभ कर दी। 1972 में निक्सन ने आठ सूत्री योजना प्रस्तुत की।

7. हिंदचीन में अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन द्वारा प्रस्तुत किए गए आठ सूत्री प्रस्ताव की विवेचना कीजिए।

उत्तर - पाँच सूत्री योजना के विफल हो जाने के बाद 1972 में राष्ट्रपति ने पुनः आठ सूत्री प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इसका भी उद्देश्य हिंदचीन के संघर्ष को समाप्त करना था। प्रस्ताव के महत्त्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार थे –

(i) समझौता होने के छह महीनों के अंदर दक्षिणी वियतनाम से अमेरिकी और अन्य विदेशी सैनिकों को वापस बुला लिया जाएगा।

(ii) सेना की वापसी के बाद बंदी नागरिकों और सैनिकों को स्वतंत्र कर दिया जाएगा।

(iii) छह महीनों के अंदर दक्षिण वियतनाम में राष्ट्रपति के लिए चुनाव करवाए जाएँगे। यह चुनाव अंतरराष्ट्रीय निरीक्षण में करवाया जाएगा।

(iv) सभी पक्ष जेनेवा समझौता की शर्तों का पालन करेंगे।

(v) हिंदचीन के सभी देश अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकेंगे।

PDFSARTHI.COM

(vi) हिंदचीन में युद्ध-विराम लागू होगा तथा कोई भी विदेशी सेना हिंदचीन में प्रवेश नहीं कर सकेगी।

(vii) समझौते के सैनिक पक्ष की देखभाल एक अंतरराष्ट्रीय संस्था करेगी।

(viii) हिंदचीन के नागरिकों के मौलिक अधिकारों की सुरक्षा एक अंतरराष्ट्रीय संस्था करेगी। साथ ही, यही संस्था दोनों वियतनाम, लाओस और कंबोडिया की स्थिति निर्धारित करेगी।

निक्सन का यह प्रस्ताव भी विफल हो गया। इससे वियतमिन्ह और वियतकांग में संघर्ष तीव्र हो गया।

1. अंकोरवाट के मंदिर का निर्माण किस शासक के द्वारा करवाया गया ?

(A) सूर्यवर्मन द्वितीय (II)

(B) नोरोदोम सिंहानांक

(C) कुआँग

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – A

2. अंकोरवाट का मंदिर कहाँ स्थित है ?

(A) वियतनाम

(B) थाइलैंड

(C) लाओस

(D) कम्बोडिया

Ans – D

3. हिंद चीन में कौन देश सम्मिलित नहीं था ?

PDF SARTHI.COM

(A) वियतनाम

(B) लाओस

(C) चीन

(D) कंबोडिया

Ans – C

4. हिंद-चीन क्षेत्र में कौन से देश आते हैं ?

(A) चीन, वियतनाम, लाओस

(B) हिंद-चीन, वियतनाम, लाओस

(C) कंबोडिया, वियतनाम, लाओस

(D) कंबोडिया, वियतनाम, थाईलैंड

Ans – C

5. अंकोरवाट में किस हिन्दू देवता का मंदिर है -

(A) विष्णु

(B) ब्रह्मा

(C) शिव

(D) इन्द्र

Ans – A

6. कन्फ्यूशियस कौन था ?

(A) एक लेखक

PDF SARTHI.COM

(B) एक चीनी विचारक

(C) क्रांतिकारी नेता

(D) वियतनाम के नेता

Ans – B

7. हिन्द-चीन किसके अधीन था ?

(A) फ्रांस

(B) ब्रिटेन

(C) स्पैन

(D) अमेरिका

Ans – A

8. हिन्द-चीन में बसने वाले फ्रांसीसी कहे जाते थे -

(A) फ्रांसीसी

(B) शासक वर्ग

(C) कोलोन

(D) जेनरल

Ans – C

9. फ्रेंच इंडो-चाइना की स्थापना किस वर्ष की गई ?

(A) 1802

(B) 1858

PDF SARTHI.COM

(C) 1883

(D) 1887

Ans – D

10. इंडो चाइना किस देश का उपनिवेश था ?

(A) अमेरिका

(B) फ्रांस

(C) इंग्लैंड

(D) जापान

Ans – B

11. वियतनाम में स्कॉलर्स रिवोल्ट किसके विरुद्ध हुआ था ?

(A) सरकारी नौकरी से वंचित करने के विरुद्ध

(B) उच्च शैक्षणिक संस्थाओं में प्रवेश के विरुद्ध

(C) प्रेस पर लगाए गए प्रतिबंध के विरुद्ध

(D) ईसाई धर्मप्रचार के विरुद्ध

Ans – D

12. स्कॉलर्स रिवोल्ट कब हुआ ?

(A) 1868 ई० में

(B) 1867 ई० में

PDFSARTHI.COM

(C) 1869 ई० में

(D) 1870 ई० में

Ans – A

13. हिन्द-चीन पहुँचने वाला प्रथम व्यापारी कौन थे?

(A) इंग्लैण्ड

(B) फ्रांसीसी

(C) पुर्तगाली

(D) डच

Ans – C

14. वियतनाम में टोंकिन फ्री स्कूल किस उद्देश्य से स्थापित किया गया ?

(A) सैनिक शिक्षा देने के लिए

(B) धार्मिक शिक्षा देने के लिए

(C) परंपरागत शिक्षा देने के लिए

(D) पश्चिमी शिक्षा देने के लिए

Ans – D

15. वियतनाम में 'टोंकिन फ्री स्कूल' की स्थापना कब हुई थी ?

(A) 1907 में

(B) 1908 में

(C) 1910 में

PDFSARTHI.COM

(D) 1911 में

Ans – A

16. हिन्द-चीन में कोलोन किन्हें कहा जाता था ?

(A) विद्यार्थियों को

(B) सैनिकों को

(C) फ्रांसीसी नागरिकों को

(D) चीनी नागरिकों को

Ans – C

17. 'वियतमिन्ह' की स्थापना किसने की थी ?

(A) बाओदायी

(A) हो-ची-मिन्ह

(A) फान- बोई -चाऊ

(A) कुआंग दे

Ans – B

18. हो-ची- मिन्ह का शाब्दिक अर्थ है -

(A) मसीहा

(B) क्रांतिकारी

(C) पथप्रदर्शक

(D) इनमें से कोई नहीं

PDF SARTHI.COM

Ans – C

19. "द हिस्ट्री ऑफ द लॉस ऑफ वियतनाम " किसने लिखा ?

(A) हो-ची-मिन्ह

(B) फान-वोई-चाऊ

(C) कुआंग

(D) त्रियु

Ans – B

20. वियतनामी कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक कौन थे ?

(A) हो- ची मिन्ह

(B) न्यूयेन आन्ह

(C) राजा फूत्से

(D) हुईन्ह फूसो

Ans – A

21. वियतनाम की जनता का सबसे महान नेता कौन था ?

(A) फान यू त्रिन्ह

(B) हो ची मिन्ह

(C) वियत मिन्ह

(D) फान-बोई चाऊ

Ans – B

PDF SARTHI.COM

22. वियत मिन्ह या वियतनामी स्वतंत्रता लीग स्थापना की थी -

(A) बाओदायी

(B) हो-ची-मिन्ह

(C) फान- बोई- चाऊ

(D) कुआंग दे

Ans – B

23. लियांग किचाओ कौन था ?

(A) चीनी सुधारक

(B) न्यूयेन आन्ह

(C) राजा फुत्से

(D) हुईन्ह फू सो

Ans – A

24. अनामी दल की स्थापना किसने की थी ?

(A) ओन्गुएन आई ने

(B) फान बोई चाऊ ने

(C) फान चू त्रिन्ह ने

(D) हो ची मिन्ह न

Ans – A

25. हो - ची - मिन्ह का दूसरा नाम क्या था ?

PDF SARTHI.COM

(A) फान- बोई- चाऊ

(B) फाम-चू-मिन्ट

(C) न्यूमेन आई कवोक

(D) लियांग किचाओ

Ans – C

26. वियतनाम लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना किस वर्ष हुई ?

(A) 1930 में

(B) 1942 में

(C) 1944 मे

(D) 1945 में

Ans – D

27. किसकी अध्यक्षता में वियतनाम में लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना की गई थी ?

(A) माओत्से-तुंग

(B) नेपोलियन तृतीय

(C) कन्फ्यूशियस

(D) हो-ची-मिन्ह

28. बाओदाई कहाँ का शासक था ?

(A) उत्तरी वियतनाम

PDF SARTHI.COM

(B) दक्षिणी वियतनाम

(C) कंबोडिया

(D) लाओस

Ans – B

29.वियतनाम के स्वतंत्रता की घोषणा कब की गई थी?

(A) 1 सितम्बर, 1944 ई०

(B) 2 सितम्बर, 1945 ई०

(C) 3 सितम्बर, 1946 ई०

(D) 4 सितम्बर, 1947 ई०

Ans – B

30. मार्च, 1946 में फ्रांस एवं वियतनाम के बीच होने वाला समझौता किस नाम से जाना जाता है?

(A) जेनेवा समझौता

(B) हनोई समझौता

(C) पेरिस समझौता

(D) धर्मनिरपेक्ष

Ans – B

31. जेनेवा समझौता कब हुआ?

(A) 1946

(B) 1950

PDF SARTHI.COM

(C) 1954

(D) 1954

Ans – C

32. होआ-हाओ आंदोलन के नेता कौन थे?

(A) फान-बोई चाऊ

(B) हुइन्ह-फू-सो

(C) कुआंग

(D) बाओ दाई

Ans – B

33. होआ-होआ आंदोलन किस प्रकृति का था?

(A) क्रांतिकारी

(B) धार्मिक

(C) साम्राज्यवादी समर्थक

(D) क्रांतिकारी धार्मिक

Ans – D

34. जेनेवा समझौता में किस देश को दो भागों में बाँटा गया?

(A) चीन

(B) जापान

(C) वियतनाम

PDF SARTHI.COM

(D) भारत

Ans – C

35. नियो-लियो हकसत (एन०एल०एच०एस०) किसकी राजनीतिक पार्टी थी?

(A) वियेतमिन्ह की

(B) वियतकांग की

(C) पाथेट लाओ की

(D) जनरल लोन नोल की

Ans – C

36. फुंगसाली एवं होऊअफ्रांस प्रांत किस देश के थे?

(A) लाओस

(B) कंबोडिया

(C) वियतनाम

(D) इनमें कोई नहीं

Ans – A

37. 25 दिसम्बर 1955 ई० को लाओस में चुनाव के बाद किसके नेतृत्व में राष्ट्रीय सरकार का गठन हुआ?

(A) पाथेट लाओ

(B) सुवन्न फूमा

(C) कैप्टन कांगली

(D) फुमी नौसवान

PDF SARTHI.COM

Ans – B

38. लाल खमेर सेना का गठन किसने किया था?

(A) कैप्टन कांगली ने

(B) सिंहानुक ने

(C) पोलपोट ने

(D) हेंग सामरिन ने

Ans – B

39. कंपुचिया का पुराना नाम क्या था?

(A) लाओस

(B) वियतनाम

(C) कंबोडिया

(D) इंडोनेशिया

Ans – C

40. नरोत्तम सिंहानुक कहाँ के शासक थे?

(A) वियतनाम

(B) लाओस

(C) थाइलैंड

(D) कंबोडिया

Ans – D

PDFSARTHI.COM

41. पहला 'टेलीविजन युद्ध' किसे कहा गया?

(A) रूसी-जापानी युद्ध

(B) वियतनामी युद्ध

(C) रूस-अफगानिस्तान युद्ध

(D) कोरियाई युद्ध

Ans – B

42. वियतनामी राष्ट्रीयता के जनक कौन थे?

(A) फान-बोई-चाऊ

(B) वाओदायी

(C) कुआंग दे

(D) हो-ची-मिन्ह

Ans – D

42. किस प्रसिद्ध दार्शनिक ने एक अदालत लगाकर अमेरिका को वियतनाम युद्ध के लिए दोषी करार दिया?

(A) रसेल

(B) हो-ची-मिन्ह

(C) नरोत्तम सिंहानुक

(D) रूसो

Ans – A

43. हो-ची मिन्ह मार्ग किस देश से होकर गुजरती थी?

PDF SARTHI.COM

(A) लाओस

(B) कंबोडिया

(C) वियतनाम

(D) उपर्युक्त तीनों देशों से

Ans – D

44. वियतनाम युद्ध की समाप्ति किस अमेरिकी राष्ट्रपति के समय में हुई?

(A) जॉर्ज वाशिंगटन

(B) जॉर्ज बुश

(C) एफ०डी० रूजवेल्ट

(D) आर० निक्सन

Ans – D

45. माई-ली-गाँव की घटना कहाँ हुई थी?

(A) लाओस

(B) दक्षिणी वियतनाम

(C) उत्तरी वियतनाम

(D) कंबोडिया

Ans – B

46. माई ली गाँव हत्याकांड का जिम्मेदार कौन-सा देश था ?

(A) चीन

PDF SARTHI.COM

(B) जापान

(C) वियतनाम

(D) अमेरिका

Ans – D

47. वियतनाम का एकीकरणं कब हुआ?

(A) 1974 ई० में

(B) 1975 ई० में

(C) 1976 ई० में

(D) 1977 ई० में

Ans – B

PDF SARTHI.COM

4. भारत में राष्ट्रवाद

Q. राष्ट्रवाद क्या है ?

उत्तर - राष्ट्रवाद का अर्थ है राष्ट्रीय चेतना का उदय। यह एक ऐसी समाजिक परिकल्पना है, जिसमे कोई भी व्यक्ति बिना अपना फायदा देखे अपने देश के प्रति सोचना शुरू कर दे या उसके अन्दर देश के प्रति लगाव उत्पन्न हो जाए तो उसे ही राष्ट्रवाद कहते है।

- जो अपने देश के प्रति सोच और लगाव की भावना का विकास करता है, उसे राष्ट्रवाद कहते है।

- और जिस व्यक्ति में ये भावना पनपती है उसे राष्ट्रवादी कहते है।

★ भारत मे राष्ट्रवाद का उदय के कारण –

Q. भारत मे राष्ट्रवाद का उदय के कारणों का वर्णन करें ?

उत्तर - राष्ट्रवाद का शाब्दिक अर्थ राष्ट्रीय चेतना का उदय जिसमें राजनितिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, बौधिक तथा सांस्कृतिक एकीकरण का अभाव हो।

प्रमुख कारण –

1. राजनितिक - लार्ड लीटन और लार्ड रिपन के काल में राष्ट्रवाद की भावना काफी आगे बढ़ रही थी। **1878 ई० मे वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट** लीटन ने पारित किया था। जिसके तहत भारतीय भाषा मे छपने वाली पत्रिका पर रोक लगा दिया। जबकि अंग्रेजी भाषा में छपने वाली पत्रिका पर रोक नही लगा। इस बात को लेकर भारतीय लोगो ने विरोध किया। 1879 ई० में लीटन के द्वारा शस्त्र अधिनियम पारित किया गया।

जिसके

तहत कहा गया की अगर भारतीय लोग अस्त्र-शस्त्र रखते है तो उन्हे लाइसेंस बनाना होगा। जबकि अंग्रेजो के लिए ऐसा नियम नही था। इस बात को लेकर जमकर विरोध किया और राष्ट्रभावना का विकास किया।

PDF SARTHI.COM

2. **आर्थिक कारण** - अंग्रेजों ने भारत में उपनिवेश की आर्थिक निती को अपनाकर भारतीय अर्थव्यवस्था का जमकर शोषण किया। जिससे भारतीय लोग काफी प्रभावित हुए। इनके कुटीर उधोग लगभग समाप्त हो गये और भारतीय अर्थव्यवस्था एकदम चरमरा गयी।

3. **समाजिक कारण** - अंगेजो ने भारतीय लोगो के साथ काले-गोरे का भेद-भाव किया तथा 1857 के सिपाही विद्रोह में हिन्दु मुस्लमान की एकता को तोड़ दिया। यहाँ तक भारत के लोगो को रेलगाड़ी में अंगेजों के साथ बैठने की इजाजत नही थी। अंग्रेज अपराध करे तो मामुली दण्ड दिया जाता जबकि भारत के लोगो को कठोर दंड दिया जाता था। अतः अंग्रेजी शासन व्यवस्था और प्रशासनिक व्यवस्था से भारतीय काफी नाराज थे। भारत के लोगो के पास नौकरी के पद में उच्च नींच का भेद-भाव किया जाता था। जिससे भारत में बेरोजगारी की समस्या बहुत ज्यादा बढ़ गया था। साथ से साथ भारत में गरीबी की समस्या बहुत ज्यादा बढ़ते जा रहा था। अंग्रेजों ने अंग्रेजी शिक्षा का खूब प्रचार प्रसार किया।

4. **धार्मिक कारण** - अंग्रेजों ने हमारे देश में हिंदू-मुस्लिम एकता को भड़काया और हमारी एकता को भंग किया।

★ भारत में रास्ट्रवाद के उदय के कारण –

1. अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध असंतोष
2. आर्थिक कारण
3. अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार
4. मध्यम वर्ग का उदय
5. साहित्य एवं समाचार पत्र का उदय & वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट
6. सामाजिक एवं आर्थिक सुधार आन्दोलन का प्रभाव
7. प्रजातीये विभेद की निति
8. सरकार की प्रतिगामी नीतियाँ

★ प्रथम विश्व युद्ध - First World War

PDF SARTHI.COM

प्रथम विश्व युद्ध यूरोप में होने वाला यह एक वैश्विक युद्ध था जो 28 जुलाई 1914 से 11 नवंबर 1918 तक चला था। इसे महान युद्ध या "सभी युद्धों को समाप्त करने वाला युद्ध" के रूप में जाना जाता था। इस युद्ध में दुनिया भर लगभग 37 देशों ने भाग लिया। इस युद्ध में अनुमानित 9 करोड़ लड़ाकों की मौत और युद्ध के प्रत्यक्ष परिणाम के स्वरूप में 1.3 करोड़ नागरिकों की मृत्यु, जबकि 1918 के स्पैनिश फ्लू महामारी ने दुनिया भर में में 1.7-10 करोड़ की मौत का कारण बना, जिसमें कि यूरोप में अनुमानित 26.4 लाख मौतें और संयुक्त राज्य में 6.75 लाख स्पैनिश फ्लू से हुई।

यह युद्ध दो देशो के बीच लड़ा गया।

मित्र राष्ट्र - अमेरिक, रूस, फ्रांस, जापान, इटली, इग्लैंड

धूरी राष्ट्र - जर्मनी, आस्ट्रीया, हंगरी

★ युद्ध का कारण

28 जून 1914 को गैवरिलो प्रिंसिपल ने साराजेवो में ऑस्ट्रो-हंगेरियन वारिस आर्चड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड को सर्बिया में ही हत्या कर दी जिससे जुलाई संकट पैदा हो गया और इस युद्ध का तात्कालिक कारण बना। इसके उत्तर में, ऑस्ट्रिया-हंगरी ने 23 जुलाई को सर्बिया को एक अंतिम चेतावनी जारी कर दी। सर्बिया का उत्तर ऑस्ट्रियाई लोगों को संतुष्ट करने में विफल रहा और दोनों युद्ध स्तर पर चले गए।

शुरुआत में अमेरिका इस युद्ध में शामिल नही था लेकिन बाद में 1917 में अमेरिका भी इस युद्ध में शामिल हो गया क्योकिं जर्मनी के द्वारा इंग्लैंड के लुसितानिया नामक जहाज को पानी में डुबो दिया गया था। इस जहाज में लगभग 1153 लोग बैठे हुए थे जिसमें 128 व्यक्ति अमेरिका के थे। इसी के बाद अमेरिका भी एस युद्ध में शामिल हो गया।

* भारत पर प्रभाव

कुल 8 लाख भारतीय सैनिक इस युद्ध में लड़े जिसमें कुल 47746 सैनिक मारे गये और 65000 घायल हुए। इस युद्ध के कारण भारत की अर्थव्यवस्था लगभग दिवालिया हो गयी थी। महात्मा गांधी ने भी इस युद्ध में भारतीय सैनिकों को भेजने के लिए अभियान चलाया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बड़े नेताओं द्वारा इस युद्ध में ब्रिटेन को

PDF SARTHI.COM

समर्थन ने ब्रिटिश चिन्तकों को भी चौंका दिया था। भारत के नेताओं को आशा थी कि युद्ध में ब्रिटेन के समर्थन से खुश होकर अंग्रेज भारत को इनाम के रूप में स्वतंत्रता दे देंगे या कम से कम स्वशासन का अधिकार देंगे किन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। उलटे अंग्रेज़ों ने रौलेट एक्ट और जलियाँवाला बाग नरसंहार जैसे घिनौने कृत्य से भारत के मुँह पर तमाचा मारा।

रॉलेट एक्ट

• 21 मार्च 1919 को भारत की ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में उभर रहे राष्ट्रीय आंदोलन को कुचलने के उद्देश्य से निर्मित कानून था। रॉलेट एक्ट की घटना मार्च 1919 को घटा था। बढ़ते आंदोलन को रोकने के लिए लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने सर सिडनी रॉलेट की मदद से इस कानून को लाया था। जिसमे शक एवं संदेह के आधार पर किसी भी भारतीय लोगो को पकड़कार जेल में बंद कर दीया जाता था। जिसे रॉलेट एक्ट के नाम से जाना जाता है। इसमे अंगेजो ने भारतीय जनता पर तरह-तरह का अत्याचार किया तथा भोजन में वासी भोजन तथा गंदे नालीयो का पानी पिने को मिलता था। इस एक्ट मे तहत न अपली, न दलील, न वकील किसी भी प्रकार का कोई सुनवाई नही होता था। जिसके कारण इसे काला कानुन भी कहा जाता है। भारत के दो महान क्रांतिकारी नेता डा० सत्यपाल मलिक एवं सैफूदीन किचलु को 9 अप्रैल 1919 ई० को गिरफ्तार कर लिया गया था।

Q. रॉलेट एक्ट से आप क्या समझते है ?

उत्तर - 21 मार्च 1919 को भारत की ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में उभर रहे राष्ट्रीय आंदोलन को कुचलने के उद्देश्य से निर्मित कानून था। बढ़ते आंदोलन को रोकने के लिए लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने सर सिडनी रॉलेट की मदद से इस कानून को लाया था। जिसमे शक एवं संदेह के आधार पर किसी भी भारतीय लोगो को पकड़कार जेल में बंद कर दीया जाता था। जिसे रॉलेट एक्ट के नाम से जाना जाता है। इस एक्ट मे तहत न अपली, न दलील, न वकील किसी भी प्रकार का कोई सुनवाई नही होता था। जिसके कारण इसे काला कानुन भी कहा जाता है।

★ जालियावाला बाग हत्याकांड

Q. जालियावाला बाग हत्याकांड से आप क्या समझते है ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर - जालियावाला बाग हत्याकांड 13 अप्रैल 1919 ई० को पंजाब के अमृतसर शहर में घटा था। रॉलेट एक्ट भारत के दो महान क्रांतिकारी नेता डा० सत्यपाल मलिक एवं सैफूदीन किचलु को 9 अप्रैल 1919 ई० को गिरफ्तार कर लिया गया था।

जिसके कारण पुरे देश में खलबली मच गई। इस बात को लेकर भारतीय जनता ने आपस मे मिलकर 13 अप्रैल को बैशाखी के दिन जालियावाला बाग में एक सभा का आयोजन रखा था। जिसमे 20 हजार व्यक्ति शामिल हुए थे। लेकिन अचानक अंगेजो का प्रधान जनरल डायर ने अपने सैनिको को गोली चलाने का आदेश दे दिया। जिसमे सरकारी गवाही के अनुसार 379 व्यक्ति मारे गए। परंतु मरने वालो की संख्या हजारो से अधिक थी। कहा जाता है कि इस बाग मे खुन की नदियाँ बह गई थी। इसके बाद गाँधी जी ने 18 अप्रैल 1919 को सत्याग्रह वापस ले लिया और अंग्रेजो को कैसरे- ए-हिन्द की उपाधि भी वापस कर दी।

★ गाँधी युग // महात्मा गाँधी ★

★ **जन्म** - 2 Oct 1869 (गुजरात के पोरबन्दर में)

★ **पूरा नाम** - मोहन दास करमचन्द गाँधी

★ **पिता का नाम** - करमचन्द गाँधी (राजकोट में दीवान)

★ वकालत की पढाई के लिए इंग्लैंड गये और 1891 में भारत आये और बम्बई में वकालत शुरू कर दिए।

★ 1893 में दक्षिण अफ्रीका गये जहाँ उनके साथ नस्ल के आधार पर भेद-भाव किया गया।

★ अत: दक्षिण अफ्रीका में ही गाँधी जी ने सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया।

Q. सत्याग्रह क्या है ?

उत्तर - सत्याग्रह का मूल अर्थ है सत्य के प्रति आग्रह यानि सत्य को पकड़े रहना और इसके साथ अहिंषा को मानना। अन्याय का सर्वथा विरोध करते हुए अन्यायी के प्रति वैरभाव न रखना, सत्याग्रह का मूल लक्षण है।

PDFSARTHI.COM

★ **भारत की राजनीती में गाँधी जी का प्रवेश –**

- महात्मा गाँधी 1915 में अफ्रीका से भारत आये।

★ शुरुआत में गाँधी जी अंग्रेजो जो सही मानते थे इसलिए अंग्रेजो ने खुश होकर गाँधी जी को 1915 में ही कैशरे-ए-हिन्द की उपाधि दिया। एवं 1916 ई० में साबरमती आश्रम की स्थापना की।

★ **महात्मा गाँधी के राजनीतिक गुरु -** गोपाल कृष्ण गोखले

★ गोपाल कृष्ण गोखले ने ही सर्वप्रथम भारत को अच्छे तरह से जानने के उद्देश्य से गाँधी जी को भारत भ्रमण का उपदेश दिया

★ गाँधी जी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उदघाटन के अवसर पर पहली बार सार्वजनिक रूप से लोगों के सामने आये।

खिलाफत आंदोलन - 1919

Q. खिलाफत आंदोलन से क्या समझते है ?

उत्तर - इस आंदोलन की शुरूआत 1919 ई० में ब्रिटेन द्वारा तुर्की के पराजय के बाद शुरू हुआ। तुर्की की बुरी तरह से हार के बाद तुर्की का खलीफा पद और आटोमन सम्राज्य विघटित हो गया। अंग्रेजो ने तुर्की के मुस्लमानों के साथ काफी अत्याचार किया। भारत के मुसलमान को भी यह डर सताने लगा की कहीं मेरे साथ भी ऐसा न हो जाये। इस बात को लेकर तुर्की के मुसलमान और भारतीय मुस्लमान आपस मे मिलकर अंगेजो का विरोध किया। इसमें गाँधी जी के द्वारा हिन्दु और मुस्लमान की एकता को स्थापित करने का कार्य किया।

★ **असहयोग आंदोलन - 1920 - 1922**

Q. असहयोग आंदोलन एक जन आंदोलन था कैसे ?

उत्तर - हम वास्तविक रूप से कह सकते है कि असहयोग आंदोलन एक जन आदोलन था न कि सामाजिक आदोलन । इस आंदोलन की शुरूआत अगस्त 1920 ई० मे गाँधीजी के द्वारा चलाया गया था। जिसमें बूढ़े, बच्चे, जवान, महिलायें की अहम भागीदारी रही थी। इसमें अंग्रेजी सरकार की ताकत को कमजोर करने का प्रयास किया गया तथा महिलाओं के द्वारा जगह-जगह पर धरना देकर शराब की दुकाने बंद करवा दी। इसमें मोतीलाल नेहरू

PDF SARTHI.COM

और चितरंजन दास ने वकालत करना छोड़ दी। इस आंदोलन में कहा गया कि विदेशी वस्तु में आग लगा दी जाए और स्वदेशी वस्तु को अपनाया जाए। भारतीय जनता ने सरकारी कॉलेज और विद्यालयों का बहिष्कार कर राष्ट्रीय शिक्षा पर जोर दिया। युवाओं के द्वारा रेल की पटरी उखाड़ दी गई और बैकों में ताला मार दिया गया। इस आंदोलन में छुआ-छुत की भावना का अंत कर दिया। हिन्दु-मुस्लिम की एकता को स्थापित करने का प्रयास किया गया। परंतु चौरी-चौरा हत्याकांड की घटना हो जाने के कारण 22 Feb 1922 गाँधी जी ने इस आंदोलन को वापस ले लिया।

Q. असहयोग आन्दोलन के कारण और इसके प्रभाव को लिखें ?

कारण

→ खिलाफत का मुद्दा

→ पंजाब में सरकार की बर्बरता के विरुद्ध न्याय

→ स्वराज की प्राप्ति करना

प्रभाव

- सरकारी कॉलेज और विद्यालयों का बहिष्कार
- विदेशी वस्तु में आग लगा दी जाए और स्वदेशी वस्तु को अपनाना
- विदेशी न्यायालय के स्थान पर पंचो का फैसला मानना
- सरकारी नौकरी से बहिष्कार
- चरखा और खादी को लोकप्रिय बनाना
- उपाधियों का वहिष्कार

Q. चौरी-चौरा हत्याकांड से क्या समझते है ?

उत्तर - 5 फरवरी 1922 ई० को उत्तरप्रदेश गोरखपुर के देवरिया जिला में चौरी- चौरा नामक स्थान पर हुआ। जिसका मुख्य कारण खाद्यान्न वस्तु के दाम में वृद्धि तथा जगह-जगह पर शराब की दुकान खोलने के खिलाफ हो रहे

PDF SARTHI.COM

राजनितिक जुलुस पर पुलिस द्वारा फायरिंग के विरोध में थाना पर हमला करके 22 पुलिस कर्मियों को जिंदा जेल में जला दिया गया था। जिसे चौरी-चौरा हत्याकांड कहते है।

Q. सविनय अवज्ञा आंदोलन से आप क्या समझते है ?

उत्तर - सविनय अवज्ञा आन्दोलन, ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा चलाये गए जन आन्दोलन में से एक था। 1929 ई० तक भारत को ब्रिटेन के इरादे पर शक होने लगा कि वह औपनिवेशिक स्वराज्य प्रदान करने की अपनी घोषणा पर अमल करेगा या नहीं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने लाहौर अधिवेशन (1929 ई०) में पूर्ण स्वराज्य की घोषणा कर दी कि उसका लक्ष्य भारत के लिए पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करना है। महात्मा गांधी ने अपनी इस माँग पर जोर देने के लिए 6 अप्रैल, 1930 ई० को सविनय अविज्ञा आन्दोलन छेड़ा। जिसका मुख्य उद्देश्य था अंग्रेजो द्वारा बनाये गये कानून को भंग करना।

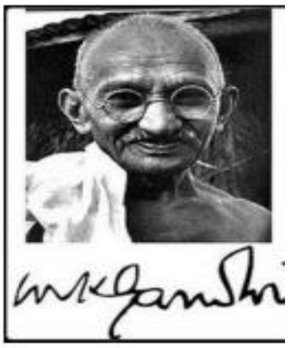

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के मुख्य कारण –

साइमन कमीशन

नेहरु रिपोर्ट

विश्वव्यापी आर्थिक मंदी का प्रभाव

समाजवाद का बढ़ता प्रभाव

पूर्ण स्वराज्य की मांग

गाँधी का समझौतावादी रुख

क्रांतिकारी आंदोलनों का उभार

Q. साइमन कमीशन से आप क्या समझते है ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - साइमन आयोग सात ब्रिटिश सांसदो का समूह था, जिसका गठन 8 नवम्बर 1927 में भारत में संविधान सुधारों के अध्ययन के लिये किया गया था। इसके अध्यक्ष सर जोन साइमन को रखा गया था। भारत के मुम्बई क्षेत्र में 3 फरवरी 1928 को साइमन कमीशन भारत आया। भारतीय आंदोलनकारियों ने साइमन कमीशन वापस जाओ के नारे लगाए और जमकर विरोध किया। साइमन कमीशन के विरुद्ध होने वाले इस आंदोलन में कांग्रेस के साथ साथ मुस्लिम लीग ने भी भाग लिया। इसमे कुल सदस्य अंग्रेज थे। एक भी भारतीय सदस्य न होने के कारण इसे सफेद कमीशन भी कहा जाता है। इस बात को लेकर भारतीय जनता ने विरोध किया तथा लाला लाजपत राय ने साइमन कमीशन वापस जाओ का नारा लगाया। जिसके विरोध मे लाला लाजपत राय को लाठी से पीट कर हत्या कर दी।

Q. नेहरू रिपोर्ट से आप क्या समझते है ?

उत्तर - नेहरु रिपोर्ट एक प्रकार का संविधान था। जिस समय साईमन कमीशन का विरोध किया जा रहा था। उस समय भारत के सचिव लॉर्ड बिरकनहैड ने कांग्रेस के नेताओं को यह चुनौती दे डाली कि यदि वे विभिन्न सम्प्रदायों की आपसी सहमति से एक संविधान का प्रारूप तैयार कर सके, तो ब्रिटिश सरकार निश्चित ही उस पर सहानुभूति पूर्ण ढंग से विचार कर सकती है। भारतीय नेताओं ने इस चुनौती

को स्वीकार करते हुए फरवरी 1928 ई० में दिल्ली में एक सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन किया। एवं औपनिवेशिक राज्य की माँग की गयी। इस सम्मेलन में मतभेद के कारण कोई भी निर्णय नहीं लिया जा सका। इस प्रारूप को ही 'नेहरू रिपोर्ट' कहकर सम्बोधित किया गया। जिसमे आठ सूत्री मांग को रखा गया।

Q. आर्थिक संकट / महामंदी से आप क्या समझते है ?

उत्तर - अर्थतंत्र से उत्पन्न वह प्रणाली जो कृषि उघोग, व्यापार के विकास को रोक दे उसे आर्थिक संकट कहा जाता है। आर्थिक संकट की शुरूआत 1925 ई० में अमेरिका से हुआ था। जिसमे सबसे बुरा परिणाम अमेरिका को झेलना पड़ा था। क्योंकि इस समय भयंकर बाढ़ के साथ-साथ सुखाड़ भी आया था। भारत में इस आर्थिक मंदी का असर 1929-30 में पड़ा। जिसका मुख्य कारन था अंग्रेजों ने भारत से धन का निष्कासन बंद नही किया था। जिसमे फसल के पैदावार मे भारी कमी हुई। जिसके कारण वस्तुओ के दाम में बेहतास वृद्धि कारण हो गया। कल-कारखाना बंद हो गए।

PDFSARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

Q. ककोरी कांड से आप क्या समझते है ?

उत्तर - 9 अगस्त 1925 ई० को काकोरी स्टेशन पर सरकारी खजाना को लूट लिया गया था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रान्तिकारियों द्वारा ब्रिटिश राज के विरुद्ध भयंकर युद्ध छेड़ने की ईच्छा से हथियार खरीदने के लिये ब्रिटिश सरकार का ही खजाना लूट लेने की एक ऐतिहासिक घटना थी। इस ट्रेन डकैती में जर्मनी के बने चार माउज़र पिस्तौल काम में लाये गये थे। इन पिस्तौलों की विशेषता यह थी कि इनमें बट के पीछे लकड़ी का बना एक और कुन्दा लगाकर रायफल की तरह उपयोग किया जा सकता था। इसमे भारत के चार क्रांतिकारियों को फॉसी दे दिया गया था जिनका नाम क्रमशः रामप्रसाद विस्मिल, राजेन्द्र लाहड़ी, रोशन सिंह, अशफाक उल्ला खा था।

Q. मेरठ षड्यंत्र से आप क्या समझते है ?

उत्तर - मेरठ षड्यंत्र मामला एक विवादास्पद अदालत का मामला था। मार्च 1929 में ब्रिटिश सरकार ने 31 श्रमिक नेताओ को बन्दी बना लिया तथा मेरठ लाकर उन पर मुकदमा चलाया। मेरठ षड्यंत्र केस के विरोध में 21 मार्च 1929 को मोतीलाल नेहरू में केंद्रीय विधानसभा में काम रोको प्रस्ताव पेश किया। आइंस्टाइन ने ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड को पत्र लिखकर इस मुकदमे को हटा लेने की मांग की। मेरठ षड्यंत्र केस में फंसे कैदियों को बचाने के लिए जवाहरलाल नेहरू और कुछ बड़े नेताओं ने पैरवी की। मेरठ षड्यंत्र केस का फैसला 16 जनवरी 1933 ईस्वी को सुनाया गया। 27 अभियुक्तों को कड़ी सजा दी गई। मुजफ्फर अहमद को सबसे बड़ी और कड़ी सजा दी गई जिसके तहत उन्हें आजीवन **काले पानी की सजा** दी गई। इससे श्रमिक आंदोलन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

Q. पूर्ण स्वराज क्या है ?

उत्तर - पूर्ण स्वराज को 1923 ई० में लहौर अधिवेशन में पारित किया गया था। जिसके अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू थे। 31 दिसम्बर 1929 की अर्द्धरात्रि को इंकलाब जिंदाबाद के नारों के बीच रावी नदी के तट पर भारतीय स्वतंत्रता का प्रतीक तिरंगा झंडा फहराया गया। 26 जनवरी 1930 को पूरे राष्ट्र में जगह-जगह सभाओं का आयोजन किया गया, जिनमें सभी लोगों ने सामूहिक रूप से स्वतंत्रता प्राप्त करने की शपथ ली। इस कार्यक्रम को अभूतपूर्व सफलता मिली। गांवों तथा कस्बों में सभायें आयोजित की गयीं, जहां स्वतंत्रता की शपथ को स्थानीय भाषा में पढ़ा गया तथा तिरंगा झंडा फहराया गया।

PDF SARTHI.COM

गाँधी का समझौतावादी रुख

गाँधी और अंग्रेजो के वाइसराय लॉर्ड इरविन के बीच 11 सूत्रीय माँग को लेकर एक समझौता रखा गया था, जिसमें यह कहा गया की सरकार द्वारा इसे पूरा किये जाने की स्थिति में आन्दोलन को रोक दिया जायेगा। परन्तु इरविन ने मांग को मानना तो दूर गाँधी से मिलने से भी इंकार कर दिया। तब महात्मा गाँधी ने एक अलग आन्दोलन दांडी मार्च आरंभ करने का निश्चय लिया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन का कार्यक्रम

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अंतर्गत चलाये जाने वाले कार्यक्रम निम्नलिखित थे-

- नमक कानून का उल्लघंन कर खुद के द्वारा नमक बनाया जाए।
- सरकारी सेवाओं, शिक्षा केन्द्रों एवं उपाधियों का बहिष्कार किया जाए।
- महिलाएँ स्वयं शराब, अफीम एवं विदेशी कपड़े की दुकानों पर जाकर धरना दें।
- समस्त विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करते हुए उन्हें जला दिया जाए।
- वकीलों द्वारा अदालत का बहिष्कार किया जाय।
- हर घर में चरखा द्वारा सूत काटा जाय।
- कानून तोड़ने की नीति।
- सभी कार्यक्रम में सत्य एवं अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया जाय।

* दांडी यात्रा (12 मार्च से 6 अप्रैल 1930)

महात्मा गांधी ने अपने 78 चुने हुए अनुयायियों के साथ 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से समुद्र तट पर स्थित दांडी नामक स्थान तक कूच किया। 24 दिनों में 250 कि० मी० की पद यात्रा कर गाँधी जी गुजरात के दांडी नमक समुद्र तट पर 5 अप्रैल को पहुँचे। वहाँ पर लागू नमक कानून को 6 अप्रैल, 1930 ई० को तोड़ा। हजारों नर-नारी और बच्चे बूढ़े कानूनों को तोड़ने के लिए सड़कों पर आ गए। सम्पूर्ण देश गम्भीर रूप से इस आन्दोलन में कूद गया। ब्रिटिश सरकार ने आन्दोलन को दबाने के लिए सख्त कदम उठाये और गांधी जी सहित अनेक कांग्रेसी

PDF SARTHI.COM

नेताओं व उनके समर्थकों को जेल में डाल दिया। आन्दोलनकारियों और सरकारी सिपाहियों के बीच जगह-जगह जबर्दस्त संघर्ष हुए। कानपुर जैसे नगरों में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। हिंसा के इस विस्फोट से गांधी जी चिन्तित हो उठे। वे आन्दोलन को बिल्कुल अहिंसक ढंग से चलाना चाहते थे।

*** गाँधी-इरविन समझौता**

सविनय अवज्ञा आंदोलन की व्यापकता ने अंग्रेजी सरकार को समझौता करने के लिए वाध्य किया जिससे गाँधी और अंग्रेजो के वाइसराय लॉर्ड इरविन के बीच 5 मार्च 1931 ई० को एक समझौता हुआ, जिसे गाँधी इरविन समझौता के नाम है। इसे दिल्ली समझौता भी कहते ते है। जिसके अंतर्गत सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस ले लिया गया। सरकार ने भी गांधी जी व अन्य कांग्रेसी नेताओं को रिहा कर दिया और हिंसा के दोषी लोगों को छोड़कर आन्दोलन में भाग लेने वाले सभी बन्दियों को रिहा कर दिया गया और गाँधी जी **गोलमेज सम्मेलन** के दूसरे अधिवेशन में भाग लेने को सहमत हो गई।

प्रमुख उद्देश्य :

1. नमक बनाने की आजादी
2. भारतीय कैदी को रिहा कर दिया जाए
3. लूट के धन के वापस लिया जाए
4. दमन चक्र की निती बंद कर दी जाए

★ **गोलमेज सम्मेलन:** नमक यात्रा के कारण ही अंग्रेजो यह अहसास हुआ था कि अब उनका राज बहुत दिन नहीं टिक सकेगा और उन्हें भारतीयों को भी सत्ता में हिस्सा देना पड़ेगा। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने लंदन में गोल मेज सम्मेलनों का आयोजन शुरू किया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के परिणाम –

* इस आन्दोलन ने राष्ट्रीय आन्दोलन के सामाजिक विस्तार पर बल दिया।

* इस आन्दोलन ने समाज के सभी वर्गों का राजनीतिकरण किया।

PDF SARTHI.COM

* इस आन्दोलन ने महिलाओं को भी राष्ट्रवादी आन्दोलन से जोड़ा।

* आन्दोलन में आर्थिक बहिष्कार से अंग्रेजों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया।

* इस आन्दोलन के दौरान वानर सेना और मंजरी सेना का गठन कर संगठन के नये तरीके का इस्तेमाल हुआ।

* पहली बार ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस से समानता के आधार पर बातचीत की।

★ चंपारण सत्याग्रह ★

Q. चंपारण सत्याग्रह से आप क्या समझते है ?

उत्तर - अप्रैल 1917 ई० में एक आंदोलन चलाया गया था। जिसे चंपारण सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। इसमे बिहार और बंगाल के किसान अपने खेतो मे धान, गेहूँ, मक्का की खेती करना चाहते थे। लेकिन गोरे जमीनदारो ने जबदस्ती नील की खेती करने के लिए मजबूर कर दिया। 20 कट्ठा खेत में 3 कठा नील की खेती करना अनिवार्य कर दिया। जिसे 3 कट्ठीया प्रणाली कहा जाता है। नील एक प्रकार का ऐसा फसल था जिस खेत में लगे उस खेत की मिट्टी की उर्वरा शक्ति को कमजोर कर देता था। किसानो की स्थिती एक दम दैनीय हो गई। बिहार और बंगाल के किसान रोने लगे। जिसे देखकर चंपारण के ही एक किसान राजकुमार शुक्ल को न रहा गया। और उसने जल्दी से गाँधी जी को चंपारण बुलाया और गाँधी जी के कहने पर अवैध वसुली 25 प्रतिशत और 3 कट्ठीया प्रणाली को वापस ले लिया।

खेड़ा आंदोलन

1917 में अधिक बारिश होने से खरीफ की फसल को व्यापक नुकसान हुआ था। गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों ने कर माफी का आग्रह किया लेकिन सरकार ने माँग को अस्वीकृत कर दिया। जैसे ही गाँधी जी को सूचना मिली कि खेड़ा के किसान भारी संकट में हैं। फसलें नष्ट हो गई हैं। फिर भी उनसे कर वसूली की जा रही है। गांधीजी ने जांच कराई तो पता चला कि किसानों की मांगें सही हैं। नियम के मुताबिक लगान माफी का प्रावधान नही था। गांधीजी ने फौरन खेड़ा पहुंचकर अधिकारियों से बातचीत की लेकिन अधिकारी सुनने तक को तैयार नहीं थे। तब गांधीजी ने 22 जून 1918 को यहाँ सत्याग्रह का आह्वान किया, जो एक महीने तक जारी रहा। इसी बीच रबी की फसल अच्छी होने और सरकार द्वारा दमनकारी उपाय समाप्त करने से गाँधीजी ने सत्याग्रह समाप्त करने की घोषणा कर दी।

PDF SARTHI.COM

मोपला विद्रोह

Q. मोपला विद्रोह से आप क्या समझते है ?

उत्तर - 1921 ई० मे मुसलमानो और हिन्दू जमीनदारो के बीच केरल के मालाबार तट के पास पास एक एक विद्रोह हुआ था। जिसे मोपला विद्रोह के नाम से जाना जाता है। मोपला मुसलमान थे। मुसलमानों पर लगान का बोझ बढ़ा और भूमि संबंधी उनके अधिकार नियंत्रित कर तरह-तरह के अत्याचार किया गया। जिसके विरोध में किसानों ने सरकारी संस्थाओं पर हमले आरम्भ कर दिए। इस परिस्थिति को देखते हुए अक्टूबर 1921 में विद्रोहीयों के खिलाफ सैनिक कारवाई आरम्भ कर दी गयी। जिसमे 10000 लोगो की मौत हो गई तथा 50000 लोग बंदी बनाए गए। इस विद्रोह का सर्मथन गाँधीजी सौकत अली तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद ने किया था।

बारदोली सत्याग्रह

फरवरी 1928 में गुजरात के बारदोली में बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में किसानों द्वारा लगान वृद्धि के विरुद्ध में चलाया गया सत्याग्रह बारदोली सत्याग्रह कहलाता है। बारदोली सत्याग्रह के दौरान ही बल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि दी गयी। उन्होंने किसानों की समस्या के प्रति बुद्धिजीवियों को भी जागृत किया और महिलाओं को भी इसमें भागीदारी का अवसर प्रदान किया। अगस्त में महात्मा गाँधी ने बारदोली सत्याग्रह का नेतृत्व संभाल लिया। फलस्वरूप सरकार को एक नई जाँच समिति का गठन करना पड़ा और सरकार के द्वारा लगान की दर में कमी किया गया।

Q. AITUC क्या है ?

उत्तर AITUC का पुरा नाम All India Trade Union Congress हैं जिसकी स्थापन 31 अक्टूबर 1920 ई० को मुंबई में किया गया था। जिसमे प्रथम अध्यक्ष लाला लाजपत राय और सचिव जमना लाल बजाज थे।

उद्देश्य - किसानो एवं मजदूरो की समस्या का समाधान करना।

★ 1922 की गया वार्षिक अधिवेशन

असहयोग आन्दोलन के बाद सन 1922 ई० में गया के वार्षिक अधिवेशन में कांग्रेस दो हिस्सों में बँट गया। एक को परिवर्तन वादी (गरम दल) और दुसरे को अपरिवर्तन वादी (नरम दल) के नाम से जाना गया।

PDFSARTHI.COM

Q. जतरा भगत पर टिप्पणी लिखें।

उत्तर - जतरा भगत उर्फ जतरा उरांव का जन्म सितंबर 1888 में झारखंड के गुमला जिला के चिंगरी नवाटोली गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम कोदल उरांव और माँ का नाम लिबरी था। 1912-14 में उन्होंने ब्रिटिश राज और जमींदारों के खिलाफ अहिंसक असहयोग का आंदोलन छेड़ा और लगान, सरकारी टैक्स आदि भरने तथा

'कुली' के रूप में मजदूरी करने से मना कर दिया। यह 1900 में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुए 'उलगुलान' से प्रेरित औपनिवेशिक और सामंत विरोधी धार्मिक सुधारवादी आंदोलन था।

Q. भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना कैसे हुई थी इसके उद्देश्य को लिखे।

उत्तर - भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना के पुर्व कोई भी संस्था नही थी फिर भी लोगों का विकास किया जा रहा था तथा इलबर्ट बिल, शस्त्र अधिनियम और भारतीय लोगो की प्रक्रीया को देखते हुए एक राजनीतिक संस्था के गठन को अभाव हुआ और 1884 ई० मे ए० ओ० ह्यूम के द्वारा **भारतीय राष्ट्रीय संघ** का गठन किया गया इस संघ के अधिवेशन की घोषणा पहले पुणा मे किया गया था। प्रंतु अचानक प्लेग रोग फैल जाने के कारण इसकी बैठक गोकुलदास संस्कृत तेजपाल कॉलेज बंबई में किया गया और अन्ततः 28 दिसम्बर 1885 ई० मे इसका नाम भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस कर दिया गया बनर्जी और सचिव ए-ओ-हयूम थे।

उद्देश्य

1. भारत के लोगो को भाईचारा के संबंध में स्थापित करना
2. धर्म, वंश, जाति का भेदभाव मिटाना
3. समाज का कल्याण करना
4. एकता एंव अखण्डता स्थापित करना
5. शिक्षा का प्रसार

★ स्वराज पार्टी की स्थापना

Q. स्वराज पार्टी / दल क्या था ? इसके उद्देश्य को लिखे ।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - 1923 ई० में चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू के द्वारा एक पार्टी का गठन किया गया था जिसे स्वराज पार्टी कहा जाता है। इसके प्रथम अध्यक्ष चितरंजन दास और सचिव मोतीलाल नेहरू थे। ठीक इसके पहले असहयोग आदोलन को वापस ले लिया गया था। जिसका प्रमुख कारण चौरी-चौरा कांड था। इसमे 22 पुलिस कर्मियों को जिंदा जेल में जला दिया गया था। इस पार्टी के प्रस्ताव को कॉग्रेस अधिवेशन 1924 ई० में पेश किया गया था। जो असफल साबित हुआ था। इसमे कॉग्रेस नेताओ के दिल पर गहरा चोट पड़ा।

उद्देश्य

1. स्वराज की प्राप्ति ।

2. सरकार पर दबाव डालकर अपने माँगो की पुर्ति करना।

3. 1919 ई० के सुधार अधिनियम को समाप्त किया जाए।

Q. भारत छोड़ो आंदोलन से आप क्या समझते है ?

उत्तर - भारत छोड़ो आदोलन की शुरूआत 9 अगस्त 1942 ई० को गाँधी जी के द्वारा किया गया था। जिसका एक ही लक्ष्य था भारत से बिट्रीश सम्राज्य को मिटाना। इस आंदोलन मे गाँधी जी ने करो या मरो का नारा लगाया था। इसमे 60 हजार लोगो को गिरफ्तार कर लिया गया था तथा हजारो हजार की संख्या मे मौत हो गई थी।

Q. गाँधी जी का राष्ट्रीय आंदोलन मे क्या योगदान रहा ?

उत्तर **1. चंपारण सत्याग्रह:** अप्रैल 1917 ई० में एक आंदोलन चलाया गया था। जिसे चंपारण सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। इसमे बिहार और बंगाल के किसान अपने खेतो मे धान, गेहूँ, मक्का की खेती करना चाहते थे। लेकिन गोरे जमीनदारो ने जबदस्ती नी की खेती करने के लिए मजबूर कर दिया। 20 कठठा खेत मे 3 कठा नील की खेती करना अनिवार्य कर दिया।

नील एक प्रकार का ऐसा फसल था जिस खेत मे लगे उस खेत की मिट्टी की उर्वरा शक्ति को कमजोर कर देता था। किसानो की स्थिती एक दम दैनीय हो गई। बिहार और बंगाल के किसान रोने लगे। जिसे देखकर राजकुमार शुक्ला को न रहा गया। और उसने जल्दी से गाँधी जी को बुलाया और गाँधी जी के कहने पर अवैध वसुली 25 प्रतिशत और 3 कट्ठीया प्रणाली को वापस ले लिया।

PDFSARTHI.COM

2. दांडी मार्च:- 12 मार्च 1930 को गाँधी जी के द्वारा साबरमती आश्रम से एक आंदोलन चलाया गया था। जिसे नमक सत्याग्रह / दांडी मार्च कहा जाता है। गाँधी जी दांडी के तट पर पहुंचकर नमक कानुन को भंग किया और अंग्रेजो से कह नमक पर जो टैक्स लगाए हो उसे वापस कर लो नही तो बहुत बड़ा आदालन हो जाएगा।

3. भारत छोड़ो आंदोलन: भारत छोड़ो आदोलन की शुरूआत 9 अगस्त 1942 ई० को गाँधी जी के द्वारा किया गया था। जिसका एक ही लक्ष्य था भारत से बिट्रीश सम्राज्य को मिटाना। इस आंदोलन में गाँधी जी ने करो य मारो का नारा लगाया था। इसमे 60 हजार लोगो को गिरफ्तार कर लिया गया था तथा हजारो हजार की संख्या मे मौत हो गई थी।

Q. गाँधी काल क्या है?

उत्तर - 1919 से लेकर 1947 तक के काल को गाँधी काल के नाम से जाना जाता है।

भारत में राष्ट्रवाद

Short Answer Type Question

1. भारत में राष्ट्रवाद के उदय के सामाजिक कारणों पर प्रकाश डालें।

उत्तर - अँगरेजों की प्रजातीय विभेद की नीति तथा मध्यम वर्ग का उदय भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के प्रमुख सामाजिक कारण थे। भारतीयों को हेय दृष्टि से देखने, उनपर अनेक प्रतिबंध लगाने तथा सरकारी सेवाओं से उन्हें अलग रखने की नीति से जनमानस उद्वेलित हो उठा। इसी प्रकार, अँगरेजी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग के उदय तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति का ज्ञान होने से भारतीयों में भी स्वतंत्रता, समानता और नागरिक अधिकारों की माँग जोर पकड़ने लगी।

2. जालियाँवाला बाग हत्याकांड के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर - 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर-स्थित जालियाँवाला बाग में बैशाखी के दिन एकत्रित सभा रॉलेट ऐक्ट एवं पुलिस की दमनकारी नीतियों का विरोध कर रही थी। सभा की कार्रवाई के बीच में ही अमृतसर का सैनिक कमांडर जनरल डायर वहाँ पहुँचा और प्रवेश-द्वार बंद कर निहत्थी भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चलवा दीं। इस हत्याकांड में 379 लोग मारे गए तथा करीब 1,200 लोग जख्मी हुए ।

PDF SARTHI.COM

3. असहयोग आंदोलन जनआंदोलन था। कैसे ? व्याख्या करें।

उत्तर - गाँधीजी के नेतृत्व में चलाया जानेवाला यह प्रथम जनआंदोलन था। इसमें असहयोग और बहिष्कार की नीति प्रमुखता से अपनाई गई। इस आंदोलन का व्यापक जनाधार था। शहरी क्षेत्र में मध्यम वर्ग तथा ग्रामीण क्षेत्र में किसानों और आदिवासियों का इसे व्यापक समर्थन मिला। श्रमिक वर्ग की भी इसमें भागीदारी रही। इस प्रकार, यह पहला जनआंदोलन बन गया।

4. चौरीचौरा की घटना के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर - यह स्थान उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में स्थित है। असहयोग आंदोलन के दौरान 5 फरवरी 1922 को पुलिस ने निःशस्त्र प्रदर्शनकारियों पर गोली चला दी। इससे प्रदर्शनकारी उग्र हो उठे। पुलिस ने भागकर थाना में शरण ली। भीड़ ने थाना में आग लगा दी। इस घटना में 22 पुलिसकर्मी जिंदा जल मरे । गाँधीजी इस घटना से दुःखी हो गए। अतः, 11 फरवरी को उन्होंने आंदोलन बंद करने की घोषणा की। इससे काँग्रेस का युवा वर्ग क्षुब्ध हो गया।

5. गाँधीजी ने नमक कानून क्यों भंग किया? इसका क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर - सरकार ने नमक के व्यवहार पर कर लगा रखा था। साथ ही, इसके व्यक्तिगत ढंग से उत्पादन करने पर भी प्रतिबंध लगा हुआ था। इससे लोगों में व्यापक असंतोष था। गाँधीजी नमक कानून को ब्रिटिश शासन का सबसे दमनकारी पहलू मानते थे। इसलिए, इस कानून को भंगकर वे समाज के सभी वर्गों को एकजुट करना चाहते थे। अतः, नमक कानून भंगकर उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ कर दिया (1930)।

6. गाँधी-इरविन समझौता (दिल्ली पैक्ट) के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर - सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान वायसराय इरविन ने गाँधीजी से समझौता वार्ता आरंभ की। फलतः, 5 मार्च 1931 को गाँधी-इरविन समझौता (दिल्ली पैक्ट) हुआ। सरकार ने दमनचक्र बंद करने तथा राजनीतिक बंदियों को छोड़ने का आश्वासन दिया। बदले में गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस ले लिया। वे द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने पर भी तैयार हो गए।

7. साइमन कमीशन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

PDF SARTHI.COM

उत्तर - साइमन कमीशन (आयोग) फरवरी 1928 में भारत आया। इसका उद्देश्य 1919 के अधिनियम द्वारा स्थापित उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए किए गए प्रयासों की समीक्षा करना एवं आवश्यक सुझाव देना था।

आयोग के बंबई (मुंबई) पहुँचने पर इसका स्वागत काले झंडों एवं प्रदर्शनों से किया गया एवं 'साइमन वापस जाओ' के नारे लगाए गए। देशभर में विरोध प्रदर्शन हुए जिसका जवाब अँगरेज पुलिस ने लाठी-डंडों से दिया ।

8. एका आंदोलन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर - यह आंदोलन उत्तर प्रदेश के हरदोई, बहराइच और सीतापुर जिलों में किसानों द्वारा चलाया गया । लगान की ऊँची दर तथा जमींदारी शोषण के विरुद्ध संगठित होकर किसानों ने यह आंदोलन (एकता आंदोलन) चलाया। किसानों को संगठित करने के लिए धार्मिक रीति-रिवाजों का सहारा लिया गया। उन्हें शपथ दिलाई गई कि वे संगठित होकर सरकारी और जमींदारी शोषण का विरोध करेंगे। आंदोलन में छोटे किसानों और स्थानीय जमींदारों ने प्रमुखता से भाग लिया। 1922 तक सरकार ने इस आंदोलन को दबा दिया।

9. खेड़ा आंदोलन का परिचय दें।

उत्तर - 1917 में गुजरात के खेड़ा जिला में खरीफ की फसल को क्षति पहुँचने से किसानों की स्थिति दयनीय हो गई थी। वे सरकार से लगान माफी की माँग कर रहे थे। गाँधीजी ने उनकी माँगों का समर्थन किया, परंतु सरकार ने माँग नहीं मानी। अतः, जून 1918 में गाँधीजी ने सत्याग्रह आरंभ कर दिया। बाध्य होकर सरकार को किसानों को राहत देनी पड़ी। किसानों की स्थिति में सुधार आने के बाद गाँधीजी ने सत्याग्रह वापस ले लिया। इस सत्याग्रह द्वारा किसानों में अँगरेजी शोषण का विरोध करने का साहस जगा ।

10. बारदोली सत्याग्रह के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर - गुजरात के सूरत जिला में स्थित बारदोली में 1926-28 में व्यापक किसान आंदोलन हुआ। यह आंदोलन बढ़े हुए लगान के विरुद्ध हुआ। किसानों ने बढ़ी हुई दर पर लगान देने से इनकार कर दिया। आंदोलन को वल्लभभाई पटेल ने नेतृत्व प्रदान किया। उन्होंने 'बारदोली' पत्रिका प्रकाशित कर आंदोलन का प्रचार किया। आंदोलन को व्यापक समर्थन मिला। गाँधीजी भी इसमें शरीक हुए। सरकार ने ब्रूमफील्ड और मैक्सवेल जाँच समिति की अनुशंसा पर बढ़ी हुई लगान की राशि 30 प्रतिशत से घटाकर 6.3 प्रतिशत कर दी। यह किसानों की बड़ी विजय थी।

PDF SARTHI.COM

11. मोपला विद्रोह पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर - केरल के मालाबार में 19वीं 20वीं शताब्दियों में मोपलाओं के अनेक विद्रोह हुए। मोपला एक वर्ग समूह था जिसमें किसान-मजदूर और अन्य लोग सम्मिलित थे। विद्रोह भू-स्वामियों के अत्याचारों के विरुद्ध हुआ। इसमें धर्म की भी प्रमुख भूमिका थी। मोपला मुसलमान थे और भू-स्वामी नायर और नम्बूदरी हिंदू । मोपला खलीफा के साथ किए गए अन्याय से भी क्रुद्ध थे, अतः उनलोगों ने विद्रोह कर दिया। 1921 में सबसे बड़ा मोपला विद्रोह हुआ। मोपलाओं ने अली मुसालियार को अपना राजा घोषित कर धार्मिक उन्माद एवं हिंसा भड़काई । सरकार ने अली मुसालियार को गिरफ्तार कर सेना की सहायता से विद्रोह को कुचल दिया।

12. 'मेरठ षड्यंत्र' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - 20वीं शताब्दी के आरंभ में भारत में साम्यवादी विचारधारा का प्रसार हुआ। साम्यवादियों ने किसानों मजदूरों की स्थिति में सुधार लाने की माँग रखी। साथ ही, इनलोगों ने क्रांतिकारी आंदोलन को समर्थन दिया तथा साम्राज्यवाद एवं पूँजीवाद का विरोध किया। इसलिए, असहयोग आंदोलन की समाप्ति के बाद सरकार ने साम्यवादियों के विरुद्ध दमनात्मक कार्रवाई की। साम्यवादियों पर अनेक मुकदमे चलाए गए। इसी में मेरठ षड्यंत्र केस (1929-33) भी था । इसमें 8 साम्यवादियों पर मुकदमा चलाकर उन्हें दंडित किया गया।.

13. अल्लूरी सीताराम राजू के विद्रोह का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर - 1920 के दशक में आंध्रप्रदेश की पहाड़ियों में एक विद्रोह हुआ। इसका मुख्य कारण नए वन कानून थे। इन कानूनों द्वारा आदिवासियो के परंपरागत वन-संबंधी अधिकारों पर रोक लगा दी गई। इससे आदिवासी विद्रोह पर उतारू हो गए। उस विद्रोह का नेतृत्व अल्लूरी सीताराम राजू नामक एक चमत्कारिक व्यक्ति ने किया। आदिवासियों पर उनका व्यापक प्रभाव था। आदिवासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए उन्होंने सरकार और पुलिस से गुरिल्ला युद्ध किया। 1924 में सरकार ने उन्हें पकड़ कर मौत की सजा दे दी।

14. जतरा भगत के विषय में आप क्या जानते हैं? अथवा, टाना भगत आंदोलन पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर - छोटानागपुर (झारखंड) के ओराँव जनजातियों ने जतरा भगत के नेतृत्व में 20वीं शताब्दी के आरंभिक चरण में टाना भगत आंदोलन चलाया था। जतरा भगत गाँधीजी के विचारों से प्रभावित थे। उन्होंने अहिंसक आंदोलन चलाया। इसमें सामाजिक और शैक्षणिक सुधारों पर विशेष बल दिया गया। साथ ही, एकेश्वरवाद पर भी बल दिया

PDFSARTHI.COM

गया। जमींदारों और साहूकारों के अत्याचारों का भी शांतिपूर्ण विरोध करने को कहा गया। आंदोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा। बिहार (झारखंड) में गाँधीजी के असहयोग आंदोलन को इसने व्यापक आधार प्रदान किया।

15. ऑल इंडिया मुसलिम लीग की स्थापना कैसे हुई? इसकी आरंभिक नीति क्या थी? अथवा, मुसलिम लीग के क्या उद्देश्य थे ?

उत्तर - 1906 में मुसलमानों का एक शिष्टमंडल अपनी माँगों के साथ आगा खाँ के नेतृत्व में वायसराय मिंटो से शिमला में मिला। मिंटो ने उनकी माँगों को पूरा करने का आश्वासन दिया। ढाका में एकत्रित प्रमुख मुसलमानों ने 30 दिसंबर 1906 को मुसलिम लीग की स्थापना की। लीग ने सरकार के साथ सहयोग का रास्ता अपनाया तथा सरकारी नौकरियों एवं व्यवस्थापिका सभाओं में प्रतिनिधित्व एवं पृथक निर्वाचन मंडलों की माँग की।

16. स्वराज दल का गठन क्यों हुआ ? इसकी क्या उपलब्धियाँ थीं ?

अथवा, स्वराज पार्टी की स्थापना एवं इसके उद्देश्य की विवेचना करें।

उत्तर - गाँधीजी द्वारा अचानक असहयोग आंदोलन वापस लेने से क्षुब्ध होकर काँग्रेस के अंदर दो गुट बन गए। (i) परिवर्तनवादी गुट, जिसमें प्रमुख चित्तरंजन दास और मोतीलाल नेहरू थे। ये काँग्रेस द्वारा अधिक सशक्त नीति अपनाए जाने की माँग कर रहे थे। ये कौंसिलों में प्रवेश कर प्रभावशाली ढंग से सरकार का विरोध करना चाहते थे। (ii) अपरिवर्तनवादी गुट, गाँधीजी के मार्ग पर ही चलना चाहते थे। गया काँग्रेस अधिवेशन में दोनों गुटों में विभाजन हो गया। 1923 में चित्तरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने स्वराज पार्टी की स्थापना की। चित्तरंजन दास इसके अध्यक्ष बने। 1923 के चुनावों में इस दल को बड़ी सफलता मिली। अपनी अड़ंगावादी नीति से इसने कौंसिलों में सरकार का काम करना कठिन कर दिया।

17. ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस की स्थापना क्यों हुई ?

उत्तर - 1917 की रूसी क्रांति के पश्चात भारत में भी साम्यवादी विचारधारा का प्रसार होने लगा। साम्यवादियों ने किसानों और श्रमिकों की ओर ध्यान दिया एवं उन्हें संगठित करने का प्रयास किया। इसके लिए श्रमिक संगठन बनाए जाने लगे। इनमें प्रमुख था अक्टूबर 1920 में बंबई में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में गठित ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस। इसके बैनर के अंतर्गत श्रमिकों को संगठित करने का प्रयास किया गया।

18. भारत में समाजवादी दल का गठन कैसे हुआ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर - 20वीं शताब्दी के तीसरे दशक में समाजवादी विचारधारा का उदय और विकास हुआ। समाजवादी किसानों और मजदूरों की स्थिति में सुधार लाना चाहते थे। कॉंग्रेस के अंदर वामपंथी के अतिरिक्त समाजवादी धारा उभरने लगी। नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया जैसे नेता समाजवादी कार्यक्रम अपनाने की माँग करने लगे। जयप्रकाश नारायण ने 1931 में बिहार समाजवादी दल की स्थापना की। 1934 में बंबई में कॉंग्रेस समाजवादी दल की स्थापना की गई। स्वतंत्रता आंदोलन में समाजवादियों का महत्त्वपूर्ण योगदान था ।

19. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर०एस०एस०) पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर - आर. एस. एस. की स्थापना 1925 में के. बी. हेडगेवार ने नागपुर में की थी। इसका मुख्य उद्देश्य युवकों को चारित्रिक एवं शारीरिक रूप से मजबूत बनाकर सशक्त राष्ट्र का निर्माण करना था। इसने हिंदू राष्ट्रवाद का नारा दिया तथा हिंदू धर्म एवं समाज के पुनरुत्थान की नीति अपनाई। सामाजिक संगठन के रूप में यह संस्था आज भी कार्यरत है।

भारत में राष्ट्रवाद

Long Answer Type Question

1. राष्ट्रवाद से आप क्या समझते हैं ? भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के प्रमुख कारणों की व्याख्या करें।

उत्तर - राष्ट्रवाद का शाब्दिक अर्थ है- 'राष्ट्रीय चेतना का उदय ।' यह ऐसी चेतना है जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक एकता की अनुभूति होती है। इसमें राष्ट्रीय तत्त्वों को महत्त्व प्रदान किया जाता है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से भारतीय राष्ट्रवाद का तेजी से विकास हुआ। इसके उदय के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं।

(i) **भारत का राजनीतिक एकीकरण** - 1857 के बाद अँगरेजी अधिसत्ता की स्थापना से भारत का एकीकरण हुआ । इस प्रक्रिया में राष्ट्रीय तत्त्व प्रमुख बन गए।

(ii) **सरकार की प्रतिगामी नीतियाँ** - अँगरेजी सरकार की प्रतिगामी नीतियों से भारतीयों का आक्रोश बढ़ा।

(iii) **प्रजातीय विभेद की नीति** - अँगरेजों की प्रजातीय विभेद की नीति से भारतीय आहत हो उठे। यह राष्ट्रवाद के विकास का महत्त्वपूर्ण कारण बन गया।

PDFSARTHI.COM

(iv) **अँगरेजी सरकार के विरुद्ध असंतोष की भावना** - अँगरेजी नीतियों के कारण समाज का प्रत्येक वर्ग असंतुष्ट था।

(v) **सरकार की आर्थिक नीतियाँ** - सरकारी आर्थिक नीतियों के कारण गरीबी, बेरोजगारी बढ़ी। भारत से धन का निष्कासन बढ़ा। इसकी प्रतिक्रिया हुई ।

(vi) **मध्यम वर्ग का उदय** - मध्यम वर्ग ने सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना जगाने - का काम किया।

(vii) **पश्चिमी जगत से संपर्क** - आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने से भारतीयों की मानसिक जड़ता समाप्त हो गई। वे भी समानता, स्वतंत्रता एवं नागरिक अधिकारों की माँग करने लगे।

(viii) **सामाजिक** - धार्मिक सुधार आंदोलनों का प्रभाव - 19वीं शताब्दी के सामाजिक- धार्मिक सुधार आंदोलनों एवं इनके नेताओं तथा संगठनों ने भारतीयों में आत्मसम्मान, गौरव की भावना जागृत कर राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया।

(ix) **साहित्य एवं समाचारपत्रों का योगदान** - समाचारपत्रों एवं साहित्यकारों ने अपने लेखों और रचनाओं से राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना जागृत की।

(x) **प्राचीन संस्कृति का ज्ञान** - अपनी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करने से भी भारतीयों में देशभक्ति की भावना जगी ।

(xi) **राजनीतिक संस्थाओं का योगदान** - 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस ने राष्ट्रवादी गतिविधियों को संगठित करने एवं उन्हें एक नई दिशा देने का प्रयास किया।

2. अखिल भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना कैसे हुई? इसके प्रारंभिक उद्देश्य क्या थे?

उत्तर - 1885 में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना के पूर्व देश में कोई अखिल भारतीय राजनीतिक संस्था नहीं थी। आर्म्स एक्ट और इलबर्ट बिल पर हुए विवाद एवं भारतीय प्रतिक्रिया को देखते हुए एक अखिल भारतीय राजनीतिक संगठन की आवश्यकता महसूस की गई। अतः, इंडियन एसोसिएशन के सचिव आनंद मोहन बसु ने दिसंबर 1883 में सभी राजनीतिक प्रतिनिधियों की सभा - इंडियन नेशनल कॉंफ्रेंस - का आयोजन कलकत्ता में किया। इसी समय एक उदारवादी सेवानिवृत्त अँगरेज पदाधिकारी ए० ओ० ह्यूम भी इस दिशा में प्रयासरत थे। ह्यूम का उद्देश्य भारत को क्रांतिकारी मार्ग पर जाने से रोकना था। वह ऐसी संस्था बनाना चाहते थे जो अपनी माँगों के

PDFSARTHI.COM

लिए शांतिपूर्ण संवैधानिक मार्ग अपना सके। अपनी संस्था को वह 'सुरक्षा कवच' बनाना चाहते थे। भारतीय नेता स्वयं कोई राजनीतिक संगठन बनाकर आरंभ से ही सरकार का कोपभाजन बनना नहीं चाहते थे। इसलिए, भारतीयों ने ह्यूम की संस्था का उपयोग 'विद्युत-प्रतिरोधक' के रूप में किया। ह्यूम के प्रयास का समर्थन प्रमुख भारतीय नेताओं ने भी किया। ह्यूम ने लॉर्ड डफरिन एवं ब्रिटिश पार्लियामेंटरी कमेटी की सहमति प्राप्तकर इंडियन नेशनल यूनियन स्थापित करने की योजना बनाई। 5 दिसंबर 1885 को इंडियन नेशनल काँग्रेस की स्थापना की घोषणा की गई। पहले इसका अधिवेशन पूना में होना था, परंतु वहाँ प्लेग फैलने के कारण इसका अधिवेशन 28 दिसंबर 1885 को बंबई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में हुआ। इसकी अध्यक्षता व्योमेशचंद्र बनर्जी ने की। काँग्रेस का आरंभिक उद्देश्य राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयास करना, राजनीतिक और सामाजिक प्रश्नों पर प्रमुख नागरिकों एवं शिक्षित वर्गों के मतों की अभिव्यक्ति करना तथा सुधारों के लिए वायसराय और उनकी कौंसिल को स्मारपत्र देना था।

3. मुसलिम लीग की स्थापना की परिस्थितियों की विवेचना करें।

उत्तर - 1857 के विद्रोह के पश्चात अँगरेजी सरकार ने हिंदू-मुसलिम एकता को तोड़ने की नीति अपनाई। वे दोनों समुदायों में फूट डालकर (फूट डालो और राज करो) उन्हें अलग करना चाहते थे। अतः, मुसलमानों को अपनी ओर मिलाने का प्रयास आरंभ कर दिया। 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस को हिंदुओं की संस्था बताकर मुसलमानों को इससे अलग रखने का प्रयास किया गया। साथ ही, अँगरेज-मुसलिम मैत्री बढ़ाने पर भी जोर दिया गया। इससे मुसलमानों में पृथकतावादी भावना का उदय हुआ। इसी समय हिंदू धर्म के पुनरुत्थान और उन्हें संगठित करने के प्रयासों से मुसलमान आशंकित हो गए। वे अँगरेजों को अपना संरक्षक मानने लगे। उनकी सहायता से वे अपना आर्थिक पिछड़ापन दूर करना चाहते थे। मुसलमानों में हुए सुधार आंदोलनों, वहाबी आंदोलन, अहमदिया आंदोलन इत्यादि ने इसलाम का प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया। सैयद अहमद खाँ के नेतृत्व में अलीगढ़ आंदोलन चलाया गया। उनका मानना था कि पश्चिमी शिक्षा प्राप्त कर मुसलमान भी सरकारी नौकरियों से अपना पिछड़ापन दूर करें । काँग्रेस के 'गरमपंथियों' की नीति से भी मुसलमान काँग्रेस से विमुख होकर अँगरेजों की ओर मुड़े। अपने राजनीतिक और आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिए वे अपना संगठन बनाने की सोचने लगे। 1905 के बंगाल विभाजन ने इसे और अधिक बढ़ावा दिया।

फलतः, 1906 में मुसलमानों का एक प्रतिनिधिमंडल आगा खाँ के नेतृत्व में शिमला में लॉर्ड मिंटो से मिला। इसने अँगरेजी राज में अपनी भक्ति प्रकट की तथा अपने लिए राजनीतिक और अन्य सुविधाओं की माँग रखी। लॉर्ड मिंटो

PDFSARTHI.COM

का आश्वासन प्राप्त कर ढाका के नवाब सलीम्मुलाह, मोहसिन मुल्क, आगा खाँ और नवाब बकर- उल-मुल्क के प्रयासों से ढाका में 30 दिसम्बर 1906 को ऑल इंडिया मुसलिम लीग की स्थापना की गई।

4. प्रथम विश्वयुद्ध का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - प्रथम विश्वयुद्ध का भारत पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा।

(i) **आर्थिक परिणाम** - प्रथम विश्वयुद्ध ने भारतीय अर्थव्यवस्था को अव्यवस्थित कर दिया। युद्ध के नाम पर सरकार ने भारी कर्ज लिया। इसकी भरपाई के लिए सीमा शुल्क और अन्य करों में वृद्धि की गई। आयात शुल्क और आयकर लगाया गया। अनाज का मूल्य बढ़ गया। कृषि की अवनति हुई। गरीबी और महँगाई बढ़ गई। पूँजीपति और साहूकार मालामाल हो गए।

(ii) **क्रांतिकारी गतिविधियों में वृद्धि** - सरकार को युद्ध में व्यस्त पाकर क्रांतिकारियों ने अपनी गतिविधियाँ बढ़ा दी। बंगाल, उत्तर प्रदेश और सरहदी इलाकों में तथा विदेशों में भी क्रांतिकारी घटनाओं में तेजी आई। इनका उद्देश्य सशस्त्र क्रांति द्वारा सरकार का तख्तापलट करना था। गदर पार्टी (1913) और भारतीय स्वाधीनता समिति (1914) की स्थापना की गई। 1915 में काबुल में महेंद्र प्रताप की अध्यक्षता में भारत की अस्थायी सरकार की स्थापना की गई।

(iii) **राष्ट्रवादी गतिविधियों में वृद्धि** - युद्ध के दौरान राष्ट्रवादियों ने स्वराज प्राप्ति और हिंदू-मुसलिम एकता के लिए प्रयास तेज कर दिए। 1916 में काँग्रेस और मुसलिम लीग के बीच लखनऊ समझौता हुआ। इससे हिंदू-मुसलिम सौहार्द की भावना बढ़ी। श्रीमती एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक ने होमरूल आंदोलन का प्रचार कर गृह शासन की माँग के लिए पूरे देश में वातावरण तैयार किया।

(iv) **खिलाफत आंदोलन आरंभ हुआ** - तुर्की के सुलतान (खलीफा) के साथ किए गए अन्याय के विरुद्ध भारत में खिलाफत आंदोलन आरंभ हुआ।

(v) **संवैधानिक सुधारों की घोषणा** - 1917 में भारत सचिव एडविन मांटेग्यू ने भारत में क्रमिक रूप से उत्तरदायी शासन की स्थापना की घोषणा की। इसी के आधार पर 1919 में मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड योजना (भारत सरकार अधिनियम, 1919) पारित किया गया।

5. प्रथम विश्वयुद्ध के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के साथ अंतरसंबंधों की व्याख्या करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटीं जिनका भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

(i) भारतीय नेताओं ने सरकार को युद्ध में स्वराज - प्राप्ति की आशा में सहयोग दिया, परंतु ऐसा हुआ नहीं। इससे राष्ट्रवादी गतिविधियाँ बढ़ीं।

(ii) सरकार की आर्थिक नीतियों के विरुद्ध व्यापक प्रतिक्रिया हुई।

(iii) सरकार को युद्ध में व्यस्त पाकर क्रांतिकारियों ने अपनी गतिविधियाँ बढ़ा

दीं।

(iv) भारतीयों में बढ़ते असंतोष को नियंत्रित करने के लिए सरकार ने संवैधानिक सुधारों की घोषणा की।

(v) विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय राष्ट्रवादी स्वराज -प्राप्ति और हिंदू-मुसलिम एकता बनाए रखने हेतु प्रयासशील थे। एनी बेसेंट और तिलक ने गृह शासन की माँग के लिए वातावरण तैयार किया।

6. गुजरात के किसान आंदोलन में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका पर प्रकाश डालें।

उत्तर - 20वीं शताब्दी के आरंभ में गुजरात में भी किसान आंदोलन हुए। पहला किसान आंदोलन खेड़ा में हुआ। 1918 में समय पर वर्षा नहीं होने से तंबाकू और कपास की फसल नष्ट हो गई। इसका किसानों पर बुरा प्रभाव पड़ा। वे लगान चुकाने में असमर्थ हो गए। गाँधीजी के प्रयासों से किसानों को कुछ राहत मिली। इसी आंदोलन के दौरान वल्लभभाई पटेल गाँधीजी के संपर्क में आए और जीवनपर्यंत उनके साथ बने रहे।

1926 में सूरत जिला के बारदोली में व्यापक किसान आंदोलन हुआ। इसका मुख्य कारण लगान में तीस प्रतिशत की वृद्धि थी। किसान इसे चुकाने में असमर्थ थे। अतः उनलोगों ने लगान देने से इनकार कर दिया। लगान में वृद्धि के विरुद्ध किसानों ने आंदोलन आरंभ कर दिया। इस आंदोलन को नेतृत्व वल्लभभाई पटेल ने प्रदान किया। उनके नेतृत्व में व्यापक आंदोलन चला। इसी आंदोलन के दौरान वल्लभभाई को 'सरदार' की उपाधि प्रदान की गई। किसानों के व्यापक आंदोलन को देखते हुए सरकार ने 'बारदोली जाँच आयोग का गठन किया। आयोग ने लगान वृद्धि को अनुचित बताकर उसे वापस लेने की अनुशंसा की । सरदार ने किसानों को संगठित कर अपनी माँगें पूरी होने तक आंदोलन चलाने को उत्प्रेरित किया। उन्होंने 'बारदोली' पत्रिका का प्रकाशन कर आंदोलन का प्रचार-प्रसार

PDFSARTHI.COM

किया। आंदोलन में महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। सरकार ने आंदोलनकारियों में फूट डालने का प्रयास किया परंतु वह सफल नहीं हो सकी। आंदोलन को व्यापक समर्थन मिला। 1928 तक आंदोलन व्यापक हो गया। बंबई के रेलकर्मियों ने हड़ताल का आयोजन किया। स्वयं महात्मा गाँधी बारदोली गए। सरकार आंदोलनकारियों के सामने झुक गई। उसने ब्रुमफील्ड और मैक्सवेल जाँच समिति का गठन किया। इसकी अनुशंसा पर बढ़ी हुई लगान की दर घटाकर 6.3 प्रतिशत कर दी गई। यह किसानों और सरदार पटेल के नेतृत्व की बड़ी उपलब्धि थी।

7. सुभाषचंद्र बोस की जीवनी एवं कार्यों पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर - सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा के कटक में हुआ था। 1920 में वह आई० सी० एस० की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर सरकारी नौकरी में आए, परंतु शीघ्र ही उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। देशबंधु चित्तरंजन दास से प्रभावित होकर उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। 1924 में वे कलकत्ता कॉरपोरेशन के मेयर बने। उनके क्रांतिकारी विचारों के कारण उन्हें गिरफ्तार करके तीन वर्षों के लिए निष्कासित कर मांडले (बर्मा) भेज दिया गया। वापस लौटकर वे काँग्रेस की राजनीति में सक्रिय हो गए। जवाहरलाल नेहरू के साथ उन्होंने काँग्रेस के अंदर वाम मोर्चा बनाया और इंडिपेंडेंस लीग बनाई। वे काँग्रेस की दक्षिणपंथी नीति और गाँधीजी की नीतियों के विरोधी थे। 1939 में पट्टाभि सीतारमैया को पराजित कर वह काँग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित हुए। काँग्रेस में अपने प्रति बढ़ते विरोध को देखकर उन्होंने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया एवं फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की। उनकी गतिविधियों से आशंकित होकर अँगरेजी सरकार ने उन्हें कलकत्ता में नजरबंद कर लिया। 1941 में छद्म वेश में वे भारत से निकल गए तथा काबुल, मास्को के रास्ते बर्लिन पहुँच गए। बर्लिन से वे जापान गए तथा आजाद हिंद फौज की कमान सँभाली। सिंगापुर में उन्होंने 1943 में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार बनाई। उन्होंने नारा दिया, "तुम मुझे खून दो, मैं तुझे आजादी दूँगा" तथा "दिल्ली चलो"। जापानी सहयोग से उन्होंने सशस्त्र युद्ध छेड़ दिया और कोहिमा तक पहुँच गए। इसी बीच द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान की लगातार होती हार से बाध्य होकर वे टोकियो जाने के लिए तैयार हुए। मार्ग में ही 18 अगस्त 1945 को विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई।

8. भारत में मजदूर आंदोलन के विकास का वर्णन करें।

उत्तर - 20वीं शताब्दी के आरंभिक चरण में भारत में मजदूरों का आंदोलन हुआ। उद्योगों और कारखानों की स्थापना ने श्रमिक एवं पूँजीपति वर्ग को जन्म दिया। पूँजीपतियों ने श्रमिकों का शोषण किया। धीरे-धीरे वामपंथियों के प्रभाव में श्रमिकों में अपने अधिकारों के प्रति चेतना जगी । वामपंथियों ने श्रमिकों को संगठित करने का प्रयास

PDF SARTHI.COM

किया । सुब्रह्मण्यम अय्यर ने 1903 में मजदूर यूनियन की स्थापना की। प्रथम विश्वयुद्ध तक मजदूरों के अनेक संगठन स्थापित हो चुके थे; जैसे - चटकल यूनियन, ईस्ट इंडिया रेलवे इंप्लाइज एसोसिएशन इत्यादि । 1917 में रूस में साम्यवादी सरकार के गठन, 1919 में कौमिंटर्न तथा अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की स्थापना का प्रभाव भारतीय श्रमिकों पर भी पड़ा। आगे चलकर, 1920 में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस, ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन फेडरेशन, हिंद मजदूर संघ जैसे संगठन स्थापित कर श्रमिकों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया गया । श्रमिकों ने हड़ताल को अपना अस्त्र बनाया। 1907 में रेलकर्मियों एवं 1908 में बंबई में मजदूरों ने बड़ी हड़ताल की। 1918 में अहमदाबाद में मिल मजदूरों ने हड़ताल की। गाँधीजी के प्रयासों से हड़ताल समाप्त हुआ तथा श्रमिकों की मजदूरी बढ़ी। इस आंदोलन ने 1920 में कपड़ा मजदूर सभा के गठन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद मजदूर आंदोलन अधिक व्यापक हो गए। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेकर श्रमिकों ने स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

9. भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में वामपंथियों की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - 20वीं शताब्दी के आरंभ में भारत में साम्यवादी अथवा वामपंथी विचारधारा का प्रचार हुआ। बंबई और अन्य स्थानों में साम्यवादी दर्शन से प्रभावित बुद्धिजीवी समूहों का गठन कर साम्यवाद का प्रचार कर रहे थे। इसके लिए इनलोगों ने पत्र-पत्रिकाओं का भी सहारा लिया। 1917 की रूसी क्रांति के बाद भारत में साम्यवादी विचारधारा का तेजी से प्रसार हुआ। साम्यवादियों ने श्रमिकों और किसानों की ओर अपना ध्यान दिया। उन्हें संगठित करने का प्रयास किया गया। श्रमिक संघ स्थापित किए गए। 1920 में बंबई में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस बनी। बाद में एन० एम० जोशी ने ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन फेडरेशन का गठन किया। श्रमिकों के साथ किसानों को भी सम्मिलित कर प्रजा पार्टी, अखिल भारतीय किसान- मजदूर पार्टी जैसे संगठन बनाए गए। इनके प्रभाव से श्रमिकों और किसानों को शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा मिली। वामपंथियों ने साम्राज्यवाद और पूँजीवाद का भी विरोध किया। क्रांतिकारी आंदोलनों को भी इनलोगों ने समर्थन एवं संरक्षण दिया। इसलिए, असहयोग आंदोलन के बाद पेशावर षड्यंत्र, कानपुर षड्यंत्र एवं मेरठ षड्यंत्र केस में मुकदमा चलाकर इन्हें दंडित किया गया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान साम्यवादियों ने काँग्रेस का विरोध किया। इसी प्रकार, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भी वामपंथी इससे अलग रहे। वामपंथी विचारधारा से काँग्रेस का युवा वर्ग भी प्रभावित हुआ। जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस भी वामपंथी विचारधारा से प्रभावित थे। 1939 में सुभाषचंद्र बोस ने फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की।

PDF SARTHI.COM

4. भारत में राष्ट्रवाद

1. भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का सबसे प्रमुख कारण क्या था।

(A) अंगरजी शासन के विरुद्ध असंतोष

(B) साहित्य एवं समाचारपत्रों का प्रकाशन

(C) भारत का राजनीतिक एककिकरण

(D) भारत का प्रकाशनिक एककीकरण

[Ans – (A)]

2. ब्राह्मण समाज की स्थापना किसने की ?

(A) राजा राममोहन राय

(B) दयानन्द सरस्वती

(C) विवेकानंद

(D) रामकृष्ण परमहंस

[Ans – (A)]

3. आर्म्स एक्ट किसने लागू किसने किया था ?

(A) डलहौजी ने

(B) कैनिंग ने

PDF SARTHI.COM

(C) लिटन ने

(D) रिपन ने

[Ans – (C)]

4. बंगाल विभाजन के परिणामस्वरूप किस आंदोलन की शुरुआत हुई ?

(A) असहयोग आंदोलन

(B) स्वदेशी आंदोलन

(C) खिलापत आंदोलन

(D) भारत छोड़ो आंदोलन

[Ans – (B)]

5. बंगाल विभाजन 1911 ई० में किसने रद्द किया ?

(A) लॉर्ड लिटन

(B) लॉर्ड कर्जन

(C) लॉर्ड रिपन

(D) लॉर्ड हार्डिंग्ज

[Ans – (D)]

6. फुट डालो और राज करो की नीति की नीति किसने अपनायी ?

(A) आंग्रेजों ने

(B) पारसियों ने

(C) मुसलमानों

PDF SARTHI.COM

(D) पंजाबियों ने

[*Ans* – (A)]

7. सिपाही विद्रोह कब हुआ था ?

(A) 1855 ई०

(B) 1857 ई०

(C) 1885 ई०

(D) 1887 ई०

[*Ans* – (B)]

8. बंगाल का विभाजन कब कब हुआ था ?

(A) 1855 ई०

(B) 1857 ई०

(C) 1905 ई०

(D) 1911 ई०

[*Ans* – (C)]

9. गांधीजी साबरमती आश्रम की स्थापना किस वार्स की ?

(A) 1895

(B) 1900

(C) 1915

(D) 1916

PDF SARTHI.COM

[Ans – (C)]

10. गदर पार्टी की स्थापना किसने और कब की?

(A) गुरदयाल सिंह, 1916

(B) चंद्रशेखर आजाद, 1920

(C) लाला हरदयाल, 1913

(D) सोहन सिंह भाखना, 1918

[Ans – (C)]

11. 1915 में काबुल में भारत की अस्थायी सरकार का अध्यक्ष किसे बनाया गया था ?

(A) बरकतुल्ला को

(B) महेन्द्र प्रताप को

(C) लाला हरदयाल को

(D) इनमें से कोई नहीं

[Ans – (B)]

12. लखनऊ समझौता किस वर्ष हुआ ?

(A) 1916

(B) 1918

(C) 1920

(D) 1922 से भारत कब

[Ans – (A)]

PDFSARTHI.COM

13. महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका वापस आए ?

(A) 1913

(B) 1919

(C) 1915

(D) 1921

[Ans – (C)]

14. कामनबील तथा न्यू इंडिया का प्रकाशन किसने किया ?

(A) एनीबेसेंट

(B) बल्लभ भाई पटेल

(C) महात्मा गाँधी

(D) बाल गंगाधर तिलक

[Ans – (A)]

15. जालियाँवाला बाग हत्याकांड कब हुआ ?

(A) 13 अप्रैल 1919

(B) 14 अप्रैल 1919

(C) 15 अप्रैल 1919

(D) 16 अप्रैल 1919

[Ans – (A)]

16. जालियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के विरोध में किसने " कैसर-ए-हिन्द" की उपाधि लौटा दिया था?

PDF SARTHI.COM

(A) बाल गंगाधर तिलक ने

(B) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने

(C) गाँधीजी ने

(D) रवींद्रनाथ टैगोर ने

[Ans – (C)]

17. रॉलेट ऐक्ट किस वर्ष पारित हुआ ?

(A) 1911 में

(B) 1919 में

(C) 1935 में

(D) 1947 में

[Ans – (B)]

18. रॉलेट कानून किस उद्देश्य से बनाया गया ?

(A) सरकारी नौकरियों में प्रवेश के लिए

(B) शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के लिए

(C) कालाबाजारी रोकने के लिए

(D) क्रांतिकारी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए

[Ans – (D)]

19. जालियाँवाला बाग हत्याकांड की जाँच के लिए सरकार ने किस समिति का गठन किया था ?

(A) हंटर समिति

PDFSARTHI.COM

(B) डायर समिति

(C) मांटेग्यू समिति

(D) चेम्सफोर्ड समिति

[Ans – (A)]

20. तुर्की में खलीफा का पद किस वर्ष समाप किया गया ?

(A) 1920

(B) 1922

(C) 1924

(D) 1930

[Ans – (C)]

21. भारत में खिलापत आंदोलन कब और किस देश के शासक के समर्थन में शुरू हुआ ?

(A) 1920 तुर्की

(B) 1920 अरब

(C) 1920 फ्रांस

(D) 1920 जर्मनी

[Ans – (A)]

22. गांधीजी को 'महात्मा' की उपाधि किसने दी ?

(A) मोती लाल नेहरू

(B) लाला लाजपत राय

PDF SARTHI.COM

(C) रवीन्द्रनाथ टैगोर

(D) गोपाल कृष्ण गोखले

[Ans – (C)]

23 गांधीजी नें सर्वप्रथम किस अंग्रेजी नीति का विरोध किया ?

(A) नस्लवाद

(B) राजस्व

(C) प्रेस

(D) शिक्षा

[Ans – (A)]

24. चौरी चौरा वर्तमान भारत में किस राज्य में हैं ?

(A) बिहार में

(B) मध्यप्रदेश में

(C) उत्तर प्रदेश में

(D) आंध्र प्रदेश में

[Ans – (C)]

25. महात्मा गाँधी अपना राजनीतिक गुरु किसे मानते थे ?

(A) बालगंगाधर तिलक

(B) गोपालकृष्ण गोखले

(C) लाला लाजपतराय

PDF SARTHI.COM

(D) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

[Ans – (B)]

26. अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज्य' में गाँधीजी ने किस आंदोलन का उल्लेख किया है ?

(A) असहयोग आंदोलन

(B) सविनय अवज्ञा आंदोलन

(C) भारत छोड़ो आंदोलन

(D) सत्याग्रह आंदोलन

[Ans – (A)]

27. चौरी-चौरा कांड के बाद महात्मा गाँधी ने किस आंदोलन को वापस लिया

(A) असहयोग आंदोलन

(B) खिलाफत आंदोलन

(C) सविनय अवज्ञा आंदोलन

(D) भारत छोड़ो आंदोलन

[Ans – (A)]

28. असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव कांग्रेस के किस अधिवेशन में पारित हुआ ?

(A) सितंबर 1920, कलकत्ता

(B) अक्टूबर 1920, अहमदाबाद

(C) नवंबर 1920, फैजपुर

(D) दिसंबर 1920, नागपुर

PDF SARTHI.COM

[Ans – (A)]

29. महात्मा गाँधी ने किस पत्रिका का सम्पादन किया ?

(A) केसरी.

(B) मराठी

(C) यंग इंडिया

(D) बंगाली

[Ans – (A)]

30. सविनय अवज्ञा आंदोलन किस यात्रा से शुरू हुआ?

(A) 1920, भुज

(B) 1930, अहमदाबाद

(C) 1930, दांडी

(D) इनमें से कोई नहीं

[Ans – (A)]

31. काँग्रेस ने किस तिथि को पूर्ण स्वतंत्रता दिवस मनाया?

(A) 31 दिसंबर, 1929 को

(B) 26 जनवरी, 1930 को

(C) 12 मार्च, 1930 को

PDF SARTHI.COM

(D) मार्च, 1932 को

[Ans – (A)]

32. नेहरू रिपोर्ट किस वर्ष प्रस्तुत किया गया?

(A) 1927 में

(B) 1928 में

(C) 1929 में

(D) 1931 में

[Ans – (A)]

33. साइमन कमीशन किस वर्ष भारत

आया था?

(A) 1919

(B) 1927

(C) 1928

(D) 1930

[Ans – (A)]

PDF SARTHI.COM

34. पूर्ण स्वराज्य की माँग का प्रस्ताव काँग्रेस के किस वार्षिक अधिवेशन में पारित हुआ?

(A) 1929, लाहौर

(B) 1931, कराँची

(C) 1933, कलकत्ता

(D) 1937, बेलगाँव

[Ans – (A)]

35. सविनय अवज्ञा आंदोलन कब शुरू हुआ?

(A) 1920

(B) 1930

(C) 1935

(D) 1942

[Ans – (A)]

36. इनमें से किसे बादशाह खान या सीमांत गाँधी कहा जाता है?

(A) महात्मा गाँधी

(B) आगा खान'

(C) खान अब्दुल गफ्फार खान

(D) सैयद अहमद

[Ans – (A)]

37. नमक कानून कब भंग हुआ?

(A) 5 अप्रैल, 1930 को

(B) 6 अप्रैल, 1930 को

(C) 7 अप्रैल, 1930 को

PDF SARTHI.COM

(D) 8 अप्रैल, 1930 को

[Ans – (A)]

38. गाँधीजी ने दांडी यात्रा किस तिथि को आरंभ की?

(A) 12 जनवरी, 1930 को

(B) 12 फरवरी, 1930 को

(C) 12 मार्च, 1930 को

(D) 12 अप्रैल, 1930 को

[Ans – (A)]

39. नमक कानून भंग करने के लिए गाँधीजी ने किस स्थान को चुना?

(A) दांडी

(B) भड़ाँच

(D) साबरमती

(C) अमरावती

[Ans – (A)]

40. चौकीदारी कर के विरोध में कहाँ आन्दोलन हुआ था?

(A) बिहार में

(B) पंजाब में

(C) उत्तर प्रदेश में

(D) गुजरात में

PDF SARTHI.COM

41. मैक्डोनाल्ड ने "सांप्रदायिक निर्णय" की घोषणा किस वर्ष की थी?

(A) 1930 में

(C) 1932 में

(B) 1931 में

(D) 1935 में

42. 1932 में पूना समझौता किनके बीच हुआ?

(A) गाँधी और अंबेदकर में

(B) गाँधी और जिन्ना में

(C) परिवर्तनवादी और अपरिवर्तनवादी में

(D) इनमें से कोई नहीं

[Ans – (A)]

43. किस समझौता को दिल्ली समझौता के नाम से जाना जाता है?

(A) गाँधी-इरविन समझौता

(B) गाँधी-अंबेदकर समझौता

(C) कांग्रेस-लीग समझौता

(D) कांग्रेस-समाजवादी समझौता

44. अखिल भारतीय किसान सभा का गठन कहाँ और कब हुआ?

(A) बिहटा, 1928

(B) सोनपुर, 1929

PDF SARTHI.COM

(C) लखनऊ, 1936

(D) पटना, 1937

[Ans – (A)]

45. गाँधीजी ने सत्याग्रह का पहला प्रयोग कहाँ किया था?

(A) अहमदाबाद में

(B) बारदोली में

(C) चंपारण में

(D) खेड़ा में

[Ans – (A)]

46. 'अखिल भारतीय किसान सभा' का गठन 1936 ई० में कहाँ हुआ था?

(A) बंबई

(B) इलाहाबाद

(C) पटना

(D) लखनऊ)

[Ans – (A)]

47. किसान दिवस किस दिन मनाया गया?

(A) 1 सितम्बर, 1936

(B) 2 सितम्बर, 1937

(C) 1 सितम्बर, 1938

PDF SARTHI.COM

(D) 2 सितम्बर, 1939

[Ans – (A)]

48. तिनकठिया प्रणाली किन पर लागू हुई थी?

(A) उद्योगपतियो

(B) व्यापारियों

(C) श्रमिकों

(D) किसानों

[Ans – (A)]

49. बल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि किस किसान आंदोलन के दौरान दी गई?

(A) बारदोली

(B) अहमदाबाद

(C) खेड़ा

(D) चंपारण

[Ans – (A)]

50. 'ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन' कांग्रेस (AITUC) की स्थापना किस वर्ष हुई?-

(A) 1925

(B) 1920

(C) 1930

(D) 1922

PDF SARTHI.COM

[Ans – (A)]

51. ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कॉंग्रेस के अध्यक्ष कौन थे?

(A) सरदार पटेल

(B) लाला लाजपत राय

(C) सुभाष चन्द्र बोस

(D) जवाहर लाल नेहरू

[Ans – (A)]

52. टाना भगत आंदोलन का नेतृत्व किसने किया था?

(A) अएलूरी सीताराम राजू ने

(B) जतरा भगत ने

(C) गुदाथुर ने

(D) एम० एन० राय ने

[Ans – (A)]

53. खोंड विद्रोह कहाँ और कब हुआ था?

(A) बिहार, 1910

(B) उड़ीसा, 1914

(C) छोटानागपुर, 1917

(D) पश्चिम बंगाल, 1919

[Ans – (A)]

PDFSARTHI.COM

54. 1921 का मोपला विद्रोह किसके नेतृत्व में हुआ था?

(A) अएलूरी सीताराम राजू

(B) जतरा भगत

(C) गुंदा धुर

(D) अली मुसलियार

[Ans – (A)]

55. अल्लूरी सीताराम राजू कौन थे?

(A) एक संत

(B) उग्रवादी

(C) आंध्र का आदिवासी नेता

(D) इनमें से कोई नहीं

[Ans – (A)]

56. अली मुसालियार ने किस विद्रोह का नेतृत्व "किया था?

(A) रंपा विद्रोह

(B) खोंड विद्रोह

(C) संथाल विद्रोह

(D) मोपला विद्रोह

[Ans – (A)]

57. रम्पा विद्रोह कब हुआ?

PDF SARTHI.COM

(A) 1916

(B) 1917

(C) 1918

(D) 1919

[Ans – (A)]

58. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई ?

(A) 1885

(B) 1890)

(C) 1895

(D) 1900

[Ans – (A)]

59. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना किसने की थी?

(A) ए०ओ० ह्यूम

(B) लिटन

(C) रिपन

(D) गोलवरकर

[Ans – (A)]

60. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अध्यक्ष कौन थे?

(A) बाल गंगाधर तिलक

PDF SARTHI.COM

(B) व्योमेश चन्द्र बनर्जी

(C) लाला लाजपत राय

(D) लाला हरदयाल

[Ans – (A)]

61. बंबई में कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना कब हुई?

(A) 1933

(B) 1934

(C) 1935

(D) 1926

[Ans – (A)]

62. किसने 1920 ई० में ताशकंद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की?

(A) लाला लाजपत राय

(B) एम० एन० जोशी

(C) सत्यभक्त

(D) एम० एन० राय

[Ans – (A)]

63. बिहार समाजवादी दल की स्थापना किसने की थी?

(A) जयप्रकाश नारायण

(B) राजेन्द्र प्रसाद

PDF SARTHI.COM

(C) श्रीकृष्ण सिंह

(D) विनोबा भावे

[Ans – (A)]

64. 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' की स्थापना कब हुई थी ?

(A) 1927

(B) 1928

(C) 1926

(D) 1929

[Ans – (A)]

64. 'फारवर्ड ब्लाक' की स्थापना किसने

(A) जवाहर लाल नेहरू

(B) महात्मा गाँधी

(C) सुभाष चन्द्र बोस

(D) जय प्रकाश नारायण

[Ans – (A)]

66. मुहम्मद अली जिन्ना ने अपनी "14 - सूत्री माँग " किस वर्ष प्रस्तुत की थी?

(A) 1928 में

(B) 1929 में

PDF SARTHI.COM

(C) 1930 में

(D) 1940 में

[Ans – (A)]

67. किस अधिनियम के द्वारा मुसलमानों को पृथक प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया?

(A) 1909

(B) 1919

(C) 1926

(D) 1935

[Ans – (A)]

68. 1905 ई० में बंगाल विभाजन किसके समय में हुआ ?

(A) लॉर्ड कर्जन

(B) लॉर्ड रिपन

(C) लॉर्ड लिटन

(D) लॉर्ड डलहौजी वर्ष

[Ans – (A)]

69. ऑल इंडिया मुलिम लीग की स्थापना किस हुई?

(A) 1885

(B) 1905

(C) 1906

PDF SARTHI.COM

(D) 1911

[Ans – (A)]

70. अलीगढ़ आंदोलन का नेतृत्व किसने किया?

(A) अब्दुल लतीफ ने

(B) आगा खाँ ने

(C) सैयद अहमद खाँ ने

(D) समीउल्ला खाँ

[Ans – (A)]

71. अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो ओरिएन्टल कॉलेज की स्थापना किसने की थी?

(A) आगा खाँ

(B) सर सैयद अहमद खाँ

(C) अब्दुल लतिफ

(D) मोहम्मद अली जिन्ना

[Ans – (A)]

72. स्वराज पार्टी के अध्यक्ष कौन थे?

(A) मोतीलाल नेहरू

(B) बाल गंगाधर तिलक

(C) चितरंजन दास

(D) एनीबेसेंट

PDF SARTHI.COM

[Ans – (A)]

73. 'वेदों की ओर लौटो' नारा किसने दिया?

(A) राम कृष्ण परमहंस

(B) स्वामी विवेकानंद

(C) स्वामी दयानंद सरस्वती

(D) इनमें से कोई नहीं

[Ans – (A)]

74. हिन्दू महासभा की स्थापना कब और किसके द्वारा की गई?

(A) 1875, दयानंद सरस्वती

(B) 1915, मदन मोहन मालवीय

(C) 1923, लाला लालचंद

(D) 1925, के०बी० हेडगेवार

[Ans – (A)]

75. भारत छोड़ो आंदोलन का प्रसिद्ध नारा क्या था?

(A) इंकलाब जिंदाबाद

(B) करो या मरो

(C) फूट डालो और शासन करो

(D) वन्दे मातरम

PDF SARTHI.COM

[Ans – (A)]

76. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना कब और किसने की?-

(B) के० बी० हेडगेवार 1925

(A) गुरु गोलवलकर 1928

(C) चितरंजन दास 1929

(D) लालचंद 1930

[Ans – (A)]

77. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना कब हुई?

(A) 1923 ई०

(B) 1925 ई०

(C) 1934 ई०

(D) 1939 ई०

[Ans – (A)]

PDF SARTHI.COM

5. अर्थव्यवस्था और आजीविका

★ **औधोगिक क्रांति -** अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाध में कुछ पश्चिमी देशों के तकनीकी, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति में काफी बड़ा बदलाव आया। उत्पादन प्रणाली मे जो आधारभूत परिवर्तन हुआ जिसके फलस्वरूप इंसानों ने कृषि तथा उघोग धंधो में इंसानो के स्थान पर मशीनो का प्रयोग करना शुरू किया, इसे औघोगिक क्रांति (Industrial Revolution) के नाम से जाना गया।

"औद्योगिक क्रांति" शब्द का सबसे पहला प्रयोग "आरनोल्ड टायनबी" ने अपनी पुस्तक "लेक्चर्स ऑन दि इंस्ट्रियल रिवोल्यूशन इन इंग्लैंड" में सन् 1844 में किया। औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात वस्त्र उद्योग के मशीनीकरण के साथ आरम्भ हुआ।

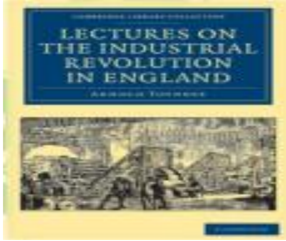

* **औधोगिक क्रांति का समय 1760 ई०-1890 ई०**

* औघोगिक क्रांति को वर्गविहीन क्रांति भी कहा जाता है।

★ **आदि औधोगिकीकरण का युग -** आदि औधोगिकरण का युग औघोगिकरण के पहले के समय को कहा जाता है। युरोप और इग्लैण्ड के कारखानो मे उत्पाद के समय के पहले का समय आदि औधोगिकरण का युग माना जाता है। इसमें सभी काम हाथ से होते थे। इस युग मे जो शहरी व्यापारी थे वे व्यापारी गाँव के किसानो से काम करवाते थे।

कारण –

1. शहरो से मांग पुरा ना होना।

2. गिल्ड (व्यापरीयो का संघ) के कारण नये व्यपारीयो को शहर में कम मौके मिलना। 3. वाडा बंदी आंदोलन ।

PDFSARTHI.COM

*** वाडा बंदी आंदोलन के कारण –**

इंग्लैंड में बाड़ाबंदी आंदोलन के दो कारण थे -

ऊन की बढ़ती माँग - अठारहवीं सदी में ऊन की माँग बढ़ने लगी थी। ऊन के अधिक उत्पादन के लिए अधिक भेड़ों को पालने की जरूरत थी। बड़े किसानों को इसमें अवसर नजर आया। भेड़ों के बड़े होते झुंड के लिए उन्हें बड़े चरागाहों की जरूरत हुई। इसलिए उन्होंने खुले खेतों पर बाड़े लगाकर उनपर कब्जा जमा लिया।

भोजन की बढ़ती माँग :- बाड़ाबंदी के दूसरे चरण में इंग्लैंड की जनसंख्या तेजी से बढ़ी। बढ़ती जनसंख्या का पेट भरने के लिए अधिक अनाज की जरूरत थी। बड़े किसानों ने खेती में विस्तार करना शुरु किया। इसके लिए उन्होंने खुले खेतों पर बाड़ाबंदी की ताकि खेती लायक जमीन को बढ़ा सकें।

*** गाँव तथा शहरों का संबंध -** उस समय गाँव तथा शहरो में लेन देन का सबंध था।

*** औधोगिकिकरण का शुरूआत इग्लैण्ड से हुआ था।**

*** बिट्रेन में औधोगिकीरण के आरंभ होने का कारण**

1. भोगौलिक स्थिती - परिवहन के साधन उपलब्ध थे। समुद्री बंदरगाह के उपस्थिति के कारण बंदरगाह अच्छे थे, जिससे कच्चा या पक्का माल ले जाने में सुविधाएँ होती थी। साथ ही साथ दुश्मनो से भी सुरक्षित था।

2. खनिज पद्वार्थो की उपलब्धता - फैक्ट्री को चलाने वाले सभी साधन वहाँ उपलब्ध थे जैसे लोहा, कोयला इत्यादि ।

PDFSARTHI.COM

3. कृषि क्रांति - उस समय ब्रिटेन में कृषि करने के नये तकनीक को अपनाया जाने लगा थे साथ में कृषि में मशीनों का उपयोग शुरू हो गया था।

4. मजदूरो की उपलब्धता - वाड़ा बंदी आंदोलन के कारन ब्रिटेन में सभी छोटे किसान मजदुर बन गये थे इसलिए मजदुर आसानी से मिल जाते थे।

5. कुशल कारीगर की उपलब्धता - किसी खास काम को करने के लिए ब्रिटेन में कुशल कारीगर भी आसानी से मिल जाते थे।

6. प्रर्याप्त पुर्जी की उपलब्धता - ब्रिटेन में लोग खेती से अच्छी कमाई कर लेते थे इसलिए इनके पास प्रर्याप्त पूंजी भी उपलब्ध था।

7. प्रगतिशील व्यापारी वर्ग - वहाँ व्यापारी वर्ग के लोग अपने-अपने व्यापार में पूंजी निवेश करना चाहते थे जिससे अधिक से अधिक पैसा कमाया जा सके

8. संयुक्त व्यापारी कंपनी की स्थापना - वहाँ व्यापारी वर्ग के लोग पार्टनरशीप बीजनेस पर थे। भी अधिक निवेश करते

9. अनुकुल राजनीतिक स्थितियां - व्यापार के लिए ब्रिटेन में अनुकूल राजनितिक परिस्थिति था जो व्यापार को वढावा देते थे।

10. राजकीय संरक्षण - वहाँ के व्यापारियों को वहाँ के सरकार के द्वारा संरक्षण प्रदान किया जाता था जिससे व्यापारी लोग स्वतंत्र व्यापार कर सके।

11. जनसंख्या वृद्धि - ब्रिटेन में 18 वीं शताब्दी के समय तक जनसंख्या में अच्छी खासी वृद्धि हो गयी थी जिससे न तो मजदुर का दिक्कत होता था और न ही समान बेचने में। **12. 18 वीं शताब्दी के युरोपीय युद्ध -** ब्रिटेन में उस समय तक हथियार बनने शुरू हो गये थे जिससे वह दुसरे देशों जैसे- यूरोप को हथियार बेचना शुरू कर दिया था जिससे अधिक मात्रा में पूंजी आता था।

PDFSARTHI.COM

13. **वैज्ञानिको का योगदान -** वैज्ञानिकों ने नये-नये तरह के मशीनों का आविष्कार किया जिससे काम आसानी से हो।

14. **उपनिवेशवाद -** दुसरे देशों पर कब्जा करके व्यापार करना।

★ नये यात्रिक अविष्कार –

18वीं शताब्दी नये नये मशीनो का अविष्कार हुआ जिसने औघोगिक क्षेत्र मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाया था। जैसे - सूति कपड़ों के उघोग में, खनन में, परिवहन मे इत्यादि । **★ सूती वस्त्र उघोग -** कपड़ो की बुनाई तेजी से होने के कारण धागो की मांग बढने लगी। जिसको देखते हुए **1770 में एक वैज्ञानिक जेम्स हारग्रीव्ज ने एक मशीन बनाया जिस मशीन का नाम स्पिनिंग जेनी।** यह मशीन धागो की कताई करता था।

* मशीनो के आविष्कार से पहले सूती वस्त्र उघोग मजदूरो मे आश्रित था। जो अपने हाथो से चरखे के माध्यम से कपड़ो को तैयार करते थे। लेकिन **1773 में लंकाशायर के वैज्ञानिक जॉन के ने एक मशीन बनाया जिसका नाम रखा फ्लाइंग शटल मशीन ।** जो कपड़ो की बुनाई तेजी से करता था।

*** 1769 में रिचर्ड आर्कराइट नाम के एक वैज्ञानिक के द्वारा एक मशीन बनाया जिसका नाम था वाटरफ्रेम या स्पीनिंग फ्रेम जिससे धागो की कताई बहुत तेजी से होती थी।** इस तरह से कई मशीने बनी जिसने इग्लैण्ड के सुती वस्त्र उघोगो को एक नयी बुलंदी पे पहुचा दिया।

★ वाष्प शक्ति उपयोग - शुरुआत में फैक्ट्री की मशीनो को चलाने के लिए पानी की सहायता लिया जाता था। बाद में टॉमस न्युकॉन नाम के वैज्ञानिक ने वाष्प इंजन को बनाया जो बहुत खर्चीला होने

PDF SARTHI.COM

के कारण ज्यादा उपयोगी साबित नही हुआ। तो पुनः **1769 मे एक नया वाष्पइंजन बना जिसे जेम्स वाट नाम के वैज्ञानिक ने बनाया था।**

★ **लौह उघोग -** लौह उघोग का बहुत विकास हुआ। इस्पात का सिख लीया था। उत्पादन लोगो ने

★ **खाद्दान उघोग -** साधारण लैंप से हमेशा खाद्दानों में आग लगने का खतरा बना रहता था जिससे मजदुर लोग काफी डरे हुए रहते थे। अतः 1815 ई० में हम्फ्रीडेवी ने सेफ्टी लैंप बना दिया जिससे खाद्दान उघोग को बहुत विकास हुआ।

★ **रसायनिक उघोग -** होने होने लगा। कपड़ो को धोने तथा रंगने के लिए अलग-अलग तरह के सोडा, रंगो का प्रयोग

★ **परिवहन उघोग -** फैक्ट्रीयो से कच्चे माल लाने ले जाने के लिए सड़को का निर्माण होने लगा। सड़को पे चलने के लिए गाड़ियो का निर्माण होने लगा। एक देश से दूसरे देश ले जाने के लिए समुद्री जहाज का उपयोग होने लगा।

★ **इंग्लैण्ड में कारखानेदारी प्रथा -** पूजीपंती लोगो ने बड़े से रूम / जगहो पर मशीने लगाकर मजदूरो से काम करवाने लगे जिसे कारखानो का नाम दिया गया।

★औधोगिक परिवर्तन का स्वरूप

1. सुती वस्त्र उघोग - इग्लैण्ड का सुत्री वस्त्र उघोग औघोगिकरण के फलस्वरूप एक अलग ऊचाई पर पहुंच गया। 19 वी० शातब्दी (1850 ई० तक) इग्लैण्ड का सबसे बड़ा उघोग कपड़ा उघोग था।

PDF SARTHI.COM

2. लौहा और इस्पात - उघोग लौहा और इस्पात उघोग का बहुत तरक्की हुआ। नयी-नयी मशीनो का निर्माण होने लगा जिसके फलस्वरूप लौह इस्पातो का उपयोग अत्यधिक होने लगा। दूसरे देशो में जाने के लिए जहाजों का निर्माण करने लगा। सड़को परिवहन के निर्माण मे लौह इस्पातो का उपयोग होता था।

3. परंपरागत उघोगो का महत्व - हाथो से किये जाने वाले कामो का महत्व कम नही हुआ था।

4. परंपरागत उघोगो में परिवर्तन - हाथ के स्थान पे छोटे-छोटे मशीनो का इस्तेमाल होने लगा था।

5. तकनीकी बदलाव की धीमी गति - मशीनो का निर्माण मे धीमी गति।

★ औधोगिकीकरण का इग्लैण्ड पर प्रभाव –

1. कुटीर उधोग के जगह पर कारखानेदारी प्रथा का विकास अधिक तेज गति से होने लगा था।

2. नगरो के स्वरूप मे परिवर्तन होने लगा जैसे सडको का निर्माण होने लगा, जनसंख्या घनत्व बढ गया।

3. पूजींपती वर्ग का उदय औधोगिकीकरण के कारण पूंजीपति वर्गों का उदय होने लगा था।

4. श्रमिक वर्ग का उदय कारखाने में काम करने वाले श्रमिक वर्गों की संख्या बढ़ने लगी।

5. बाल श्रम के प्रथा का विकास कारखानों के मालिक ने अपना अधिक मुनाफा कमाने के लिए छोटे-छोटे बच्चों से कल कारखानो में काम करवाया जाने लगा।

6. स्त्री श्रम का विकास स्त्रियों ने भी पैसा कमाने के लिए कारखानों में काम करना शुरू कर दिया।

7. श्रमिक आंदोलन का विकास कम मजदूरी में मजदूरो से काम करवाते थे, मजदूरों के स्वास्थ्य पर ध्यान नही दिया जाता था। जिसका मजूदरो ने जमकर विरोध किया।

PDFSARTHI.COM

8. उपनिवेशावाद का विकास शुरुआत में इंगलैंड व्यापर के उद्देश्य से दुसरे देश में जाते थे लेकिन बाद में उसी देश पर कब्जा कर लेते थे।

9. हाथ से काम करने वाले श्रमिक - हाथ से काम करने वाले श्रमिको की स्थिति खराब नही थी, इनकी मांग बनी रही। क्योकिं इसके कुछ कारण है जैसे –

1. मजदूर सस्ते थे।

2. मशीनो का लागत ज्याद एवं रख रखाव बहुत खर्चीला था।

3. मजदूरो की छटनी कर सकते है।

4. कुछ वस्तुएँ केवल कुशल कारीगर ही बना सकते थें।

5. अमीर लोगो को हाथ से बने वस्तुए ही ज्यादा पसंद आते थे।

★ श्रमिको की आजीवका एवं उनका जीवन –

1. **शहरो मे काम ढुंढना और रहने की समस्या -** जब औधोगिकरण हुआ और बड़े बड़े मशीने लगने लगे तब लोग गाँवों से काम ढुढ़ने की तलाश में शहर आने लगे। काम न मिलने तक शहरों में रहना बहुत मुश्किल था, वे सरकारो द्वारा बनाये गये रैन बसेरो में या किसी पुल के नीचे अपनी राते बिताते थे।

2. **छटनी की समस्या -** काम मंदा होने पर मजदूरो को कारखानो से निकाल दिया जाता था।

3. **कम मजदूरी -** शहरी मजदूरो की एक बहुत बड़ी समस्या थी कम मजदूरी का होना। उनसे काम बहुत लिया जाता था, लेकिन मजदूरी बहुत कम दिया जाता था। जिससे उनका भरण पोषण में भी बहुत दिक्कत होती थी।

PDF SARTHI.COM

4. मजदूरो के द्वारा मशीनीकरण का विरोध - इग्लैण्ड में जब बड़े बड़े मशीनो का इस्तेमाल होने लगा तो मजदूरो को काम मिलना कम हो गया इसी कारण मजदूर मशीनो का विरोध करने लगे। मशीनो को उखाड़ने लगे, मशीनों को जलाना शुरू कर दिया।

5. श्रमिक आदोलन - जब मजदूरो ने फैक्ट्री में काम करना शुरू किया तो कारखानो के मालिक उन्हे कम मजदूरी में काम करवाने लगे। जिसके कारण श्रमिक इसका विरोध करने लगे और यह आंदोलन का रूप लेने लगा। 1830 48 के बीच इग्लैण्ड में कई श्रमिक आदोलन हुए। लेकिन इन आंदोलनो का कोई प्रभाव नही पड़ा।

* 1838 में इंगलैंड के मजदूरों के द्वारा एक आंदोलन हुआ जिसे चार्टिस्ट आंदोलन कहते थे, जिससे मजदूरो को कुछ सहुलियत मिली।

* इंग्लैंड में मजदूरो के द्वारा चलाया गया एक और आंदोलन था जिसे 10 घंटे का आदोलन कहा गया था। इस आदोलन के द्वारा मजदूर चाहते थे कि उनसे 10 घंटे का काम लिया जाय, ज्यादा काम नही लिया जाय।

★ भारत में निरूघोगिकरण –

• कल कारखानों की स्थापना के बाद भारत में कुटीर उद्योग बन्द होने की कगार पर पहुँच गया ? जिसे इतिहासकारों ने निरुद्योगीकरण की संज्ञा दी है।

1. इंग्लैंड में आयात कर लगाना।

2. चार्टर एक्ट (1813) के तहत निर्यात कर को हटा दिया गया।

★ भारतीय वस्त्र उघोग –

PDFSARTHI.COM

भारत का वस्त्र उघोग ईशा० की शताब्दी से लेकर 18 वीं शताब्दी तक अपने चरम सीमा पर था। भारतीय बुनकर के द्वारा बनाये गये कपड़ों की माँग बहुत ज्यादा थी। इसलिए बाहरी व्यापारी भारतीय मजदूरो को ददनी (अग्रिम राशी) देकर कपडें बनवाते थे और दूसरे देशो को निर्यात करते थे।

★ युरोपीय व्यापारिक कंपनीयो का प्रभाव –

1. **गुमुश्तो की नियुक्ती -** ये एक अंग्रेजी कर्मचारी थे। ये बुनकरो से सीधा संबंध बनाते थे। बुनकर को ददनी (अग्रिम राशी) देकर एक निश्चित समय पर माल (कपड़ा) उठा लेते थे। गुमुश्तों लोग बुनकरों के लिए –

- कर्ज की व्यवस्था भी करते थे।
- माल की गुणवता की जांच भी करते थे।

नयी व्यवस्था का बुनकरो पर प्रभाव –

1. शुरुआत में उत्पादन में काफी वृद्धि हुई –
2. बाद में बुनकरो और गुमुशतो में टकराव बढ़ते गया।
3. कुछ बुनकरों ने अपने अंगूठों को काट लिया और धीरे-धीरे बुनकरो का पलायन होने लगा –

★ भारत में औधोगिकीकरण –

भारत में सबसे पहला मील 1851 ई० में बंबई में सूती कपड़ा मील खोला गया था। जिसे गुजराती तथा पारसी लोगों ने मिल कर खोला था। जिसमें सबसे पहला मील कावस जी नाना जी दाभार ने खोला था। ये पारसी समुदाय के थे। 1862 ई० तक बंबई में चार कपड़े मील खुल गयी। लेकिन आगे चलकर अहमदाबाद, मद्रास, बंबई,

- कानपुर मे भी कपड़ा मिल खुलने लगा।

PDFSARTHI.COM

- कानपुर मे पहला मील लगा - 1860
- 1854 - 1880 तक 30 मील लग गयी थी।
- 1880 - 1895 तक 39 मील लग गयी थी।
- 1895 - 1914 तक 144 मील लग गयी थी।
- 1917 में पहला जूट मील बंगाल / कलकत्ता में खुला।

★ भारतीय उघमी –

जमेशेद जी जीजी भॉय - यह पारसी थे। इन्होने जहाजो एक विशाल समूह बना लिया। **द्वारका नाथ टैगोर -** यह बंगाली थी। इन्होने 6 संयुक्त कंपनीया खोली। लेकिन बाद में इन सभी उद्धमी को सताना शुरू किया और इनका धंधा बंद हो गया।

★ मजदूरो की उपलब्धता –

1. कुटीर उघोग - कुटीर उघोग लगभग समाप्त हो गये। लोग बेरोजगार हो गये। किसानो की खेती भी अच्छी नही चल रही थी। ऐसे मे लोग शहर की तरफ पलायन करने लगे और फैक्ट्रीयो मे काम पकड़ने लगे। इसलिए मजदूर आसानी से मिलने लगे। **जॉर्बर -** मजदूरों को काम पर रखने के लिए यह लोगो को जॉब दिलाने का कार्य करते थे और बदले में लोगो से पैसे लेते थे।

★ भारत में औधौगिक विकास की विशेषताएं -

1. निर्यात उघोग को बढावा - लोगो ने कच्चा माल उत्पादित करना शुरू किया और वागवान लगाना शुरू किया, नील की खेती की, कोयला का उघोग शुरू किया।

2. भारतीय उघमियो में प्रतिस्पर्धा का अभाव - प्रतिस्पर्धा के अभाव के कारन भारतीय उधोग आगे नहीं बढ़ पाए।

PDFSARTHI.COM

3. स्वदेशी आंदोलनो का प्रभाव - खुद से कपडा बनाना शुरू कर दिया। भारतीय उधोग पर स्वदेशी आंदोलनों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था। और लोग

4. प्रथम विश्व युद्ध के बाद औघोगिकारण में तेजी - प्रथम विश्व युद्ध के बाद औधोगिकारण में काफी तेजी देखने के लिए मिला जिसका कुछ कारण निम्न है।

1. प्रथम विश्व युद्ध के इग्लैण्ड के समय सेनाओ की आवश्यकता के अनूकूल समान बनने लगे जिससे वे भारत में कपडें भेजने में असमर्थ हो गये। इसका फायदा भारतीय कंपनीयो को हुआ और वे अपनी वस्तुओ का निर्यात करने लगे।

2. प्रथम विश्व युद्ध के बहुत दिनो तक होने के कारण इग्लैण्ड के सैनिको को उनकी आवश्कयता की चीजो की आपूर्ति में कमी होने लगी। इग्लैण्ड की कंपनी उतना माल तैयार नहीं कर पा रही थी, तभी भारतीये कंपनी अपने सामानो का निर्यात इग्लैण्ड करने लगे।

★ भारत में औधोगिकीकरण का प्रभाव

1. उधोगों का विकास – कई शहरों में नये-नये कारखाने खुलने लगे जिसमे बड़ी-बड़ी मशीनों का प्रयोग होने लगा।

2. नगरीकरण का विकास - जहाँ पर उधोग लगते थे वहाँ पर बाहर से भी मजदुर आकर काम करने लग जाते थे और धीरे-धीरे वह स्थान नगर बन जाता था।

3. कुटीर उद्योगो की अवनती - जब उधोग लगने लगे तो कुटीर उधोग धीरे-धीरे समाप्त हो गये।

4. कृषि एवं उधोग का संतुलन नष्ट होना - कुटीर उधोग बंद हो जाने से कृषि कार्य की तरफ लोग जयादा आकर्षित होने लगे और यहाँ कृषि एवं उधोग के बीच संतुलन नष्ट होने लगा।

5. सामाजिक विभाजन - समाज दो वर्गों में बंट गया पुजीपंती वर्ग और मजदूर / श्रमिक वर्ग

PDFSARTHI.COM

6. स्लम पद्धति का उदय - छोटे छोटे जगहो में ज्यादा लोग रहने लगे। जैसे बम्बई का चॉल इत्यादि।

7. श्रमिक आदोलन शुरू हुआ और कुछ कानून बने जैसे –

- बाल श्रम को रोका जाना चाहिए।
- गभर्वत महिलाओ से काम नही लेना।
- समय-समय पर मजदूरी बढ़ाना और न्यूनतम मजदूरी रखना।
- काम का समय कम करना।

लघु और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. औद्योगीकरण ने मजदूरों की आजीविका को किस तरह प्रभावित किया था?

उत्तर - औद्योगीकरण और कारखानेदारी प्रथा के विकास का मजदूरों की आजीविका पर बुरा प्रभाव पड़ा। जैसे- शहरों में उन्हें काम ढूँढ़ने तथा आवास तथा छँटनी की समस्या से जुझना पड़ा। उन्हें कम पारिश्रमिक पर ही लंबे समय तक काम करना पड़ता था। बेकारी की समस्या से त्रस्त मजदूर मशीनीकरण का विरोध करने लगे। वे संगठित होकर अपनी स्थिति में सुधार के लिए आंदोलन करने लगे।

2. औद्योगिक क्रांति के किन्हीं दो नकारात्मक प्रभावों को बताएँ।

उत्तर - औद्योगिक क्रांति के दो नकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं-

(i) औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर उत्पादन होना शुरू हुआ जिसकी खपत के लिए यूरोप में उपनिवेशों की होड़ शुरू हो गयी और आगे चलकर इस उपनिवेशवाद ने साम्राज्यवाद का रूप ले लिया।

PDF SARTHI.COM

(ii) औद्योगिक क्रांति के कारण समाज में पूँजीपति वर्ग एवं श्रमिक वर्ग का विकास हुआ। उद्योगों पर पूँजीपति वर्ग का नियंत्रण स्थापित हो गया एवं मजदूरों का शोषण आरंभ किया जिससे वे शोषण, गरीबी और भुखमरी के शिकार हो गए।

3. स्लम पद्धति की शुरुआत कैसे हुई ?

उत्तर – छोटे, गंदे और बिना सुविधा वाले स्थानों में जहाँ फैक्ट्री मजदूर निवास करते है वैसे आवासीय स्थलों को स्लम कहा जाता है। औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप बड़े-बड़े कारखाने स्थापित हुए जिसमे काम करने के लिए बड़ी संख्या में गाँवों से मजदूर पहुँचने लगे। वहाँ रहने की कोई व्यवस्था नहीं थी। मजदूर कारखाने के निकट रहें, इसलिए कारखानों के मालिकों ने उनके लिए छोटे-छोटे मकान बनवाए। जिसमें सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। इन मकानों में हवा, पानी तथा रोशनी तथा साफ-सफाई की व्यवस्था भी नहीं थी। इस प्रकार औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप स्लम पद्धति की शुरुआत हुई।

4. औद्योगिकीकरण से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - औद्योगिकीकरण उस औद्योगिक क्रांति की देन है जिसमें वस्तुओं का उत्पादन मानव द्वारा न होकर मशीनों के उत्तर द्वारा होता है। इसमें उत्पादन बृहत् पैमाने पर होता है और जिसकी खपत के लिए बड़े बाजार की आवश्यकता होती है। अतः औद्योगिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें उत्पादन मशीनों के द्वारा कारखानों में होता है। इस प्रक्रिया में घरेलू उत्पादन पद्धति का स्थान कारखाना पद्धति ले लेता है।

5. घरेलू और कुटीर उद्योग को परिभाषित करें।

उत्तर - स्थानीय स्तर पर चलाए गये उद्योग घरेलू और कुटीर उद्योग कहे जाते हैं। इनमें अपेक्षाकृत कम पूँजी और श्रम लगता है। ये राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति के शक्तिशाली औजार है। कुटीर उद्योग जनसंख्या के बड़े शहरों में पलायन को रोकता है।

PDFSARTHI.COM

6. औद्यौगिक क्रांति क्या है ?

उत्तर - अट्ठारहवीं शताब्दी में कुछ पश्चिमी देशों में उत्पादन प्रणाली में जो आधारभूत परिवर्तन हुआ जिसके फलस्वरूप इंसानों ने कृषि तथा उघोग धंधो में इंसानो के स्थान पर मशीनो का प्रयोग करना शुरू किया, इसे औधोगिक क्रांति (Industrial Revolution) के नाम से जाना गया।

7. औद्योगिक आयोग की नियुक्ति कब हुई? इसके क्या उद्देश्य थे ?

उत्तर - औद्योगिक आयोग की नियुक्ति सन् 1916 में हुई। औद्योगिक आयोग का मुख्य उद्देश्य था की भारतीय उद्योग तथा व्यापार के भारतीय वित्त से संबंधित उन क्षेत्रों का पता लगाना, जिसे सरकार सहायता दे सके।

8. फैक्ट्री प्रणाली के विकास के किन्हीं दो कारणों को बतायें। उत्तर फैक्ट्री प्रणाली के विकास के किन्हीं दो कारण निम्नलिखित थे-

(i) मशीनों एवं नये नये यंत्रों का आविष्कार करना

(ii) उद्योग तथा व्यापार के नये नये केंद्रों के विकास ने फैक्ट्री प्रणाली को विकसित किया।

9. विऔद्योगीकरण से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - कल कारखानों की स्थापना के बाद भारत में कुटीर उद्योग ज्यादा नुकसान वस्त्र उद्योग को हुई। बंगाल में अनेक अन्य उद्योगों को हुई हुई ई। जिसे इतिहासकारों ने निरुद्योगीकरण की पर पहुँच गया ? इससे सबसे व्यवसाय अपना लिया। यही स्थिति इसके तहत –

1. इंग्लैंड में आयात कर लगा दिया गया।

2. चार्टर एक्ट (1813) के तहत निर्यात कर को हटा दिया गया

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

PDFSARTHI.COM

1. न्यूनतम मजदूरी कब पारित हुआ और इसके क्या उद्देश्य थे?

उत्तर - मजदूरों की आजीविका एवं उसके अधिकारों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने सन् 1948 ई. में न्यूनतम मजदूरी कानून पारित किया।

उद्देश्य - न्यूनतम मजदूरी कानून 1948 के द्वारा कुछ उद्योगों में मजदूरी की दरें निश्चित की गयी। तथा दूसरी योजना में यहाँ तक कहा गया कि न्यूनतम मजदूरी उनकी ऐसी होनी चाहिए जिससे मजदूर केवल अपना ही गुजारा न कर सके, बल्कि इससे कुछ और अधिक हो, ताकि वह अपनी कुशलता को भी बनाये रख सके। इस कानून का मुख्य उद्देश्य था की मजदूरों के आर्थिक स्थिति को सुधारना।

2. कोयला एवं लौह उद्योग ने औद्योगीकरण की गति प्रदान की। कैसे ?

उत्तर - कोयला एवं लोहा उद्योग मशीनों को चलाने के लिए आवश्यक है। भारत में कोयला उद्योग 1814 से शुरू हुआ। वस्त्र उद्योग की प्रगति कोयले एवं लोहे के उद्योग पर बहुत अधिक निर्भर करती थी इसलिए अंग्रेजों ने इन उद्योगों पर अधिक ध्यान दिया।

सन् 1815 में हम्फ्री डेवी ने खानों में काम करने के लिए एक 'सेफ्टी लैंप' का आविष्कार किया। हेनरी ने एक शक्तिशाली भट्टी विकसित करके लौह उद्योग को और अधिक बढ़ावा दिया। रेलवे के निर्माण से लौह उद्योग में तेजी आयी। इस तरह कोयला एवं लौह उद्योग औद्योगीकरण को गति दिया।

3. उपनिवेशवाद से आप क्या समझते हैं? औद्योगीकरण ने कैसे उपनिवेशवाद को जन्म दिया ?

उत्तर - अधिक लाभ के उद्देश्य से विकसित देशों द्वारा अविकसित देशों पर अधिकार कर उसकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं उसके शासन प्रबन्ध पर नियंत्रण कर लेने को ही उपनिवेशवाद कहते हैं। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप सर्वप्रथम उपनिवेशवाद का आरंभ इंगलैंड से हुआ। इंगलैंड

PDFSARTHI.COM

के उद्योगों को कच्चा माल एवं वहाँ के कारखानों में निर्मित सामानों की बिक्री के लिए बाजार की आवश्यकता थी। जैसे-जैसे औद्योगीकरण की गति बढी वैसे-वैसे उपनिवेशीवाद में तेजी आई। इंगलैंड के अतिरिक्त फ्रांस और जर्मनो ने भी अपने उपनिवेश स्थापित किए। इसी क्रम में भारत इंग्लैंड के एक विशाल उपनिवेश के रूप में उभरा।

4. औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप होने वाले परिवर्तनों पर प्रकाश डालें।

उत्तर - औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। जो निम्नलिखित हैं-

(i) नगरों का विकास :- औद्योगिकीकरण के कारण बहुत तेजी के साथ नगरों का विकास हुआ।

(ii) कुटीर उद्योगों का पतन :- बड़े-बड़े कारखानों की स्थापना से लघु एवं कुटीर उद्योग का पतन हो गया। कुटीर उद्योग में तैयार माल महंगा तथा कारखाने में उत्पादित सामान सस्ता था। इसलिए कुटीर उद्योग समाप्त होने लगे क्योंकि बाजार में उसकी माँग घट गयी थी।

(iii) समाज में वर्ग विभाजन :- औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप समाज में तीन वर्गों का उदय हुआ पूँजीपति, बुर्जुआ तथा मजदूर वर्ग।

(iv) स्लम पद्धति की शुरुआत :- औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप फैक्ट्री मजदूर शहर में छोटे-छोटे घरों में रहने लगे। जहाँ किसी प्रकार की सुविधा नहीं थी। इस प्रकार स्लम पद्धति की शुरुआत हुई।

(v) उद्योगों का विकास :- औद्योगिकीकरण के कारण भारत में कारखानों की स्थापना एवं नये-नये यंत्रों का आविष्कार हुआ। उद्योगों का बड़े स्तर पर विकास हुआ। लोहा एवं इस्पात, कोयला, सीमेंट, चीनी, कागज, शीशा और अन्य उद्योग स्थापित हुए जिनमें बड़े स्तर पर उत्पादन हुआ

PDFSARTHI.COM

1. औद्योगिकीकरण से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से उत्पादन में नई तकनीक और मशीनों का व्यवहार आरंभ हुआ। मानवश्रम के स्थान पर मशीन उत्पादन का काम करने लगी। उत्पादन की यह नई प्रक्रिया औद्योगिकीकरण कहलाती है।

औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप कुटीर उद्योगों का स्थान कारखानों ने ले लिया। उत्पादन में वृद्धि हुई। वृहत् पैमाने पर उत्पादन होने से बड़े बाजार की आवश्यकता हुई। इससे पूँजीपति और श्रमिक वर्ग औद्योगिक व्यवस्था के प्रमुख स्तंभ बन गए। किसी देश के आधुनिकीकरण के लिए औद्योगिकीकरण प्रेरक तत्त्व है।

2. औद्योगिक क्रांति से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - औद्योगिक क्रांति का अर्थ उत्पादन प्रणाली में हुए उन आधारभूत परिवर्तनों से है जिनके फलस्वरूप जनसाधारण को अपनी परंपरागत कृषि, व्यवसाय एवं घरेलू उद्योग-धंधों को छोड़कर नए प्रकार के उद्योगों में काम करने तथा यातायात के नवीन साधनों के प्रयोग का अवसर मिला। यह क्रांति सर्वप्रथम इंगलैंड में 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुई। उद्योगों में मानवश्रम का स्थान मशीनों ने ले लिया। औद्योगिक क्रांति में न तो राजसत्ता का परिवर्तन हुआ और न ही रक्तपात। यह क्रांति किसी निश्चित अवधि या तिथि को नहीं हुई, इसका निरंतर विकास होता रहा।

3. 18 वीं - 19 वीं शताब्दी के यूरोपीय युद्धों ने औद्योगिकीकरण को कैसे बढ़ावा दिया ?

उत्तर - 18वीं शताब्दी में यूरोप में अनेक बड़े युद्ध लड़े गए। इनमें प्रमुख हैं सप्तवर्षीय युद्ध और अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम । इन युद्धों ने यूरोपीय राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति दुर्बल बना दी। 19वीं शताब्दी के आरंभ में नेपोलियन बोनापार्ट ने भी अनेक युद्ध किए। इनका भी यूरोपीय राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ा। इसके विपरीत ब्रिटेन को इन युद्धों से लाभ हुआ। नेपोलियन की 'महादेशीय व्यवस्था' की विफलता से इंगलैंड को आर्थिक लाभ हुआ। इससे औद्योगिकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ। इन युद्धों ने दूसरे प्रकार से भी औद्योगिकीकरण को बढ़ावा दिया। युद्धों में प्रयुक्त होनेवाले सामानों की माँग बढ़ गई। इनकी आपूर्ति के लिए कल-कारखाने खोले गए। साथ ही उनकी उत्पादन क्षमता भी बढ़ाई गई। इससे औद्योगिकीकरण को बढ़ावा मिला।

4. 1850 के बाद ब्रिटिश सरकार ने अपने उद्योगों को विकसित करने के लिए क्या किया? इसका देशी उद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - 1850 के बाद ब्रिटिश सरकार ने अपने उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए 'मुक्त व्यापार' की नीति अपनाई। भारत से आयातित निर्मित वस्तुओं पर भारी बिक्रीकर, सीमाशुल्क और परिवहन कर लगाया गया। भारत से कच्चा माल का निर्यात किया जाने लगा। साथ ही, ब्रिटिश पूँजी से भारत में कारखानों की स्थापना की जाने लगी। अँगरेजों को विशेष औद्योगिक सुविधाएँ दी गईं। इससे देशी कुटीर उद्योगों पर बुरा प्रभाव पड़ा।

5. 1850-1914 तक के भारतीय उद्योगों की क्या विशेषता थी?

उत्तर - इस अवधि में वैसे उद्योगों को बढ़ावा दिया गया जो निर्यात करनेवाले सामानों का उत्पादन करते थे और जो राष्ट्र के लिए लाभदायक थे; जैसे- पटसन और चाय। साथ ही, वैसे माल का भी उत्पादन हुआ जिसमें विदेशी प्रतिद्वंद्विता अधिक नहीं थी; जैसे- मोटा कपड़ा। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय उद्योगों को लाभ हुआ। उनमें उत्पादित सामान के लिए देश-विदेश में मंडी मिली, ठेके मिले तथा कच्चा माल कम मूल्य पर उपलब्ध हुआ। उत्पादित माल के मूल्य भी बढ़ गए।

6. 'निरुद्योगीकरण' से आप क्या समझते हैं? भारतीय संदर्भ में इसकी व्याख्या करें।

उत्तर - ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण देशी उद्योगों में लगातार गिरावट आती गई। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मैनचेस्टर में बने कपड़ों का बड़े पैमाने पर आयात किया गया। इससे हथकरघा उद्योग बंदी के कगार पर पहुँच गया। सबसे बुरी स्थिति वस्त्र उद्योग की हुई। बंगाल में अनेक बुनकरों ने काम बंदकर दूसरा व्यवसाय अपना लिया। यही स्थिति अन्य उद्योगों की भी हुई। इस प्रकार, भारतीय कुटीर उद्योग समाप्त हो गए। इसे ही भारत में निरुद्योगीकरण कहा जाता है।

7. स्वदेशी आंदोलन का उद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - 1905 के बंग-भंग आंदोलन में स्वदेशी और बहिष्कार की नीति से भारतीय उद्योग लाभान्वित हुए। धागा के स्थान पर कपड़ा बनाना आरंभ हुआ। इससे वस्त्र उत्पादन में तेजी आई। 1912 तक सूती वस्त्र का उत्पादन दोगुना हो गया। उद्योगपतियों ने सरकार पर दबाव डाला कि वह आयात शुल्क में वृद्धि करे तथा देशी उद्योगों को रियायत प्रदान करे। निर्यात में आई कमी की क्षतिपूर्ति के लिए भारतीय उद्यमियों ने सूती मिलों में वस्त्र का उत्पादन बढ़ा दिया। कपड़ा उद्योग के अतिरिक्त अन्य छोटे उद्योगों का भी विकास हुआ।

8. घरेलू उद्योग और कुटीर उद्योग को परिभाषित करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - घरेलू उद्योग और कुटीर उद्योग स्थानीय स्तर पर चलाए जाते हैं। इनमें अपेक्षाकृत कम पूँजी लगती है। गाँधीजी के अनुसार, ये भारतीय सामाजिक दशा के अनुकूल हैं। ये राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति तथा संतुलित क्षेत्रवार विकास के शक्तिशाली औजार हैं। ये उपभोक्ता वस्तुओं का निर्माण कम पूँजी से करते हैं। इनसे बड़े स्तर पर रोजगार उपलब्ध होते. हैं। इनसे बड़े शहरों में जनप्रवाह को रोकने में भी सहायता मिलती है।

9. भारत में न्यूनतम मजदूरी कानून कब पारित हुआ ? इसके उद्देश्य क्या थे?

उत्तर - भारत सरकार ने श्रमिकों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए 1948 में यह कानून पारित किया। इसके अनुसार कुछ चुने हुए उद्योगों में मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी देना आवश्यक बना दिया गया। प्रथम पंचवर्षीय योजना में इसे महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में यह स्पष्ट रूप से कहा गया कि मजदूरों को कम-से- कम इतनी मजदूरी अवश्य मिलनी चाहिए जिससे वे अपना गुजारा कर सकें तथा साथ ही अपनी कार्यकुशलता भी बनाए रख सकें। तीसरी योजना में मजदूरी बोर्ड की स्थापना की गई। साथ ही बोनस देने के लिए बोनस आयोग बनाया गया।

अर्थव्यवस्था और आजीविका - औद्योगिकीकरण का युग

1. औद्योगिक क्रांति के कारणों का उल्लेख कीजिए ।

अथवा, औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम इंगलैंड में ही क्यों हुई ?

उत्तर - औद्योगिक क्रांति सबसे पहले इंगलैंड में हुई। इसके निम्नलिखित कारण थे।

(i) **इंगलैंड की भौगोलिक स्थिति** - इंगलैंड की भौगोलिक स्थिति उद्योग-धंधों के विकास के अनुकूल थी। कटे हुए समुद्री किनारों के कारण उसके पास अच्छे बंदरगाह थे। इससे उद्योगों के लिए कच्चे माल के आयात एवं निर्मित वस्तुओं के निर्यात की सुविधा उपलब्ध थी।

(ii) **खनिज पदार्थों की उपलब्धता** - यहाँ खनिज पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। इंगलैंड के उत्तरी और पश्चिमी भाग में उद्योगों के लिए लोहा और कोयला की खदानें थीं।

PDFSARTHI.COM

(iii) कृषि क्रांति - 18वीं शताब्दी में इंगलैंड में कृषि क्रांति तथा बाड़ाबंदी से अतिरिक्त उत्पादन हुआ जिससे औद्योगिक क्रांति में सहायता मिली। कारखानों के लिए श्रमिक सहजता से मिल गए।

(iv) कुशल कारीगर - इंगलैंड में कुशल कारीगर भी थे। इससे औद्योगिकीकरण में सहायता मिली।

(v) पूँजी की उपलब्धता - भूमिपतियों और व्यापारियों के पास पर्याप्त पूँजी उपलब्ध थी। इसे उनलोगों ने उद्योगों में लगाया।

(vi) वैज्ञानिकों का योगदान - वैज्ञानिकों ने नए आविष्कार किए जिससे वस्त्र उद्योग, परिवहन, खनन उद्योग एवं संचार व्यवस्था में प्रगति हुई। मशीनों का व्यापक रूप से व्यवहार हुआ।

(vii) उपनिवेशों से सहायता - उपनिवेशों; जैसे - भारत से इंगलैंड को उद्योगों के लिए कच्चा माल तथा निर्मित वस्तुओं के लिए बड़ा बाजार मिल गया। इससे औद्योगिकीकरण को बढ़ावा मिला।

(viii) यूरोपीय युद्ध - 18वीं शताब्दी के यूरोपीय युद्धों के लिए युद्ध सामग्रियों की माँग बढ़ गई। इनकी आपूर्ति के लिए कारखाने खुले एवं उद्योग स्थापित किए गए।

(ix) राजकीय संरक्षण - 'मुक्त व्यापार' और 'अहस्तक्षेप की नीति' अपनाकर ब्रिटिश सरकार ने उद्योगों और व्यापार को बढ़ावा दिया। इससे औद्योगिकीकरण का विकास हुआ।

2. औद्योगिकीकरण ने सिर्फ आर्थिक ढाँचे को ही प्रभावित नहीं किया, बल्कि राजनीतिक परिवर्तन का भी मार्ग प्रशस्त किया। कैसे?

उत्तर - औद्योगिकीकरण ने राजनीतिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। यह परिवर्तन दो स्तरों पर हुआ। सर्वप्रथम, औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की भावना विकसित हुई । अपने देश के उद्योगों को चलाने के लिए, कच्चे माल की आपूर्ति तथा कारखानों में निर्मित सामानों की खपत के लिए बाजार की आवश्यकता पड़ी। अतः, प्रत्येक यूरोपीय राष्ट्र अधिक-से-अधिक क्षेत्र पर अधिकार करने के लिए संघर्षरत हो गया। विजित क्षेत्रों में अपने-अपने उपनिवेश स्थापित कर वहाँ के संसाधनों का उपयोग करने की होड़ भी लग गई। इस साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी होड़ में ब्रिटेन तथा फ्रांस अग्रणी थे। साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा ने आगे चलकर विश्वयुद्धों को भी जन्म दिया।

PDFSARTHI.COM

द्वितीय, औद्योगिकीकरण के कारण उत्पन्न समस्याओं के निराकरण का उत्तरदायित्व भी अब सरकार ने अपने ऊपर ले लिया। 1832 में सुधार अधिनियम पारित किया गया। इससे कुछ राहत मिली। 1838 में मताधिकार के लिए चार्टिस्ट आंदोलन हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इंगलैंड की लेबर पार्टी की सरकार ने श्रमिकों की स्थिति में सुधार के लिए अनेक प्रयास किए। भारत में 1881 में पहला फैक्टरी कानून बनाकर मजदूरों की स्थिति में सुधार किया गया। 1948 में न्यूनतम मजदूरी ऐक्ट पारित हुआ। तृतीय पंचवर्षीय योजना में मजदूरी बोर्ड तथा 1962 में राष्ट्रीय श्रम आयोग की स्थापना की गई। मजदूर संगठनों पर विभिन्न राजनीतिक दलों का प्रभाव स्थापित हुआ।

3. औद्योगिक क्रांति का इंगलैंड पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - अथवा, औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप होनेवाले परिवर्तनों पर प्रकाश डालें। औद्योगिक क्रांति ने इंगलैंड के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन को - व्यापक रूप से प्रभावित किया। इसके निम्नलिखित प्रभाव पड़े।

(i) **कारखानेदारी (फैक्टरी) व्यवस्था का उदय और विकास** - मशीनीकरण तथा वृहत उत्पादन ने कारखानेदारी प्रथा को जन्म दिया। इंगलैंड में कारखानों का जाल-सा बिछ गया ।

(ii) **नगरों के स्वरूप में परिवर्तन** - औद्योगिकीकरण के कारण आधुनिक नगरों का उदय हुआ। अनेक नगर औद्योगिक केंद्र बन गए। लंकाशायर, मैनचेस्टर सूती -वस्त्र उद्योग के केंद्र बन गए।

(iii) **पूँजीपति वर्ग का विकास** - समाज में एक नए पूँजीपति वर्ग का उदय हुआ। कुलीन एवं व्यापारी वर्ग अतिरिक्त पूँजी उद्योगों में निवेश करने लगा। इससे उनका राजनीतिक एवं सामाजिक सम्मान बढ़ गया।

(iv) **श्रमिक वर्ग का उदय** - कारखानेदारी और औद्योगिकीकरण ने फैक्टरी श्रमिक वर्ग को भी जन्म दिया। कारखानेदारी प्रथा में श्रमिकों का जीवन कष्टदायक बन गया। पूँजीपति उनका शोषण करते थे।

(v) **स्त्री-श्रम का विकास** - कारखानों में कम मजदूरी पर बड़ी संख्या में स्त्रियों को भी काम में लगाया गया।

(vi) **बाल - श्रम की प्रथा** - स्त्रियों के समान बच्चों को भी कम मजदूरी पर कारखानों में नियुक्त किया गया। स्त्रियों और बाल-श्रमिकों को भी शोषण का शिकार बनना पड़ा।

PDFSARTHI.COM

(vii) श्रमिक आंदोलन का उदय - शोषित और पीड़ित श्रमिकों ने अपनी स्थिति में सुधार के लिए हड़ताल एवं प्रदर्शन का सहारा लिया। इससे श्रमिक आंदोलन का विकास हुआ। सरकार को इनकी माँगों की ओर ध्यान देना पड़ा। 1832 में सुधार अधिनियम पारित हुआ। मजदूरों ने संगठित होकर चार्टिस्ट आंदोलन भी चलाया।

(viii) स्लम-पद्धति का विकास - औद्योगिकीकरण ने स्लम-पद्धति को भी जन्म दिया। शहरों में श्रमिकों के आवास की समुचित व्यवस्था नहीं थी । अतः, उन्हें गंदी बस्तियों में नारकीय जीवन व्यतीत करना पड़ा।

(ix) उपनिवेशवाद का विकास - औद्योगिकीकरण ने उपनिवेशवाद को बढ़ावा दिया। यूरोपीय राष्ट्रों ने एशिया-अफ्रीका में उपनिवेश स्थापित कर उनका शोषण किया। भारत इंगलैंड का उपनिवेश बन गया।

4. उपनिवेशवाद से आप क्या समझते हैं? औद्योगिकीकरण ने उपनिवेशवाद को कैसे जन्म दिया? वर्णन करें।

उत्तर - उपनिवेशवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत विकसित राष्ट्रों ने अविकसित राष्ट्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया । औपनिवेशिक शक्तियों ने आरंभ में वहाँ के आर्थिक संसाधनों का उपयोग किया, परंतु आगे चलकर वहाँ की राजनीतिक व्यवस्था पर भी अधिकार कर लिया। उपनिवेशवाद औद्योगिक क्रांति की देन थी। औद्योगिक क्रांति सबसे पहले इंगलैंड में हुई, इसलिए उपनिवेशवाद का आरंभ भी इंगलैंड से ही हुआ। इंगलैंड के उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराने तथा वहाँ के कारखानों में निर्मित सामानों की बिक्री के लिए बाजार की आवश्यकता थी। इसलिए, जैसे-जैसे औद्योगिकीकरण की गति बढ़ी वैसे-वैसे उपनिवेशीकरण में भी तेजी आई। इंगलैंड के अतिरिक्त फ्रांस और जर्मनी भी अपने-अपने उपनिवेश स्थापित किए। उपनिवेशीकरण और औद्योगिकीकरण ने साम्राज्यवाद को भी बढ़ावा दिया। साम्राज्यवादी प्रवृत्ति विश्वयुद्धों का भी कारण बनी। प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्धों का यह एक महत्त्वपूर्ण कारण थी। 20वीं शताब्दी में उपनिवेशों में शोषण के विरुद्ध प्रतिक्रिया आरंभ हुई। एशिया और अफ्रीका में स्वतंत्रता संग्राम हुए और आंदोलन चले। इसके परिणामस्वरूप उपनिवेश स्वतंत्र हो गए और उपनिवेशवाद समाप्त हो गया।

5. कुटीर उद्योगों के महत्त्व एवं उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डालें।

अथवा, भारतीय अर्थव्यवस्था में कुटीर उद्योगों का क्या महत्त्व था ? स्वतंत्रता- प्राप्ति के बाद सरकार ने इनके विकास के लिए क्या प्रयास किए?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - औद्योगिकीकरण के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था में कुटीर उद्योगों का महत्त्व बना रहा। 1905 के बंग-भंग और स्वदेशी आंदोलन ने कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित कर दिया। गाँधीजी के विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की नीति से भी कुटीर उद्योगों को बढ़ावा मिला। दो विश्वयुद्धों के मध्य कुटीर उद्योग में उत्पादित वस्तुओं के उत्पादन और माँग में वृद्धि हुई। क्षेत्रीय स्तर पर आर्थिक जीवन में कुटीर उद्योग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे। ये लाखों लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराते हैं, उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन करते हैं तथा राष्ट्रीय आय का समान वितरण भी सुनिश्चित करते हैं। कुटीर उद्योगों से शिल्पियों एवं कारीगरों के शहरों की ओर पलायन पर अंकुश लगता है। इनमें निर्मित वस्तुओं के निर्यात से भारत का व्यापार बढ़ता है। गाँधीजी के अनुसार, "कुटीर उद्योग भारतीय सामाजिक दशा अनुकूल हैं।"

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार और राज्य सरकारों ने इनके महत्त्व को देखते हुए इन्हें प्रोत्साहन देने के लिए अनेक प्रयास किए हैं। 1948 की औद्योगिक नीति के द्वारा लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया गया। 1952-53 में लघु उद्योगों एवं ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए हथकरघा, सिल्क खादी, नारियल के रेशे आदि के लिए ग्रामीण उद्योग बोर्ड स्थापित किए गए। 1980 के औद्योगिक नीति घोषणापत्र में कृषि-आधारित उद्योगों को विकसित करने पर बल दिया गया।

5. अर्थ-व्यवस्था और आजीविका

1. औद्योगिक क्रांति का प्रयोग सबसे पहले किस व्यक्ति ने किया ?

(a) लुई ब्लाँ ने

(b) राबर्ट ओवन ने

(c) मार्क्स ने

(d) जेम्स वाट ने

Ans – A

2. औद्योगिक क्रांति का अर्थ क्या है?

(a) राजसत्ता में परिवर्तन

PDF SARTHI.COM

(b) सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन

(c) उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन

(d) वितरण प्रणाली में परिवर्तन

Ans – C

3. आदि-औद्योगीकरण की क्या विशेषता थी ?

(a) स्थानीय उपयोग के लिए उत्पादन होना

(b) क्षेत्रीय उपयोग के लिए उत्पादन होना

(c) अंतर्राष्ट्रीय बाजार के लिए उत्पादन नहीं होना

(d) उत्पादन विकेंद्रित होना

Ans – D

4. बाड़ाबंदी आन्दोलन कहाँ हुआ?

(a) इंगलैंड में

(b) फ्रांस में

(c) जर्मनी में

(D) रूस में

Ans – A

5. औद्योगिक क्रांति का स्वरूप क्या था?

(a) सर्वहारा वर्गीय क्रांति

PDF SARTHI.COM

(B) बुर्जुआ वर्गीय क्रांति

(C) अभिजात वर्गीय क्रांति

(D) वर्गविहीन क्रांति

Ans – D

6. सेफ्टी लैम्प का आविष्कार किसने किया था?

(a) क्रॉम्पटन

(b) जेम्स हारग्रीव्स

(C) हंफ्री डेवी

(D) जॉन के

Ans – C

7. स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किसने किया था?

(a) हम्फ्री डेवी

(B) जॉन के

(c) जेम्स हारग्रीव्स

(d) जेम्सवाट

Ans – C

8. इंगलैंड में औद्योगिक क्रांति किस उद्योग से आरंभ हुई?

(a) वस्त्र उद्योग से

(b) लौह उद्योग से

PDF SARTHI.COM

(c) खान उद्योग से

(d) परिवहन उद्योग से

Ans – A

9. औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम किस देश में हुई?

(a) इंगलैंड में

(b) जर्मनी में

(c) फ्रांस में

(d) अमेरिका में

Ans – A

10. फलाईंग शटल का आविष्कार किसने किया था?

(a) आर्कराइट ने

(b) जेम्स वाट ने

(C) जॉन के ने

(D) अब्राहम डर्बी ने

Ans – C

11. वाष्प इंजन का आविष्कार किसने किया था?

(a) जेम्स वाट

(b) क्राम्पटन

(C) हम्फ्री डेवी

PDF SARTHI.COM

(d) जॉन के

Ans – A

12. जेम्सवाट ने किस यंत्र का आविष्कार किया?

(a) पावरलूम

(b) सेफ्टीलॅप

(c) वाष्प इंजन

(d) फ्लाईंग शटल

Ans – C

13. स्पेनिंग जेनी का आविष्कार कब हुआ?

(a) 1967

(b) 1964

(c) 1773

(d) 1775

Ans – B

14. वाष्पचालित रेल इंजन का आविष्कार किया था

(a) अब्राहम डर्बी ने

(b) जेम्स वाट ने

(c) जार्ज स्टीफेंसन ने

(d) राबर्ट फुल्टन ने

PDF SARTHI.COM

Ans – C

15. टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी की स्थापना की गई—

(a) 1854 में

(b) 1907 में

(C) 1915 में

(d) 1923 में

Ans – B

16. 1917 ई० में भारत में पहली जूट मिल किस शहर में स्थापित हुई?

(a) कलकत्ता

(b) दिल्ली

(c) बंबई

(D) पटना

Ans – A

17. भारत में टाटा हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन की स्थापना कब हुई?

(a) 1910

(b) 1951

(c) 1955

PDF SARTHI.COM

(d) 1962

Ans – A

18. भारत में पहली कपड़ा मिल (बंबई 1854) किसने खोली?

(a) कावसजी नानाजी दाभार

(b) जमशेदजी जीजीभोये

(c) जमशेदजी नुसखानजी हाटा

(d) डिनशॉ पेटिट

Ans – A

19. भारत में कोयला उद्योग का प्रारंभ कब हुआ?

(a) 1907

(b) 1914

(c) 1916

(d) 1919

Ans – B

20. राउरकेला लोहा-इस्पात उद्योग है

(a) ओडिशा में

(b) झारखण्ड में

(c) मध्य प्रदेश में

PDF SARTHI.COM

(d) पश्चिम बंगाल में

Ans – A

21. मुम्बई में प्रथम सूती कपड़ा मिल किस वर्ष स्थापित की गई ?

(a) 1850 में

(b) 1852 में

(c) 1854 में

(d) 1858 में

Ans – C

22. दुर्गापुर स्टील प्लांट किस राज्य में स्थित है?

(a) मध्य प्रदेश

(b) ओडिशा

(c) पश्चिम बंगाल

(d) झारखंड

Ans – C

23. बोकारो इस्पात संयंत्र किस देश के सहयोग से खोला गया है?

(a) जर्मनी

(b) ब्रिटन

(c) मध्यम वर्ग को

PDF SARTHI.COM

(d) संयुक्त राज्य अमेरिका

Ans – C

24. भारत में पहली सूती मिल कहाँ स्थापित की गई ?

(a) सूरत

(b) मुम्बई

(c) अहमदाबाद

(d) कोलकाता

Ans – B

25. बुर्जुवा वर्ग कहते हैं—

(a) श्रमिक वर्ग को

(b) पूँजीपति वर्ग को

(c) मध्यम वर्ग को

(d) व्यापारी वर्ग को

Ans – C

26. ब्रिटेन का एक विशाल उपनिवेश के रूप में कौन सा देश उभरा था ?

(a) चीन

(b) अफ्रीका देश

(c) भारत

(d) जापान

PDF SARTHI.COM

Ans – C

27. गुमाश्ता कौन थे?

(a) अंग्रेज व्यापारी एजेंट

(b) अंग्रेज अधिकारी

(c) पूँजीपति वर्ग

(d) शिल्पकार

Ans – A

28. किस चार्टर एक्ट के द्वारा व्यापार से ईस्ट इंडिया कंपनी का एकाधिपत्य समाप्त कर दिया?

(a) 1858

(b) 1909

(c) 1813

(d) 1935

Ans – C

29. भारत में कारखानों की स्थापना कब से शुरू हुई?

(a) 1840 के बाद

(b) 1845 के बाद

(c) 1750 के बाद

(d) 1850 के बाद

Ans – D

PDF SARTHI.COM

30. इंगलैंड में चार्टिस्ट आंदोलन हुआ-

(A) 1838 में

(B) 1881 में

(C) 1918 में

(d) 1932 में

Ans – A

31. इंगलैंड में सभी स्त्री एवं पुरुषों को वयस्क मताधिकार कब प्राप्त हुआ?

(a) 1838

(b) 1881

(c) 1918

(d) 1932

Ans – C

32. 'अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस' की स्थापना कब हुई?

(a) 1848

(b) 1881

(c) 1885

(d) 1920

Ans – D

33. भारत में पहला फैक्ट्री कानून किस वर्ष बना?

PDF SARTHI.COM

(a) 1838 में

(b) 1858

(c) 1881 में

(d) 1911 में

Ans – C

34. भारत में मजदूरी बोर्ड की स्थापना किस पंचवर्षीय योजना में की गई?

(a) प्रथम

(b) द्वितीय

(c) तृतीय

(d) चतुर्थ

Ans – C

35. भारत में न्यूनतम मजदूरी कानून किस वर्ष पारित हुआ?

(a) 1881 में

(b) 1926 में

(c) 1947 में

(d) 1948 में

Ans – D

36.राष्ट्रीय श्रम आयोग की स्थापना किस वर्ष हुई?

PDF SARTHI.COM

(a) 1948 में

(b) 1958 में

(c) 1962 में

(d) 1965 में

Ans – C

37. औद्योगिक नीति घोषणा कब जारी हुआ था?

(a) जुलाई, 1980

(b) अगस्त, 1980

(c) जुलाई, 1981

(d) अगस्त, 1981

Ans – A

38. भारत सरकार की किस औद्योगिक नीति के द्वारा लघु एवं कुटीर उद्योग को प्रोत्साहन दिया गया?

(a) 1935 की

(b) 1947 की

(c) 1948 की

(d) 1952 की

Ans – c

39. रेशम मार्ग कहाँ से आरंभ होता था?

(a) भारत

PDF SARTHI.COM

(b) चीन

(c) वर्मा

(d) तिब्बत

Ans – B

PDF SARTHI.COM

6.शहरीकरण एवं शहरी जीवन

गाँव:- गाँव की जनसंख्या का एक बड़ा भाग कृषि व्यवसाय से जुड़ा होता है। इनकी आय का प्रमुख स्रोत कृषि संबंधी उत्पाद होते हैं। अतः गाँव की मुख्य विशेषता एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है, जो मूलतः जीवन निर्वाह अर्थ व्यवस्था पर आधारित है।

गंज (हाट):- एक छोटे से बाजार को गंज कहा जाता है। गंज कपड़ा, फल, सब्जी, दूध एवं अन्य प्रकार के दैनिक उपभोग की वस्तुओं का विक्रय केन्द्र था। गंज विशिष्ट परिवारों तथा सेना के लिए सामग्री उपलब्ध कराते थे।

कस्था:- ग्रामीण अंचल में स्थित एक छोटे शहर को माना जाता है जो अधिकांशतः स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति एवं विशिष्ट व्यक्ति का केन्द्र होता है।

शहर:- शहर गैर कृषि उत्पादन गतिविधियों का केन्द्र था। शहर उद्योग, व्यापार, वाणिज्य व प्रशासनिक इकाई का केन्द्र होता है।

महानगर:- किसी प्रांत या देश का विशाल और घनी आबादी वाला शहर जो प्रायः वहाँ की राजधानी भी होता है।

गांव और शहर में अंतर

गाँव	शहर
गाँव की आबादी काम होती है।	शहर की आबादी आधिक होती है।
गाँव में खेती और पशुपालन मुख्य जीविका है।	शहर में व्यापार और आजीविका मुख्य उत्पादन है।
गाँव में शिक्षा, यातायात, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव होता है।	शहर में शिक्षा, यातायात, स्वास्थ्य सुविधाएँ उन्नत अवस्था में होती है।
गाँव में वातावरण स्वच्छ होती है।	शहर की वातावरण प्रदुषि होती है।

PDFSARTHI.COM

शहरीकरण:- नगरीय जीवन तथा आधुनिकता एक दूसरे के पूरक है और शहर को आधुनिक व्यक्ति का प्रभाव क्षेत्र माना जाता है।

आधुनिक शहरों की स्थापना के कारण :-

- औद्योगिक पूंजीबाद का उदय
- विश्व के विशाल भूभाग पर औपनिवेशिक शासन की स्थापना
- लोकतांत्रिक आदर्श का विकास

शहरों के उदय ने निम्न समस्याओं को जन्म दिया:-

- बाजारवाद का उदय
- जनसंख्या घनत्व में वृद्धि
- मलिन वस्तियों का उदय
- अपराधिक प्रवृति में वृद्धि
- यातायात की समस्या
- स्वास्थ्यपरक सुविधाओं का अभाव

प्रदूषण की समस्या

टेनेमेंटू काम चलाओ और अक्सर बी हिसाब बीर वाले अपार्टमेंट मकान जो बड़े शहर के गरीब इलाके में पाए जाते हैं उसे टेनेमेंद्ध कहा जाता है।

घेटो :- घंटो शब्द मध्य यूरोपीय शहरों में यहूदियों की बस्ती के लिए प्रयोग किया जाता है। आज के संदर्भ में यह विशिष्ट धर्म, नृजाति, जाति या समान पहचान वाले लोगों के साथ रहने को इंगित करता है।

व्यक्तिवाद:- वह सिद्धांत् जिसे समुदाय की नहीं बल्कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और अधिकार को स्वीकार किया जाता है उसे व्यक्तिवाद कहा जाता है।

लैसेज फेयर:- वैसा आर्थिक उन्मुक्त बाद जिसमें सरकार का किसी रूप में हस्तक्षेप नहीं होता था एवं पूजी पत्तियों को पूरी स्वतंत्रता दी जाती थी, उसे लैसेज फेयर कहा जाता है।

PDFSARTHI.COM

पटना:- .

- प्राचीन काल में पटना पाटलीपुत्र के नाम से जाना जाता था।
- प्राचीन काल में यह नगर शिल्पकला, व्यापार, शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों का एक प्रमुख केन्द्र था।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में मगध के शासक आजातशत्रु ने पाटलिपुत्र में एक सैनिक शिविर बनाया था। कालांतर में यह मगध साम्राज्य की राजधानी बना।
- मौर्यकालीन राजप्रसाद के अवशेष दक्षिण पटना में स्थित कुम्हरार से प्राप्त हुए हैं।

अनेक पहलुओं पर चर्चा :

- पाटलिपुत्र नगर प्रशासन के अनेक पहलुओं पर चर्चा यूनान निवासी मेगास्थनीज की रचना इंडिका में उपलब्ध है।
- मेगास्थनीज चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था।
- पटना के विशाल भवनों के वैभव और सौंदर्य की चर्चा चीनी यात्री फाह्यान द्वारा की।
- अफगान शासक शेरशाह सूरी ने 1541 में दुर्ग का निर्माण करवाया। इसके बारे में जानकारी अब्दुल्ला की रचना तारीखे दाऊदी में मिलती है।
- 1856 में अंग्रेज यात्री राल्फ फिच नगर भ्रमण के लिए आया था।
- 1666 ई० में सिखों के दसवें और अंतिम गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म पटना में हुआ था।
- मुगल शासक अक्बर के शासनकाल में पटना एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में विख्यात था ।
- अठारहवीं शताब्दी में मुगल राजकुमार अजीमुशान ने इस नगर का नवनिर्माण कराया और इसे अजीमाबाद नाम दिया।
- 1786 में पाटलिपुत्र में अनाज भंडारण के लिए गोदाम का निर्माण किया गयाँ जिसे आज व गोलघर के नाम से जाना जाता है।
- 1911 के दिल्ली दरबार में बिहार को पृथक राज्य का दर्जा दिया गया।
- 1912 में (बिहार एवं उड़ीसा) को बंगाल से अलग कर पृथक राज्य का दर्जा दिया गया।
- वर्तमान में पटना की आबादी 12 लाख से अधिक है और इसका क्षेत्रफल और 2800 वर्ग किलोमीटर है।
- कोलकाता के बाद पटना पूर्वी भारत का सबसे बड़ा नगर है।

PDF SARTHI.COM

बम्बई:-

- बंबई सात टापुओं का इलाका था।
- बम्बई औपनिवेशिक भारत की वाणिज्यिक राजधानी थी।
- बम्बई भारत का एक प्रमुख बंदरगाह था, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक मुख्य केन्द्र था। यहाँ से कपास और अफीम जैसे वस्तु निर्यात किया जाता था।
- 1800 ई0 के आसपास बम्बई फोर्ट एरिया शहर का एक केन्द्र बिन्दु था, जो दो भागों में बेटा हुआ था। एक भाग में नेटिव (स्थानीय निवासी) रहते थे और दूसरे भांग में यूरोपीय निवास करते थे।
- 1854 में पहली कपड़ा मिल मुंबई में स्थापित हुआ। कपड़ा मिलों के कारण लोग बम्बई में आकर बसने लगे, जिसके कारण बम्बई में आबादी का दबाव बढ़ गया। फलतः लोग घनी आबादी वाले चॉलों (बहुमंजिली इमारत) में रहते थे।
- 1784 में 'भूमि विकास परियोजना' लागू की गई।
- 1898 ई० में सिटी ऑफ बॉम्बे इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट की
  1918 ई. में बम्बई के मकानों के महंगे किराए को सिमित करने के लिए किराया कानून पारित किया गया।
- मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने 1914 से 1918 के बीच एक सुखी गौदी का निर्माण किया और उसके खुदाई से जो मिट्टी निकाली उसका इस्तेमाल करके 22 एकड़ बलाद्र एस्टेट का बना डाला। जहां आज मरीन ड्राइव है।

सिंगापुर:-

- सिंगापुर एक सुनियोजित शहर है।
- 1965 ई० में पीपुल्स एक्शन पार्टी के अध्यक्ष ली कुआन येव के नेतृत्व में सिंगापुर को आजादी मिली।
- सिंगापुर के सुनियोजित विकास के लिए आवास एवं विकास कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। आवासीय खंडों में जनस्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए हवा निकासी एवं अन्य स्वास्थ्य-परक सुविधाओं की व्यवस्था की गई। सड़कों का निर्माण किया गया एवं परिवहन व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए यातायात नियम बनाए गए। शहरों में लोगों के आने पर नियंत्रण रखा जाने लगा।

पेरिस:-

PDFSARTHI.COM

- बेरॉन हॉसमान ने पेरिस के पुनर्निमाण का काम किया। शहर में सीधी एवं चौड़ी सड़कें, बुलेवईस (छायादार सड़क) पार्क, खुले मैदान का निर्माण किया गया।
- शहर में शांति व्यवस्था के लिए पुलिस तैनात किए गए।
- पेरिस ऐसी राजधानी के रूप में जाना जाता है, जो केवल वास्तुकला के लिए नहीं बल्कि सामाजिक और बौद्धिक केन्द्र के रूप में विख्यात है।

लंदन:-

- 1750 ई तक इंग्लैंड और वेल्स का हर 9 में से एक आदमी लंदन में रहता था। यह एक महाकाय शहर था जिसकी आबादी 675000 थी।
- 1810 ई0 से 1880 ई0 तक लेदन की आबादी 10 लाख से बढ़कर 40 लाख हो गई।
- विश्व की पहली भूमिगत रेल 10 जनवरी 1863 ई० में बना। यह रेलवे लीईन लंदन की पैडिंग्ल और केरिंग्टन स्ट्रीट के बीच स्थित है।
- 1870 ई0 में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा कानून बना।
- 1902 ई० में फैक्ट्री कानून के अन्तर्गत बच्चों को कारखानों में काम करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- वास्तुकार एवेनेजर हावर्ड लंदन में गिर्द हरित पट्टी विकसित की जिसे गार्डन सिटी नाम दिया गया
- शहरों के विस्तार में भव्य परकोटे का निर्माण हुआ।
- लंदन भारी संख्या में प्रवासियों को आकर्षित करने में सफल हुआ।
- विकासशील देशों में नगरों के प्रति रुझान देखा जाता है।
- नगर प्रबंधन के द्वारा निवास तथा आवसीय पद्धति, जनस्वास्थ्य, जन यातायात के साधन के उपाय किए गए।
- ब्रिटेन में मैनचेस्टर , लंकाशयर , शेफील्ड ,लिड्स औद्योगिक नगरें थे।

1. गाँव के कृषिजन्य आर्थिक क्रियाकलापों की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - ग्रामीण आबादी का बहुत बड़ा भाग कृषिजन्य आर्थिक क्रियाकलापों से जुड़ा रहता है। खेती इनकी आजीविका का मुख्य साधन है। कृषि के साथ पशुपालन पर भी ध्यान दिया जाता है। साथ ही, गाँवों में अनेक लघु

PDFSARTHI.COM

एवं कुटीर उद्योग तथा शिल्पकलाओं में भी लोग संलग्न रहते हैं जिससे स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। कृषिप्रधान अर्थव्यवस्था मूलतः जीवन-निर्वाह अर्थव्यवस्था की अवधारणा पर आधृत होती है।

2. शहर किस प्रकार की क्रियाओं के केंद्र होते हैं?

उत्तर - शहर गैर-कृषि आर्थिक क्रियाकलापों के केंद्र होते हैं। शहरों में गाँवों से रोजगार की तलाश में बड़ी संख्या में लोग आकर निवास करते हैं। वे सरकारी तथा गैर-सरकारी उद्योगों में काम करते हैं। कुछ स्वतंत्र रूप से व्यापार भी करते हैं तथा अपना उद्योग चलाते हैं। नगरों में प्रशासनिक एवं धार्मिक गतिविधियाँ भी होती हैं। शहर राजनीतिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के भी केंद्र होते हैं।

3. समाज का वर्गीकरण ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में किस भिन्नता के आधार पर किया जाता है ?

उत्तर - गाँवों एवं शहरों में सामाजिक वर्गीकरण मुख्यतः व्यवसाय में भिन्नता के आधार पर किया जाता है। ग्रामीण आबादी का बहुत बड़ा भाग प्रधानतः कृषिजन्य क्रियाकलापों से संबद्ध होता है। कृषि, पशुपालन और छोटे उद्योग आजीविका के मुख्य साधन होते हैं। इसके विपरीत शहरी आबादी मुख्यतः गैर-कृषि व्यवसायों, नौकरी, उद्योग तथा व्यापार में संलग्न रहती है। शहर प्रशासनिक, सैनिक, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र होते हैं।

4. आर्थिक तथा प्रशासनिक संदर्भ में ग्रामीण तथा नगरीय बनावट के दो मुख्य आधार क्या हैं?

उत्तर - इस संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी बनावट में दो मूलभूत अंतर दिखाई देते हैं।

(i) अर्थव्यवस्था - ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषिजन्य क्रियाकलापों से संबद्ध रहती है जबकि शहर उद्योग, व्यापार व नौकरी-पेशा में लगे लोगों के केंद्र होते हैं। शहरी अर्थव्यवस्था मुद्राप्रधान और अधिक गतिशील होती है।

(ii) जनसंख्या का घनत्व - शहरों एवं नगरों जनसंख्या का घनत्व ग्रामीण इलाकों से अधिक होता है। शहरों में मकान सुनियोजित ढंग से बने रहते हैं, उनकी साफ- सफाई, रोशनी, सुरक्षा की व्यवस्था रहती है। ग्रामों में ऐसा नहीं होता है।

5. किन तीन प्रक्रियाओं के द्वारा आधुनिक शहरों की स्थापना निर्णायक रूप से हुई ?

उत्तर - आधुनिक शहरों की स्थापना को मुख्यतः 'तीन प्रक्रियाओं ने निर्णायक रूप से प्रभावित किया। ये हैं - (i) औद्योगिक पूँजीवाद का उदय, (ii) उपनिवेशवाद का विकास तथा (iii) लोकतांत्रिक आदर्शों का विकास।

PDF SARTHI.COM

परिणामस्वरूप, ग्रामीण एवं सामंती व्यवस्था से अलग प्रगतिशील, उद्यमी एवं प्रतियोगी जीवन-पद्धति का विकास हुआ।

6. यूरोपीय इतिहास में 'घेटो' का क्या अर्थ है ?

उत्तर - 'घेटो' शब्द का व्यवहार मध्यकालीन यूरोप में यहूदी बस्तियों के लिए किया गया। वर्तमान समय में यह विशिष्ट धर्म, नृजाति, जाति अथवा समान पहचान वाले लोगों के एक साथ रहने को इंगित करता है। यह सामुदायिक आवास का परिचायक है। साथ ही, 'घेटो' पृथक्कीकरण का भी द्योतक है। एक ही समुदाय के लोगों के एक साथ रहने से लाभ और हानि दोनों होते हैं।

7. शहरों के उद्भव में मध्यम वर्ग की भूमिका किस प्रकार की रही?

उत्तर - पूँजीपति एवं श्रमिक वर्ग के साथ-साथ शहरों में मध्यम वर्ग का भी उदय और विकास हुआ। ये नए सामाजिक समूह के रूप में उभरे। इस समूह में बुद्धिजीवी, नौकरी-पेशा समूह, राजनीतिज्ञ, चिकित्सक, व्यापारी प्रमुख थे। व्यावसायिक वर्ग नगरों के विकास का प्रमुख कारण बना जिससे शहरों को नया सामाजिक-आर्थिक स्वरूप प्राप्त हुआ। बुद्धिजीवी एवं राजनीतिक वर्ग ने नया राजनीतिक-सामाजिक चिंतन दिया तथा विभिन्न आंदोलनों को दिशा एवं नेतृत्व प्रदान किया ।

8. नगरीय जीवन एवं आधुनिकता एक-दूसरे से अभिन्न रूप से कैसे जुड़े हुए हैं?

उत्तर - नगरीय जीवन एवं आधुनिकता में अन्योन्याश्रय संबंध है। शहरों में रहनेवाले उन्मुक्त विचारों के होते हैं। वे परंपरागत एवं रूढ़िवादी विचारों को नकारनेवाले तथा आधुनिकीकरण के समर्थक होते हैं। यह न सिर्फ उनके खान-पान और पहनावा में दिखाई देता है, बल्कि उनकी सोच भी आधुनिकता से प्रभावित होती है। विशेषतः, मध्यम वर्ग नई राजनीतिक व्यवस्था का समर्थक होता है।

9. नगरों में विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग अल्पसंख्यक है, ऐसी मान्यता क्यों बनी ?

उत्तर - नगरों में विभिन्न समुदाय के लोग निवास करते हैं, परंतु इनमें विशेषाधिकार- प्राप्त वर्ग छोटा ही होता है। यह सुविधाभोगी एवं संपन्न वर्ग होता है, जैसे - मध्यम वर्ग । अधिक संख्या सामान्य जनों, श्रमिकों इत्यादि की होती है जिन्हें कोई विशेषाधिकार नहीं होता तथा जिनकी आर्थिक स्थिति भी पहले वर्ग से कमजोर होती है। अतः, जनसंख्या के आधार पर सुविधा प्राप्त वर्ग की स्थिति अल्पसंख्यकों के समान मानी गई।

PDFSARTHI.COM

10. नागरिक अधिकारों के प्रति एक नई चेतना किस प्रकार के आंदोलन या प्रयास से बनी ?

उत्तर - नगरवासी नागरिक अधिकारों के प्रति सजग थे। वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं लोकतंत्र के हिमायती थे तथा इन अधिकारों की प्राप्ति के लिए अनेक आंदोलन चलाए गए एवं क्रांतियाँ हुईं; जैसे - फ्रांस की महान क्रांति। नागरिक अधिकारों की माँग के लिए विभिन्न देशों में अलग-अलग आंदोलन भी चलाए गए। उदाहरण के लिए, पुरुषों के वयस्क मताधिकार की माँग को लेकर इंगलैंड में 1838 में चार्टिस्ट आंदोलन चलाया गया। इन प्रयासों से नगरवासियों में नई चेतना जागृत हुई । वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हुए।

11. शहरीकरण का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा? इसे रोकने के लिए क्या प्रयास किए गए ?

उत्तर - कल-कारखानों की स्थापना, चिमनियों से निकलनेवाले धुएँ, बेतरतीब भीड़, लोगों और सवारियों की आवाजाही, गंदगी और धूल से पर्यावरण दूषित हो गया। अतः, पर्यावरण की सुरक्षा के लिए समय-समय पर प्रयास किए गए। 1840 के दशक में इंगलैंड के प्रमुख औद्योगिक नगरों में धुआँ-नियंत्रक कानून लागू किया गया। भारत में 1863 में कलकत्ता में धुआँ-निरोधक कानून बनाया गया।

12. शहरों ने किन नई समस्याओं को जन्म दिया?

उत्तर - (i) शहरीकरण ने नई सामाजिक संरचना को जन्म दिया जिससे वर्ग-विभेद गहरा हुआ। यह समाजवादी सिद्धांतों एवं लोकतांत्रिक मान्यताओं के विपरीत है।

(ii) आवास, यातायात, स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य जनकल्याण संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हुईं।

(iii) शहरीकरण ने स्पर्द्धा एवं अवसरवाद जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों को भी जन्म दिया।

(iv) शहरीकरण ने पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डाला।

13. लंदन में गरीबों के लिए आवास बनवाने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

उत्तर - गरीबों के लिए आवास बनवाने के अनेक कारण थे-

(i) गरीबों के टेनेमेंट्स, रैनबसेरे और अजनबीघर अस्वास्थ्यकर और खतरनाक थे।

(ii) इनमें आग लगने का खतरा था जिससे पूरे शहर को नुकसान हो सकता था।

PDFSARTHI.COM

(iii) गरीबों की बड़ी संख्या सामाजिक-राजनीतिक उथल-पुथल ला सकती थी। गरीबों के विद्रोह की आशंका को दबाने के लिए श्रमिकों के लिए भी आवासीय योजनाएँ बनाई गईं।

14. लंदन में 'गार्डन सिटी' की योजना क्यों बनाई गई? इस योजना का कार्यान्वयन कैसे किया गया ?

उत्तर - लंदन के धनी लोगों को प्रदूषणमुक्त स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वास्तुकार एबेनेजर हावर्ड ने गार्डन सिटी (बागीचों का शहर) बनाने की योजना बनाई । उसकी योजना के आधार पर रेमंड अनविन और बैरी पार्कर ने न्यू अर्जविक नामक बागीचों के शहर की रूपरेखा तैयार की। शहर में बाग-बागीचों, मनमोहक परिदृश्यों और भव्य मकानों की व्यवस्था की गई। इससे सामुदायिक जीवन का विकास हुआ।

शहरीकरण एवं शहरी जीवन

1. शहरों के उदय के विकास की पृष्ठभूमि एवं उसकी प्रक्रिया पर प्रकाश डालें।

उत्तर - शहरीकरण की प्रक्रिया में आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक कारणों ने योगदान किया। शहरीकरण की प्रक्रिया में लंबा समय लगा। प्राचीन एवं मध्यकाल में अनेक नगर बसे, परंतु आधुनिक नगरों का विकास औद्योगिकीकरण के बाद ही हुआ। रोजगार की तलाश में गाँव छोड़कर लोग औद्योगिक केंद्रों में आए जो शहर बन गए। इसी प्रकार, व्यापारिक केंद्र एवं प्रशासनिक केंद्र तथा राज्य की राजधानियाँ भी शहर बन गए। शहरीकरण की प्रक्रिया में गाँव से गंज या मंडी विकसित हुए। गंज के इर्द-गिर्द कसबा अथवा छोटे शहर का उदय हुआ । आगे चलकर शहरीकरण की प्रक्रिया में कसबा से शहर, शहर से नगर एवं महानगर बने । आधुनिक शहरों के उदय में तीन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। ये तीन प्रक्रियाएँ थीं- (i) औद्योगिक पूँजीवाद का उदय, (ii) औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया तथा (iii) लोकतांत्रिक आदर्शों का विकास। इनके कारण ग्रामीण एवं सामंती व्यवस्था से अलग एक प्रगतिशील शहरी व्यवस्था की स्थापना हुई। शहर नागरिक, आर्थिक, सैनिक, प्रशासनिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र बन गए। नगर आधुनिकता के भी प्रतीक बन गए। कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था का स्थान मुद्रा - प्रधान अर्थव्यवस्था ने ले लिया। यह अर्थव्यवस्था उद्यमी प्रवृत्ति से प्रभावित एवं प्रतियोगी थी। शहर परस्परविरोधी छविवाले भी बन गए।

2. शहरीकरण की प्रक्रिया में व्यवसायी वर्ग, मध्यम वर्ग एवं मजदूर वर्ग की भूमिका की चर्चा करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - (i) **व्यवसायी वर्ग** - शहरों में नए सामाजिक समूह बने; जैसे – बुद्धिजीवी, - व्यवसायी वर्ग इत्यादि। व्यवसायी वर्ग व्यापक वर्ग था। इसमें उद्योगपति, पूँजीपति, व्यापारी, स्वरोजगार करनेवाले जैसे लोग आते हैं। इनमें कुछ ने तो अपनी पूँजी लगाकर उद्योग स्थापित किए और औद्योगिकीकरण और शहरों के विकास को बढ़ावा दिया। व्यावसायिक पूँजीवाद से शहरों को नया सामाजिक-आर्थिक आधार प्राप्त हुआ।

(ii) **मध्यम वर्ग** - मध्यम वर्ग ने नई राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था. को अपनाकर नगरों का विकास किया। इस वर्ग में नौकरीपेशा वाले लोग, शिक्षक, वकील, चिकित्सक, इंजीनियर, क्लर्क और अन्य लोग थे। इनके आदर्श और आर्थिक स्थिति भी लगभग एकसमान रही। इसने अपनी सोच और प्रबुद्धता के कारण शहरों के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया।

(iii) **श्रमिक वर्ग** - उद्योगों की स्थापना के साथ श्रमिक वर्ग का भी उदय हुआ। उद्योगों और कारखानों को चलाने के लिए इनकी आवश्यकता थी। रोजगार की तलाश में बड़ी संख्या में वे खेती छोड़कर कारखानों में काम करने आए। इनके श्रम पर ही औद्योगिकीकरण सफल हो सका। बड़े औद्योगिक नगरों की स्थापना हुई।

3. शहरी जीवन में किस प्रकार के सामाजिक बदलाव आए ?

उत्तर - शहरीकरण ने नई प्रकार की संस्कृति को जन्म दिया। इसमें पुरानी सामाजिक मान्यताएँ बदलने लगीं।

(i) **सामूहिक पहचान** - शहरों ने 'सामूहिक पहचान' के सिद्धांत को बढ़ावा दिया। एक साथ विभिन्न समुदायों के रहने से पहचान की भावना बढ़ी।

(ii) **नए सामाजिक समूहों का उदय** - नगरों में नए सामाजिक समूह बने। ये व्यावसायिक समूह थे। इसने नगरों को नया सामाजिक-आर्थिक स्वरूप प्रदान किया।

(iii) **पूँजीपति वर्ग का उदय** - औद्योगिकीकरण के कारण समाज में प्रभावशाली पूँजीपति वर्ग का उदय हुआ। इन्हें शक्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त थी। समाज पर इनका व्यापक प्रभाव था।

(iv) **श्रमिक वर्ग का उदय** - कारखानेदारी प्रथा और औद्योगिकीकरण ने श्रमिक वर्ग का भी सृजन किया। पूँजीपति इनका शोषण करते थे।

PDFSARTHI.COM

(v) मध्यम वर्ग का उदय - शिक्षाप्राप्त इस वर्ग में बुद्धिजीवी, नौकरीपेशा, वकील, डॉक्टर इत्यादि थे। इस वर्ग ने नए सामाजिक परिवर्तनों को अपनाकर इसका प्रसार किया।

(vi) परिवार में बदलाव - शहरीकरण के कारण परिवार के स्वरूप और इसके महत्त्व में परिवर्तन आया। परिवार नामक मजबूत संस्था कमजोर पड़ने लगी।

(vii) स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन - 20वीं शताब्दी से स्त्रियाँ भी नौकरी, व्यवसाय, राजनीति में भाग लेने लगीं।

(viii) व्यक्तिवादी भावना का विकास - नगरों ने सामुदायिक मान्यताओं और मूल्यों के स्थान पर व्यक्तिवादी भावना को बढ़ावा दिया।

(ix) अपराधों में वृद्धि - शहरीकरण के कारण सामाजिक अपराधों, चोरी, हत्या, बलात्कार, शराबखोरी जैसी घटनाओं में वृद्धि हुई। इनकी रोकथाम के लिए प्रयास किए गए।

4. ग्रामीण तथा नगरीय जीवन के बीच की विभिन्नताओं को स्पष्ट करें।

उत्तर - ग्रामीण तथा नगरीय जीवन के अंतर को मुख्यतः दो संदर्भों में स्पष्ट किया जा सकता है- (i) जनसंख्या का घनत्व और (ii) कृषि-आधृत आर्थिक क्रियाओं का अनुपात। शहरों, नगरों एवं महानगरों में जनसंख्या का घनत्व ग्रामीण इलाकों से अधिक होता है। गाँवों में कम लोग ही अधिक स्थान में रहते हैं, परंतु शहरों में कम स्थान में अधिक लोग रहते हैं। गाँव खुले एवं शांत होते हैं, परंतु शहर संकुचित और भीड़भाड़ वाले होते हैं। नगरों में भव्य और सुनियोजित मकान होते हैं। सड़कें साफ और चौड़ी होती हैं। पीने के पानी और रोशनी की व्यवस्था रहती है। आवागमन के साधनों की प्रचुरता रहती है। शहरों में प्रशासनिक केंद्र, अस्पताल, शैक्षणिक संस्थाओं की भी व्यवस्था रहती है। उनमें संपन्नता और वैभव की झलक होती है। इसके विपरीत गाँवों में संपन्नता के स्थान पर विपन्नता दिखलाई देती है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी शहर और गाँव एक-दूसरे से अलग होते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था जीवन-निर्वाह की होती है। इसके विपरीत शहरों की अर्थव्यवस्था मुद्राप्रधान होती है। शहरों की अधिकांश जनसंख्या गैर-कृषि व्यवसायों, विशेषतः नौकरी, उद्योग तथा व्यापारिक गतिविधियों में संलग्न रहती है। शहरी अर्थव्यवस्था ग्रामीण अर्थव्यवस्था की तुलना में अधिक गतिशील होती है। यह प्रतियोगिता और उद्यम की भावना से प्रेरित रहती है।

5. एक औपनिवेशिक शहर के रूप में बंबई के विकास को दिखाएँ।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - 17वीं शताब्दी में बंबई, जो सात टापुओं का समूह था, को इंगलैंड के राजा चार्ल्स द्वितीय ने ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया। कंपनी ने बंबई को अपनी व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र बनाया। यह नगर सूरत के स्थान पर कपड़ा व्यापार का केंद्र बन गया। 19वीं शताब्दी से बंबई का विकास एक बंदरगाह और कंपनी के मुख्यालय के रूप में होने लगा। यहाँ से अफीम और कपास का निर्यात होता था। यह उद्योग और व्यापार तथा प्रशासन का केंद्र बन गया। 1819 में कंपनी ने बंबई को बंबई प्रेसीडेंसी की राजधानी बनाई। अतः, पश्चिमी भारत का यह प्रमुख नगर बन गया।

आरंभ में इस नगर का विकास किसी योजनानुसार नहीं हुआ, परंतु बाद में नगर- नियोजन की प्रक्रिया अपनाई गई। 1898 में सिटी ऑफ बॉम्बे इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट बनाया गया जिसका उद्देश्य शहर को साफ-सुथरा बनाना था। 1784 में बंबई के तत्कालीन गवर्नर विलियम हॉर्नबी के निर्देशानुसार समुद्र के किनारे-किनारे विशाल दीवार का निर्माण करवाकर नगर में आनेवाले समुद्री पानी को रोक दिया गया था। बढ़ती आबादी और व्यावसायिक कार्यों को ध्यान में रखते हुए पश्चिमी तटक्षेत्र को विकसित करने की योजना बनाई गई। इसलिए, 1864 में कोलाबा कॉजवे बनाया गया। 20वीं शताब्दी में भूमि विकास की अनेक परियोजनाएँ लागू की गईं। 1914-18 के बीच बॉम्बे पोर्ट ट्रस्ट ने बालार्ड एस्टेट का निर्माण किया। बंबई की शान मरीन ड्राइव भी बनाई गई। इस प्रकार, बंबई (मुंबई) एक महानगर में परिवर्तित हो गया।

6. सिंगापुर के विकास को रेखांकित करें।

उत्तर - औपनिवेशिक शासन के दौरान सिंगापुर में सिर्फ 'श्वेत' बस्तियों को ही योजनानुसार विकसित किया गया था। अश्वेत गंदे और भीड़-भाड़ वाले इलाकों में रहते थे। 1965 में पीपुल्स एक्शन पार्टी के अध्यक्ष ली कुवान येव के नेतृत्व में सिंगापुर को आजादी मिलने के बाद सुनियोजित रूप से इसका विकास किया गया। अब इसको आधुनिक रूप में विकसित किया गया। आवासीय और विकास योजनाएँ लागू की गई। अधिकांश नागरिकों के लिए बहुमंजिले, स्वच्छ और हवादार मकान बनवाए गए। सरकार के द्वारा लगभग 86 प्रतिशत जनता को अच्छे मकान दिए गए। इससे सरकार को जनता का समर्थन मिला। बाहरी गलियारों के कारण अपराध कम हुए। सामुदायिक कार्यों के लिए इन इमारतों में पर्याप्त खुली जगह रखी गई। समुद्री जमीन को विकसित कर आकर्षक सिंगापुर मरीना बनाया गया। शहर में लोगों के आने पर नियंत्रण रखा जाने लगा। भारतीय, चीनी और मलय नागरिकों में नस्ली सामाजिक टकराव को रोकने के लिए आपसी सामाजिक संबंधों को नियंत्रित किया गया। समाचारपत्रों एवं अन्य संचार माध्यमों द्वारा भी सामाजिक संबंधों को नियंत्रित किया गया। अपराधों पर अंकुश लगाया गया।

PDFSARTHI.COM

परिणामस्वरूप, सिंगापुर भौतिक सुविधाओं से संपन्न राष्ट्र बन गया। इन प्रयासों के बावजूद बहुत सारे लोगों का मानना है कि सिंगापुर में जीवंत और चुनौतीपूर्ण राजनीतिक संस्कृति का विकास नहीं हो सका ।

7. पाटलिपुत्र (पटना) के इतिहास का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर - बिहार की राजधानी पटना शहरीकरण और विकास की प्रक्रिया का एक अच्छा उदाहरण है। यह विश्व के प्राचीनतम नगरों में से एक है। प्राचीनकाल में यह नगर पाटलिपुत्र, कुसुमपुर, पुष्पपुर के नाम से विख्यात था। यह एक जलदुर्ग के समान था। पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में इस नगर की स्थापना हुई। 457 ईसा पूर्व में मगध साम्राज्य की राजधानी राजगृह से स्थानांतरित कर पाटलिपुत्र में स्थापित की गई। नंदों और मौर्यों के शासनकाल में इस नगर का चतुर्दिक विकास हुआ। गुप्तकाल तक पाटलिपुत्र राजनीति, शिल्प, व्यापार, शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बना रहा।

गुप्तोत्तर काल में इस नगर का पतन हुआ। ह्वेनसांग नगर को उजाड़ बतलाता है। आगे चलकर इसका पुनरुत्थान हुआ। 1541 में अफगान शासक शेरशाह ने गंगा- गंडक के संगम पर एक किला का निर्माण करवाया। उस समय से पाटलिपुत्र पटना के रूप में जाना जाने लगा। 17वीं शताब्दी के आरंभ में पटना अजीमाबाद के नाम से जाना गया। इसी समय यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों का आगमन पटना में सिखों के दसवें और अंतिम गुरु, गुरु गोविंद सिंह का जन्म यहीं हुआ । इसलिए, इसे हुआ। पटना साहिब भी कहा जाता है। 1912 में यह बिहार- उड़ीसा की राजधानी तथा 1935 से लगातार बिहार की राजधानी बना हुआ है। आधुनिक पटना का निर्माण अँगरेजों ने नगर के पश्चिमी भाग में करवाया। वर्तमान समय में पटना राजनीति, व्यापार, शिक्षा एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों का केंद्र है।

6. Urbanization And Urban Life

1. एक प्रतियोगी एवं उद्यमी प्रवृत्ति से प्रेरित किस, प्रकार की अर्थव्यवस्था लागू की गई?

(a) वस्तु अर्थव्यवस्था

(b) मुद्रा प्रधान अर्थव्यवस्था

(c) मुद्रा

PDF SARTHI.COM

(d) इनमें से कोई नहीं

Ans – B

2. औद्योगिकीकरण ने किसके स्वरूप को गहन रूप से प्रभावित किया?

(a) ग्रामीणीकरण

(b) शहरीकरण

(c) कसबों

(d) बंदरगाहों

Ans – B

3. सामंती व्यवस्था से हटकर किस प्रकार की शहरी व्यवस्था की प्रवृत्ति बढ़ी?

(a) प्रगतिशील प्रवृत्ति

(b) आक्रामक प्रवृत्ति

(c) रूढ़िवादी प्रवृत्ति

(d) शोषणकारी प्रवृत्ति

Ans – A

4. स्थायी कृषि के प्रभाव से किसका एकीकरण संभव हुआ?

(a) संपत्ति का

(b) ज्ञान का

(c) शांति का

(d) बहुमूल्य धातु का

PDF SARTHI.COM

Ans – A

5. आधुनिक नगरों का विकास कब से हुआ?

(a) मेसोपोटामिया की सभ्यता से

(b) हड़प्पा की सभ्यता से

(c) पुनर्जागरण से

(d) औद्योगिक क्रांति से

Ans – D

6. जनसंख्या का घनत्व सबसे अधिक कहाँ होता है?

(a) ग्राम

(b) कसबा

(c) नगर

(d) महानगर

Ans – D

7. 1810 से 1880 ई० तक लंदन की आबादी 10 लाख से बढ़कर कहाँ तक पहुँची?

(a) 20 लाख

(b) 30 लाख

(c) 40 लाख

(d) 50 लाख

Ans – C

PDFSARTHI.COM

8. आधुनिक शहर सबसे पहले कहाँ बसने शुरू हुए थे?

(a) चीन

(b) जापान

(c) इंगलैंड

(d) भारत

Ans – C

9. गार्डन सिटी की योजना किसने बनाई?

(a) रेड अनविन ने

(b) बैरी

(c) एवंनेजर व

(d) विलियम हॉर्नी

Ans – C

10. "संयमता आल" किस महानगर में चलाया गया?

(a) लंदन में

(b) न्यूयार्क में

(c) बंबई में

(d) कलकता में

Ans – A

PDF SARTHI.COM

11. लंदन में भूमिगत रेल किस वर्ष आरंभ हुई?

(a) 1763 में

(b) 1863 में

(c) 1787 में

(d) 1887 में

Ans – B

12. " बिटर कार्ड ऑफ आउटकास्ट लंदन" के लेखक थे-

(a) गैरेथ स्टैडमैन जीन्स

(b) हैनरी मेह

(c) ऍंड्रयू मीयनर्स

(d) चार्ल्यं डिकेंस

Ans – C

13. लंदन में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा कब लागू हुआ?

(a) 1850

(b) 1855

(c) 1860

(d) 1870

Ans – B

PDFSARTHI.COM

14. चार्टिस्ट आंदोलन कहाँ हुआ था?

(a) आस्ट्रिया

(b) यूनान

(c) फ्रांस

(d) इंग्लैंड

Ans – D

15. नगरों में किस अवधारणा पर बल दिया गया?

(a) सामुदायिक

(b) व्यक्तिवादी

(c) स्त्रियों की स्वतंत्रता

(d) साम्प्रदायिकता

Ans – B

16. 'चार्टिस्ट आंदोलन' क्यों चलाया गया?

(a) कारखानों में काम की अवधि कम करने के लिए

(b) बालिग पुरुषों के लिए मताधिकार की माँग के लिए,

(c) बालिग स्त्रियों के लिए मताधिकार की माँग के लिए,

(d) गरीबों को आवासीय सुविधा मुहैया कराने के लिए

Ans – B

PDFSARTHI.COM

17. शहर की आधुनिक व्यक्ति का किस प्रकार का क्षेत्र माना जाता है?

(a) सीमित क्षेत्र

(b) प्रभाव क्षेत्र

(c) विस्तृत क्षेत्र

(d) उपर्युक्त सभी

Ans – B

18. शब्द का प्रयोग किसके लिए किया जाता भेटो शब्द का प्रयोग किसके लिए किया जाता था?

(a) यूनानियों की बस्ती के लिए

(b) यहूदियों की बस्ती के लिए

(c) अरब वालों के बस्ती के लिए

(d) इसाईयों की बस्ती के लिए

Ans – B

19. लैसेज फेयर के सिद्धांत में किसको पूरी स्वतंत्रता मिली हुई थी?

(a) किसानों को

(b) मजदूरों को

(c) व्यापारियों को

(d) पूँजीपतियों को

Ans – D

PDFSARTHI.COM

20. शहरों में कौन-सा वर्ग बुद्धिजीवी वर्ग के रूप में विख्यात हुआ?

(a) पूँजीपति वर्ग

(b) श्रमिक वर्ग

(c) उद्योगपति वर्ग

(d) मध्यम वर्ग

Ans – D

21. पूँजीपति वर्ग के द्वारा किस वर्ग का शोषण हुआ?

(a) श्रमिक वर्ग

(b) मध्यम वर्ग

(c) कृषक वर्ग

(d) सभी वर्ग

Ans – A

22. किसी की राजधानी बनाई गई?

(a) 1601 में

(b) 1757 में

(c) 1819 में

(d) 1912 में

PDF SARTHI.COM

Ans – C

23. ब्रिटेन के किस राजा ने ईस्ट इंडिया कंपनी को दिया था ?

(a) जेम्स प्रथम ने

(b) जेम्स द्वितीय

(c) चा प्रथम

(d) वा द्वितीय ने

Ans – D

24. 1863 में निरोधक कानून पारित करने वाला भारत का पहला शहर कौन-सा था?

(a) अहमदाबाद

(b) कलकत्ता

(c) दिल्ली

(d) मद्रास

Ans – B

25. दादा साहेब फाल्के ने निम्नलिखित में से किस फिल्म का निर्माण किया?

(a) राजा हरिशचंद्र

(b) झाँसी की रानी

(c) सी०आई०डी०

PDF SARTHI.COM

(d) गेस्ट हाउस

Ans – A

26. बंबई में किराया कानून किस वर्ष लागू किया गया?

(a) 1860 में

(b) 1898 में

(c) 1918 में

(d) 1935 में

Ans – C

27. औपनिवेशिक भारत की वाणिज्यिक राजधानी कौन थी?

(a) बंबई

(b) मद्रास

(c) कलकत्ता

(d) विशाखापतनम्

Ans – A

28. बंबई की चॉल किस प्रकार की इमारत थी?

(a) एकमजली इमारत

(b) बहुमंजिली इमारत

(c) धनी लोगों की इमारत

(d) सरकारी कर्मचारियों की इमारत

PDF SARTHI.COM

Ans – B

29. भारत में केनाल कॉलनी किस प्रांत में बनाई गई?

(a) पंजाब में

(b) उत्तर प्रदेश में

(c) मध्यप्रदेश में

(d) राजस्थान में

Ans – A

30. एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में सिंगापुर का उदय किस वर्ष हुआ?

(a) 1919 में

(b) 1945 में

(c) 1955 में

(d) 1965 में

Ans – D

31. वेरान हॉसमान कौन था?

(a) इंगलैंड का इंजीनियर

(b) सियों का प्रीफेक्ट

(c) बंबई का उद्योगपति

PDF SARTHI.COM

(d) कलकता का व्यापारी

Ans – B

32. सिखों के दसवें और अंतिम गुरु श्री गोबिन्द सिंह का जन्म बिहार के किस नगर में हुआ था?

(a) मुंगेर

(b) खगड़िया

(c) पटना

(d) इनमें से कोई नहीं

Ans – C

33. पटना में गोलघर किस उद्देश्य से बनाया गया था?

(a) सैनिक रखने के लिए

(b) अस्त्र-शस्त्र रखने के लिए

(c) अनाज रखने के लिए

(d) पूजा करने के लिए

Ans – C

34. पटना में गोलघर का निर्माण किस वर्ष किया गया?

(a) 1786

(b) 1857

PDFSARTHI.COM

(c) 1764

(d) 1757

Ans – A

35. पाटलिपुत्र किसके समय में मगध की राजधानी थी?

(a) अजातशत्रु

(b) अशोक

(c) चंद्रगुप्त मौर्य

(d) उदायिन

Ans – D

36. मेगास्थनीज ने पाटलिपुत्र की यात्रा किसके समय में की?

(a) चन्द्रगुप्त प्रथम

(b) चन्द्रगुप्त द्वितीय

(c) हर्षवर्द्धन

(d) चन्द्रगुप्त मौर्य

Ans – D

PDF SARTHI.COM

37. बिहार को पृथक राज्य का दर्जा कब दिया गया?

(a) 1910 में

(b) 1911 में

(c) 1912 में

(d) 1913 में

Ans – C

38. पाटलिपुत्र नगर की स्थापना किस शासक द्वारा की गई?

(a) अजातशत्रु

(b) शेरशाह सूरी

(c) चन्द्रगुप्त मौर्य

(d) अजीमुशान

Ans – A

39. मगध राज्य की प्राचीनतम राजधानी कहाँ स्थित थी?

(a) बोधगया में

(b) राजगृह में

(c) वैशाली में

(d) पटना साहिब में

Ans – B

40. अंग्रेज यात्री राल्फ फिच ने पटना की यात्रा किस वर्ष की थी?

(a) 1856 में

(b) 1857 में

PDF SARTHI.COM

(c) 1858 में

(d) 1859 में

Ans – A

41. तख्त श्री हरमंदरजी साहिब कहाँ स्थित है?

(a) पटना साहिब में

(b) अमृतसर में

(c) लाहौर में

(d) भिवंडी में

Ans – A

42. सासाराम में किस ऐतिहासिक शासक का मकबरा स्थित है?

(a) अलाउद्दीन खिलजी

(b) औरंगजेब

(c) शेरशाह सूरी

(d) कुतुबुद्दीन ऐबक

Ans – C

43. महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति कहाँ हुई?

(a) राजगीर

PDF SARTHI.COM

(b) बोध गया

(c) वैशाली

(d) सारनाथ

Ans – B

44. सासाराम नगर का विकास कब हुआ था?

(a) मध्ययुग में

(b) प्राचीन युग में

(c) आधुनिक युग में

(d) इनमें से कोई नहीं

Ans – A

PDF SARTHI.COM

7. व्यापार और भूमंडलीकरण

व्यापार:- दो व्यक्तियों या दो देशों के बीच खरीद विक्री को व्यापार कहते हैं।

भूमंडलीकरण:- दुनिया के सभी देशों को आपस में जोड़ना भूमंडलीकरण कहलाता है।

- सिंधु घाटी सभ्यता का व्यापारिक संबंध मिश्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता के साथ था।

विश्व बाजार:- वैसा बाजार जहां विश्व के सभी देशों की वस्तुएं आम लोगों के लिए उपलब्ध हो उसे विश्व बाजार कहते हैं ।

जैसे:- मुंबई

- दुनिया का सबसे पहला विश्व बाजार अलेक्जेंड्रिया था।
- अलेक्जेंड्रिया तीन महादेश अफ्रीका, यूरोप और एशिया का व्यापारिक केंद्र था।
- अलेक्जेंड्रिया को लाल सागर के मुहाने पर यूनानी विश्व विजेता सम्राट सिकंदर ने स्थापित किया था।

वाणिज्यिक क्रांति:- व्यापार के क्षेत्र में होने वाले अभूतपूर्व विकास और विस्तार को वाणिज्यिक क्रांति कहा जाता है।

- वाणिज्यिक क्रांति का केंद्र इंग्लैंड था।
- भौगोलिक खोजों, जागरण तथा राष्ट्रीय राज्यों के उदय ने वाणिज्यिक क्रांति को जन्म दिया।

औधोगिक क्रांति:- वास्तु शक्ति से संचालित मशीनों द्वारा बड़े-बड़े कारखाने में व्यापक पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन करना औद्योगिक क्रांति कहलाता है। औद्योगिक क्रांति का केंद्र इंग्लैंड था।

उपनिवेशवाद:- किसी शक्तिशाली दिवस द्वारा किसी कमजोर देश पर कब्जा करना उपनिवेशवाद कहलाता है।

- एशिया और अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका में यूरोपीय देशों द्वारा उपनिवेश का स्थापना किया गया।
- उपनिवेशवाद का उद्देश्य आर्थिक शोषण करना होता था।
- इंग्लैंड को अपने उपनिवेशों से कच्चा माल और बाजार दोनों मिल जाता था।
- इंग्लैंड के मैनचेस्टर, लिवरपूल, लंदन जैसे शहर उपनिवेशवाद का ही परिणाम था।

PDF SARTHI.COM

गिरमिटिया मजदूर:- औपनिवेशिक देश के ऐसे श्रमिक जिन्हे एक निश्चित समझौता द्वारा निश्चित समय के लिए अपने शासित क्षेत्रों क्षेत्र में ले जाकर कृषि करवाया जाता था, उसे गिरमिटिया मजदूर कहा जाता था।

- भारत के पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिम विहार पंजाब, हरियाणा से गन्ना की खेती के मजदूर की फिजी, मॉरीशस, जमैका, टोवेगो, त्रिनिदाड आदि देशों में मजदूर ले जाया जाता था।

विश्व बाजार की उपयोगिता :-

- व्यापारियों, श्रमिकों, पूंजीपत्तियां, मध्यम वर्ग तथा आम उपभोक्ताओं के हित को विश्व व्यापार सुरक्षित रखता है।
- विश्व बाजार में किसानों का उपज का अच्छा कीमत मिलता है।
- श्रमिक कुशल श्रमिकों को विश्व स्तर पर पहचान तथा महत्व मिलता है।
- विश्व बाजार में रोजगार के नए-नए अवसर सृजित होते हैं।

विश्व बाजार के लाभ :-

- व्यापार और उद्योग की तीव्र गति से वृद्धि।
- पूजीपति, मजदूर और मध्यम वर्ग नामक सामाजिक वर्ग का जन्म।
- बैंकिंग व्यवस्था का उदय और विकास ।
- औद्योगिकरण और और आधुनिकरण का उदय।
- औपनिवेशिक देश में संरचनात्मक क्षेत्र का विकास।
- नई-नई फसलों का उत्पादन।
- नई तकनीक का सृजन ।

विश्व बाजार के हानि :-

- औपनिवेशिक देश का शोषण।
- लघु और कुटीर कुटीर उद्योग का अंत।
- औपनिवेशिक देश में बेरोजगारी की समस्या ।
- औपनिवेशिक देश में गरीबी और भुखमरी की समस्या।

PDF SARTHI.COM

साम्राज्यवाद: शक्तिशाली देशों द्वारा कमजोर देश पर सैनिक शक्ति द्वारा विजय प्राप्त कर उसे अपने प्रत्यक्ष अधीन में रखना साम्राज्यवाद कहलाता है।

- यूरोपीय देशों द्वारा एशिया और अफ्रीका के क्षेत्र को साम्राज्यवाद के अधीन रखा गया।

प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव :-

- प्रथम विश्व युद्ध के कारण यूरोप की अर्थव्यवस्था तबाह हो गई।
- प्रथम विश्व युद्ध के बाद अमेरिका की संपन्नता बढ़ गई।

आर्थिक मंदी:- अर्थव्यवस्था में आने वाली वैसी स्थिति जब कृषि, उद्योग और व्यापार का विकास अवरुद्ध हो जाए, लाखों लोग बेरोजगार हो जाए, बैंकों और दिवालिया हो जाए तथा वस्तु और मुद्रा दोनों का बाजार में कोई कीमत ना रहे तो उसे आर्थिक मंदी कहा जाता है।

- विश्व व्यापी आर्थिक मंदी 1929 ईस्वी में आया था।
- द कॉमर्स ऑफ नेशन पुस्तक के लेखक कार्डलीफ है।

1929 के आर्थिक महामंदी के कारण :-

- कृषि का अधिक उत्पादन।
- उत्पाद के मूल्य में कमी।
- उपभोक्ता की कमी।
- अमेरिकी पूंजी के प्रवाह में कमी।

1929 के आर्थिक मंदी का विश्व पर प्रभाव :-

- अमेरिका का बैंकिंग व्यवस्था चौपट हो गया।
- गरीबी और बेरोजगारी बढ़ गया।
- ब्रिटेन और जर्मनी बहुत अधिक प्रभावित हुआ।
- फ्रांस पर इस मंदी का कम प्रभाव पड़ा।

1929 की आर्थिक मंदी का भारत पर प्रभाव :-

PDF SARTHI.COM

- व्यापार में भारी गिरावट हुआ।
- कृषि उत्पादन के मूल्य में कमी हो गया।
- भारत में सोने का निर्यात बढ़ गया।
- मंदी सविनय अवज्ञा आंदोलन करने में एक महत्वपूर्ण कारण बना।

शेयर बाजार:- वैसा स्थान जहां व्यापारिक और औद्योगिक कंपनियों के बाजार मूल्य का निर्धारण होता है।

सट्टेबाजी:- कंपनियों में पूंजी लगाकर उसका हिस्सा खरीदना था कि उसका मूल्य बढ़े और पुनः उसे बेच देना सट्टेबाजी कहलाता है।

संरक्षणवाद:- अपने वस्तुओं को विदेशी वस्तुओं के आमद से होने वाले नुकसान से बचाने के लिए विदेशी वस्तु पर उचित आयात शुल्क लगाना संरक्षणवाद कहलाता है।

न्यू डील:- जन कल्याण की एक बड़ी योजना से संबंधित नई नीति जिसमें आर्थिक क्षेत्र के अलावा राजनीतिक और प्रशासनिक नीति को भी नियमित किया गया न्यू डील कहलाता है।

न्यू डील फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट के द्वारा लाया गया था।

अधिनायक:- वैसी राजनीतिक प्रशासनिक व्यवस्था जिसमें एक व्यक्ति के हाथ सारी शक्तियां केंद्रित होनी है। वह व्यक्ति परिस्थितियों का लाभ उठाकर जनता के बीच नायक की छवि बनाता है.

पूंजीवाद:- पूंजी पर आधारित एक व्यवस्था जो बाजार और मुनाफा के ऊपर टीका होता है उसे पूँजीवाद कहते हैं।

शीत युद्ध:- राज्य नियंत्रित और बाजार नियंत्रित अर्थव्यवस्था वाले देश के के नेतृत्वकर्ता देश सोवियत रूस और अमेरिका के बीच का सामाजिक तनाव शीत युद्ध कहलाता है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियां:- कई देशों में एक ही साथ व्यापार और व्यवसाय करने वाले कंपनियों को बहुराष्ट्रीय कंपनी कहा जाता है।

1. गिरमिटिया मजदूरों पर एक टिप्पणी लिखें।

PDF SARTHI.COM

उत्तर - गिरमिटिया मजदूर औपनिवेशिक देशों के वैसे श्रमिक थे जिन्हें अनुबंध के अंतर्गत भारत से ले जाया गया। अनुबंध के अनुसार, उन्हें पाँच वर्षों तक मालिक के साथ काम करना आवश्यक था। इसके बाद ही वे स्वदेश लौट सकते थे। इस अनुबंध व्यवस्था ने एक नई दासप्रथा को जन्म दिया। इन श्रमिकों को पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार, पंजाब, हरियाणा से जमैका, फिजी, त्रिनिदाद, टोबैगो, मॉरीशस आदि देशों में ले जाया गया। इन्हें मुख्यतः नगदी फसलों (गन्ना) के उत्पादन में लगाया जाता था। 1921 में ब्रिटिश सरकार ने यह व्यवस्था बंद कर दी।

2. 1929 के आर्थिक संकट के कारणों का संक्षेप में उल्लेख करें।

उत्तर - (i) कृषिक्षेत्र में अतिउत्पादन - प्रथम विश्वयुद्ध के बाद कृषि उत्पादों, जैसे गेहूँ के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई तथा कीमतें घट गईं जिससे उनका खरीददार नहीं रहा। अतिउत्पादन महामंदी का प्रमुख कारण बन गया।

(ii) उपभोक्ता की कमी - गरीबी एवं बेरोजगारी के कारण अन्य उत्पादों की बिक्री भी कम हो गई।

(iii) अमेरिकी पूँजी के प्रवाह में कमी - 1928-29 के मध्य अमेरिकी विदेशी कर्ज में भारी गिरावट आई। इससे अमेरिकी कर्ज पर आश्रित राज्यों के लिए संकट उत्पन्न हो गया। इससे महामंदी की स्थिति आ गई।

3. भारत पर आर्थिक महामंदी के क्या प्रभाव पड़े?

उत्तर - (i) आर्थिक महामंदी से भारत का आयात-निर्यात व्यापार घटकर आधा हो गया।

(ii) सबसे बुरी स्थिति किसानों की हुई।

(iii) बंगाल के पटसन उत्पादक महामंदी से बरबाद हो गए।

(iv) शहरी वर्ग पर महामंदी का प्रभाव नहीं पड़ा।

(v) महामंदी के प्रभाव को कम करने के लिए सरकार भारत से सोने का निर्यात करने लगी।

(vi) आर्थिक महामंदी महात्मा गाँधी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने का एक कारण बन गई।

4. यूरोपीय राष्ट्रों ने महामंदी के प्रभाव से मुक्त होने के लिए क्या प्रयास किए?

उत्तर - महामंदी के प्रभाव से बाहर आने तथा अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए अनेक प्रयास किए गए। सर्वप्रथम कड़ा मुद्रा नियंत्रण स्थापित किया गया। पूर्वी यूरोप के कृषि-प्रधान राष्ट्रों तथा कॉमनवेल्थ राष्ट्रों के

PDF SARTHI.COM

प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन 1932 में ओटावा में आयोजित किया गया। इसमें आयात-निर्यात को संतुलित करने का प्रयास किया गया। ओस्लो गुट का गठन कर क्षेत्रीय आर्थिक प्रबंधन किया गया। 1932 के. लोजान सम्मेलन द्वारा जर्मनी द्वारा फ्रांस को दी जानेवाली राशि में कटौती की गई। फ्रांस के विदेश मंत्री ब्रिया ने यूरोपीय आर्थिक संघ के गठन का सुझाव दिया। राष्ट्रसंघ ने भी अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को नियमित करने का प्रयास किया। 1933 के लंदन सम्मेलन में अनेक आर्थिक सुधारों की चर्चा की गई।

5. वृहत उत्पादन व्यवस्था से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यह व्यवस्था अमेरिकी अर्थव्यवस्था की एक विशेषता बन गई। इसका आरंभ हेनरी फोर्ड ने कार उद्योग से किया। उन्हें वृहत उत्पादन व्यवस्था का प्रणेता माना जाता है। इससे उत्पादन बढ़ा, लागत और कीमत में कमी आई, मजदूरों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ तथा उपभोक्ता वस्तुओं की माँग बढ़ गई। साथ ही, हायर परचेज (किश्त पर सामान खरीदने की परंपरा भी आरंभ हुई।

6. औद्योगिक क्रांति ने विश्व बाजार के स्वरूप का विस्तार कैसे किया ?

उत्तर - विश्व बाजार के स्वरूप को विकसित करने में औद्योगिक क्रांति की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। कारखानों के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने तथा उत्पादित वस्तुओं के लिए बाजार उपलब्ध कराने का काम विश्व बाजार ने किया। इस प्रक्रिया में उपनिवेशवाद ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया। साथ ही, व्यापार, पूँजी के प्रवाह और श्रमिकों के पलायन ने भी विश्व बाजार के विस्तार में सहयोग दिया।

7. विश्व बाजार के लाभ-हानि पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर - विश्व बाजार के लाभ -

(i) यह सभी वर्गों के हितों की सुरक्षा करता है।

(ii) इससे व्यापार और उद्योग को तीव्र गति मिली।

(iii) बैंकिंग और बीमा व्यवस्था का उदय हुआ।

(iv) उपनिवेशों में औद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण हुआ, जैसे भारत में।

(v) कृषि क्षेत्र में परिवर्तन आया।

PDF SARTHI.COM

(vi) शहरीकरण और जनसंख्या में वृद्धि हुई।

हानियाँ - (i) एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का युग आरंभ हुआ। (ii) गरीबी, अकाल और भुखमरी बढ़ गई। (iii) उग्र राष्ट्रवाद का विकास हुआ।

8. विश्व बाजार की उपयोगिता पर प्रकाश डालें।

उत्तर - आर्थिक गतिविधियों के संचालन में विश्व बाजार की महत्त्वपूर्ण उपयोगिता है। विश्व बाजार व्यापारियों, पूँजीपतियों, किसानों, श्रमिकों, मध्यम वर्ग तथा सामान्य उपभोक्ता वर्ग के हितों की सुरक्षा करता है। इसके माध्यम से किसान अपने उत्पाद व्यापारियों के माध्यम से दूरस्थ स्थानों और देशों में बेचकर अधिक मुनाफा कमाते हैं। कुशल श्रमिकों को विश्व स्तर पर पहचान और आर्थिक लाभ मिलता है। वैश्विक बाजार में नए रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होते हैं। विश्व बाजार के द्वारा आधुनिक विचारों और नई चेतना का भी विकास और प्रचार-प्रसार होता है।

9. भूमंडलीकरण अथवा वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं? अथवा, भूमंडलीकरण को परिभाषित करें।

उत्तर - भूमंडलीकरण शब्द का पहला व्यवहार 1990 में अमेरिका के जॉन विलियम्सन ने किया। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विश्व के सभी राष्ट्र राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक रूप से एक-दूसरे से जुड़ गए। इस प्रक्रिया द्वारा विश्व में एकरूपता लाने का प्रयास किया गया। भूमंडलीकरण का आरंभ 15वीं-16वीं शताब्दी से माना जाता है। 19वीं शताब्दी के मध्य से प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ होने तक इसकी गति तीव्र, परंतु 1914 से 1991 के मध्य इसकी गति धीमी पड़ गई। सोवियत संघ के विघटन और अमेरिका नियंत्रित पूँजीवादी व्यवस्था के कारण भूमंडलीकरण (वैश्वीकरण) की प्रक्रिया पुनः बढ़ गई है।

10. भूमंडलीकरण में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका का उल्लेख करें। - बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया है। भारत जैसे

उत्तर - देशों में बेरोजगारी कम करने तथा सरकारी नौकरियों पर दबाव कम करने में इनकी अग्रणी भूमिका है। इन कंपनियों ने व्यापार और तकनीक का प्रसार कर समस्त विश्व को एक सूत्र में पिरो दिया है। इनकी आपसी प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्द्धा का प्रभाव व्यापार-वाणिज्य पर व्यापक रूप से पड़ा है। इन कंपनियों द्वारा विश्व अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण हो गया है।

11. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ क्या हैं?

PDF SARTHI.COM

उत्तर - ऐसी कंपनियाँ विश्व के अनेक देशों में एक ही साथ व्यापार करती हैं। इस प्रकार की कंपनियाँ 1920 के बाद ही स्थापित होने लगी थीं, परंतु द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात इनकी संख्या में तेजी से वृद्धि हुई । अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस इत्यादि ने अनेक देशों में व्यापारिक और औद्योगिक कंपनियाँ खोलीं। भारत में आज भी ऐसी अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कार्यरत हैं जिनमें लाखों लोगों को रोजगार मिला हुआ है।

12. संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन क्यों बुलाया गया? इसकी क्या उपलब्धियाँ थीं? अथवा, ब्रेटन वुड्स समझौता की व्याख्या करें।

उत्तर - युद्धोत्तर अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के सुझावों के कार्यान्वयन की प्रक्रिया पर विचार-विमर्श करने के लिए इस सम्मेलन का आयोजन 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशायर में ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर किया गया। इस सम्मेलन में दो अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संस्थानों का गठन किया गया— (i) अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) तथा (ii) अंतरराष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक अथवा विश्व बैंक (World Bank) ।

13. 1950 के बाद विश्व अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए किए जानेवाले प्रयासों पर प्रकाश डालें।

उत्तर - द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात व्यापक तबाही के प्रभाव को कम करने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक पुनर्निर्माण के प्रयास आरंभ किए गए। 1957 में यूरोपीय आर्थिक समुदाय की स्थापना कर एक साझा बाजार की स्थापना की गई। 1995 में विश्व व्यापार संगठन बनाया गया। विभिन्न देशों ने अपने आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिए जी-77, जी-8, ओपेक, आसियान, दक्षेस और यूरोपीय संघ का गठन किया।

14. भूमंडलीकरण के भारत पर प्रभावों को स्पष्ट करें।

उत्तर - भारत पर भूमंडलीकरण का प्रभाव जीविकोपार्जन और आर्थिक क्षेत्र में व्यापक रूप से पड़ा है। इसका प्रभाव सेवा क्षेत्र, बैंकिंग एवं बीमा क्षेत्र, पर्यटन उद्योग, सूचना और संचार के क्षेत्र में सर्वाधिक पड़ा है। इसने बेरोजगारी को कम किया है तथा रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। नागरिकों का जीवन स्तर भी बढ़ा है।

व्यापार और भूमंडलीकरण

1. 1929 के आर्थिक संकट के कारणों का संक्षेप में उल्लेख करें।

अथवा, 1929 के आर्थिक संकट के कारणों और परिणामों की विवेचना करें।

PDF SARTHI.COM

उत्तर - 1929 का आर्थिक संकट अनेक कारणों से हुआ। इसका विश्व अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

संकट के कारण - (i) कृषि क्षेत्र में अतिउत्पादन - प्रथम विश्वयुद्ध के बाद कृषि उत्पाद में बढ़ोतरी के कारण खाद्यान्नों; जैसे- गेहूँ की आपूर्ति आवश्यकता से अधिक हो गई। इससे अनाज के मूल्य में कमी आई और अनाज का खरीददार नहीं रहा ।

(ii) उपभोक्ता की कमी - उपभोक्ता वस्तुओं का भी अतिउत्पादन हुआ, परंतु गरीबी, बेरोजगारी से इन्हें खरीदनेवाला नहीं रहा। इससे बाजार आधृत अर्थव्यवस्था लड़खड़ा गई।

(iii) अमेरिकी पूँजी के प्रवाह में कमी - 1923 के बाद अमेरिका जो 'विश्व कर्जदाता' था, ने कर्ज देना बंद कर दिया। 1928-29 के मध्य अमेरिकी कर्ज में भारी कमी आई। इससे अमेरिकी कर्ज पर आश्रित देशों के लिए तथा स्वयं अमेरिका के लिए आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया।

परिणाम - (i) आर्थिक महामंदी से यूरोपीय अर्थव्यवस्था चरमरा गई। यूरोप के अनेकों बैंक रातों-रात बंद हो गए, मुद्रा का अवमूल्यन हो गया। इससे विश्व बाजार- आधृत अर्थव्यवस्था को गहरी ठेस लगी।

(ii) अमेरिका पर महामंदी का सबसे अधिक बुरा प्रभाव पड़ा। अमेरिकी बैंकिंग व्यवस्था चौपट हो गई, सट्टाबाजी बढ़ी, न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज में शेयरों के मूल्य में भारी गिरावट आई। गरीबी और बेरोजगारी बढ़ गई।

(iii) जर्मनी और ब्रिटेन भी आर्थिक संकट से प्रभावित हुए। जर्मन मुद्रा मार्क का अवमूल्यन हो गया। जर्मनी में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई जिसका लाभ हिटलर ने उठाया। ब्रिटेन ने महामंदी से बचने के लिए आर्थिक संरक्षणवाद की नीति अपनाई जिससे विश्व बाजार प्रभावित हुआ।

(iv) भारत में किसानों की स्थिति दयनीय हो गई। बंगाल का पटसन उद्योग बुरी तरह प्रभावित हुआ। व्यापार में भी गिरावट आई। भारत से ब्रिटेन सोना का निर्यात करने लगा। इससे असंतोष बढ़ा। इसका लाभ उठाकर महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ किया।

2. विश्व बाजार के आलोक में 1920-45 के मध्य बदलते अंतरराष्ट्रीय संबंधों की विवेचना कीजिए।

अथवा, 1919 से 1945 के बीच विकसित होनेवाले राजनीतिक और आर्थिक संबंधों पर टिप्पणी लिखें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - युद्धोत्तर आर्थिक व्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में दो चरण दिखलाई देते हैं। पहला चरण 1920 से 1929 तक का तथा दूसरा 1929 से द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति तक का था।

पहला चरण आर्थिक महामंदी आरंभ होने के पूर्व आर्थिक विकास और संपन्नता का काल था। इस समय विश्व पर यूरोप का प्रभाव कमजोर पड़ गया। दूसरी ओर - संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान तथा सोवियत संघ का प्रभाव बढ़ गया। नई तकनीक के उपयोग से उत्पादन बढ़ा तथा उपभोक्ता वर्ग का भी विकास हुआ। अमेरिका में पूँजीवादी तथा सोवियत संघ में साम्यवादी अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। दोनों खेमे विश्व में अपनी व्यवस्था का प्रचार करने लगे। अपने आर्थिक विकास को बनाए रखने के लिए जापान ने आक्रामक नीति अपनाई जिसका शिकार चीन बना। औपनिवेशिक देशों में, भारत सहित, युद्ध के विनाशकारी आर्थिक परिणामों के फलस्वरूप राष्ट्रीय चेतना बढ़ी।

दूसरे चरण में आर्थिक महामंदी के प्रभावों को समाप्त करने अथवा उन्हें नियंत्रित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंध बढ़ाए गए। इसका आरंभ अमेरिका ने किया। 1932 में राष्ट्रपति एफ० डी० रूजवेल्ट ने आर्थिक महामंदी से उबरने के लिए न्यू डील की नीति अपनाई। यूरोपीय राष्ट्रों ने कड़ा मुद्रा नियंत्रण स्थापित किया। 1932 में ओटावा सम्मेलन में आयात-निर्यात को संतुलित करने का प्रयास हुआ। ओस्लो गुट का गठन कर क्षेत्रीय आर्थिक प्रबंधन किया गया। लोजान सम्मेलन द्वारा फ्रांस को जर्मनी से मिलनेवाली युद्ध क्षतिपूर्ति की राशि घटा दी गई। फ्रांस ने यूरोपीय आर्थिक संघ के गठन का सुझाव दिया। 1933 में लंदन सम्मेलन में मुद्रा में स्थिरता लाने, अंतरराष्ट्रीय व्यापार में संरक्षणवाद की नीति त्यागने एवं परस्पर सहयोग की नीति अपनाने पर बल दिया गया। आर्थिक मंदी के बाद उत्पन्न राजनीतिक व्यवस्था ने साम्यवाद के प्रसार का मार्ग भी प्रशस्त कर दिया। 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशायर के ब्रेटन वुड्स में संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन आयोजित किया गया। यहाँ अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्व बैंक का गठन कर विश्व अर्थव्यवस्था को नियोजित करने का प्रयास किया गया। 1945 में आयोजित याल्टा सम्मेलन द्वारा भी आर्थिक पुनर्निर्माण का कार्य आरंभ किया गया।

3. 1945-60 के मध्य अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंधों की विवेचना कीजिए।

उत्तर - 1945 के बाद की विश्व अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को क्रमशः साम्यवादी राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था और बाजार एवं मुनाफा-आधारित पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने नियंत्रित किया। साम्यवादी व्यवस्था का नेतृत्व सोवियत संघ ने और पूँजीवादी व्यवस्था का नेतृत्व अमेरिका ने किया। इसलिए, नई आर्थिक और राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा का विकास हुआ। दोनों विश्व के विभिन्न भागों में अपना प्रभाव बढ़ाने में लग गए। पूर्वी यूरोपीय राष्ट्रों

PDFSARTHI.COM

तथा नव-स्वतंत्र, एशियाई राष्ट्रों में भी सोवियत संघ ने अपना प्रभाव बढ़ाना चाहा। उत्तरी कोरिया और वियतनाम साम्यवादी प्रभाव में आ गए।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के हिमायती अमेरिका ने साम्यवादी विचारधारा और अर्थतंत्र के प्रसार को रोकने का प्रयास किया। उसने दक्षिण अफ्रीका तथा मध्य एवं पश्चिम एशिया के तेल से संपन्न राष्ट्रों में सैन्य बल का सहारा लेकर अपनी आर्थिक नीति को लागू किया। दक्षिण अमेरिका में भी यही नीति अपनाई गई। पश्चिम-मध्य एशियाई देशों पर अपना प्रभाव स्थापित कर अमेरिका ने तेल और गैस के स्रोत पर अपना प्रभाव जमा लिया। 1945-60 के मध्य पश्चिमी यूरोपीय देशों में आर्थिक संबंधों का विकास हुआ। इन राष्ट्रों ने समन्वय एवं सहयोग के एक नए युग का आरंभ किया जिसे यूरोपीय एकीकरण कहा जाता है। 1944 में नीदरलैंड, बेल्जियम और लक्जेमबर्ग ने बेनेलेक्स संघ का गठन किया। 1948 में ब्रूसेल्स की संधि द्वारा कोयला और इस्पात के क्षेत्र में यूरोपीय आर्थिक सहयोग आरंभ हुआ। 1957 में यूरोपीय इकोनॉमिक कम्यूनिटी की स्थापना की गई। इन राष्ट्रों के प्रयासों से एक साझे बाजार की स्थापना की गई। अमेरिका का आर्थिक प्रभाव इन देशों पर बना रहा। नव-स्वतंत्र अफ्रीकी और एशियाई देशों पर भी सोवियत संघ और अमेरिका अपना प्रभाव स्थापित करने के लिए प्रयासशील हो गए।

4. भूमंडलीकरण ने किस प्रकार आमलोगों के जीवन को प्रभावित किया है ?

अथवा, भूमंडलीकरण के कारण आमलोगों के जीवन में आनेवाले परिवर्तनों को स्पष्ट करें।

उत्तर - भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के कारण विश्व के सभी राष्ट्र राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक रूप से एक-दूसरे से जुड़ गए। भूमंडलीकरण ने विश्व स्तर पर लोगों को भौतिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर एकीकृत कर एकरूपता लाने का प्रयास किया है। आमलोगों का जीवन भूमंडलीकरण से गहरे रूप से प्रभावित हुआ है। वर्तमान समय में जीविकोपार्जन और आर्थिक क्षेत्र में इसका व्यापक प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। भूमंडलीकरण ने राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को निरूपित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुक्त बाजार एवं व्यापार, खुली प्रतिस्पर्द्धा और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रसार हुआ है। उद्योग एवं सेवा क्षेत्र का निजीकरण एवं विस्तार हुआ है। इसका जनजीवन पर व्यापक असर पड़ा है। जीविकोपार्जन के क्षेत्र में यह प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखलाई देता है। 1991 के पश्चात सेवा, बीमा क्षेत्र, पर्यटन उद्योग, सूचना और संचार के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया है । सेवा क्षेत्र के अंतर्गत ऐसी आर्थिक गतिविधियाँ आती हैं जिसमें ग्राहकों को सुविधाएँ उपलब्ध कराकर उनके बदले पारिश्रमिक लिया जाता है। यातायात, बैंक और बीमा, पर्यटन, दूर-संचार की सुविधा

PDFSARTHI.COM

उपलब्ध कराने के व्यवसाय में लाखों लोगों को रोजगार मिले हैं। पर्यटन उद्योग का विकास होने से टूर एवं ट्रैवेल एजेंसियों की स्थापना हुई है। बड़े नगरों में शॉपिंग मॉल स्थापित किए गए हैं। बैंकिंग और बीमा क्षेत्र का विस्तार हुआ है। राष्ट्रीय संस्थाओं के अतिरिक्त निजी कंपनियाँ भी इसमें संलग्न हैं। विगत वर्षों में सबसे अधिक विस्तार सूचना और संचार के क्षेत्र में हुआ है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने सरकारी नौकरी पर दबाव कम कर दिया है। यह भूमंडलीकरण का ही प्रभाव है कि नागरिकों का जीवन स्तर बढ़ा है और उन्हें रोजगार के अवसर उपलब्ध हुए हैं।

5. 1929 के आर्थिक संकट के कारणों और परिणामों की विवेचना करें।

उत्तर - 1929 का आर्थिक संकट अनेक कारणों से हुआ। इसका विश्व अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

संकट के कारण - (i) कृषि क्षेत्र में अतिउत्पादन प्रथम विश्वयुद्ध के बाद कृषि उत्पाद में बढ़ोतरी के कारण खाद्यान्नों; जैसे- गेहूँ की आपूर्ति आवश्यकता से अधिक हो गई। इससे अनाज के मूल्य में कमी आई और अनाज का खरीददार नहीं रहा । अर्थशास्त्री काडलिफ के अनुसार, कृषि उत्पादन एवं खाद्यान्नों के मूल्य की विकृति 1929-32 के आर्थिक संकटों के प्रमुख कारण थे।

(ii) उपभोक्ता की कमी - उपभोक्ता वस्तुओं का भी अतिउत्पादन हुआ, परंतु गरीबी, बेरोजगारी से इन्हें खरीदनेवाला नहीं रहा। इससे बाजार आधृत अर्थव्यवस्था लड़खड़ा गई।

(iii) अमेरिकी पूँजी के प्रवाह में कमी - 1923 के बाद अमेरिका जो 'विश्व कर्जदाता' था, ने कर्ज देना बंद कर दिया। 1928-29 के मध्य अमेरिकी कर्ज में भारी कमी आई। इससे अमेरिकी कर्ज पर आश्रित देशों के लिए तथा स्वयं अमेरिका के लिए आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया।

परिणाम - (i) आर्थिक महामंदी से यूरोपीय अर्थव्यवस्था चरमरा गई। यूरोप के अनेकों बैंक रातों-रात बंद हो गए, मुद्रा का अवमूल्यन हो गया। इससे विश्व बाजार-आवृत अर्थव्यवस्था को गहरी ठेस लगी।

(ii) अमेरिका पर महामंदी का सबसे अधिक बुरा प्रभाव पड़ा। अमेरिकी बैंकिंग व्यवस्था चौपट हो गई, सट्टेबाजी बढ़ी, न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज में शेयरों के मूल्य में भारी गिरावट आई। गरीबी और बेरोजगारी बढ़ गई।

(iii) जर्मनी और ब्रिटेन भी आर्थिक संकट से प्रभावित हुए। जर्मन मुद्रा मार्क का अवमूल्यन हो गया। जर्मनी में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई जिसका लाभ हिटलर ने उठाया। ब्रिटेन ने महामंदी से बचने के लिए आर्थिक संरक्षणवाद की नीति अपनाई जिससे विश्व बाजार प्रभावित हुआ।

PDF SARTHI.COM

(iv) भारत में किसानों की स्थिति दयनीय हो गई। बंगाल का पटसन उद्योग बुरी तरह प्रभावित हुआ। व्यापार में भी गिरावट आई। भारत से ब्रिटेन सोना का निर्यात करने लगा। इससे असंतोष बढ़ा। इसका लाभ उठाकर महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ किया।

6. 1945-60 के मध्य अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंधों की विवेचना कीजिए।

उत्तर - 1945 के बाद की विश्व अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को क्रमशः साम्यवादी राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था तथा बाजार और मुनाफा- आधारित पूँजीवादी व्यवस्था ने नियंत्रित किया। दोनों व्यवस्थाएँ एक-दूसरे की विरोधी एवं प्रतिस्पर्द्धा थीं। इसलिए, नई आर्थिक और राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा की दौड़ आरंभ हुई। 1945-60 के मध्य पश्चिमी यूरोपीय देशों (ब्रिटेन, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, स्पेन) में आर्थिक संबंधों का विकास हुआ तथापि विश्व राजनीति और आर्थिक क्षेत्र में इन देशों का महत्त्व कमजोर पड़ गया। इसका प्रमुख कारण इनके उपनिवेशों का स्वतंत्र होना था। आर्थिक विपन्नता से बचने एवं साम्यवादी प्रभाव को रोकने के लिए इन राष्ट्रों ने समन्वय एवं सहयोग की नीति अपनाई जिसे यूरोपीयन एकीकरण कहा जाता है। ब्रूसेल्स की संधि (1948) द्वारा कोयला और इस्पात के क्षेत्र में यूरोपीय आर्थिक सहयोग आरंभ हुआ। 1957 में यूरोपीय इकोनॉमिक कम्यूनिटी (ई०ई०सी०) की स्थापना की गई। इसने एक साझा बाजार की स्थापना की। 1960 में ब्रिटेन भी इस समुदाय का सदस्य बन गया। अमेरिकी आर्थिक प्रभाव इस समुदाय पर बना रहा; क्योंकि उसी की सहायता से इन देशों का आर्थिक पुनर्निर्माण हुआ।

7. भूमंडलीकरण ने भारत को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर - भूमंडलीकरण से भारतीय व्यापार को हानि के साथ कुछ लाभ भी हुए। आरंभ में इंगलैंड भारत से भारी मात्रा में कपास का निर्यात करता था। परंतु, कृषि क्रांति ने कपास निर्यात में कमी कर दी। साथ ही, औद्योगिक क्रांति से सूती कपड़े का निर्यात भी घट गया। अब लंगलैंड के बने कपड़े भारत में भारी मात्रा में बिकने लगे। इस व्यवस्था ने भारतीय व्यापरियों को ब्रिटिश व्यापरियों से प्रतिस्पर्द्धा करने के लिए मजबूर किया। विश्व बाजार में यहाँ के बने कपड़ों का निर्यात केवल 15 प्रतिशत रह गया।

दूसरी तरफ, इस व्यवस्था ने कच्चे माल के निर्यात को बढ़ाया। नील के निर्यात में बढ़ोतरी हुई। अफीम के निर्यात में भी वृद्धि हुई, क्योंकि इसके व्यापार से ब्रिटेन चीन में प्रवेश करना चाहता था। 19वीं सदी में भारत से खाद्यान्न व

PDFSARTHI.COM

अन्य कच्चा माल का निर्यात भारी मात्रा में होने लगा। परंतु, भूमंडलीकरण से ब्रिटेन को अधिक लाभ हुआ और भारत में उसकी जड़ और मजबूत हो गई ।

7. Trade And Globalization

1. विश्व बाजार के रूप में पहला कौन-सा नगर उभरकर सामने आया?

(a) लंदन

(b) पेरिस

(c) अलेक्जेंड्रिया

(d) दिलमुन

Ans – C

2. अलेक्जेंड्रिया किस सागर के मुहाने पर बसा हुआ था?

(a) काला सागर

(b) लाल सागर

(c) अरब सागर

(d) भूमध्यसागर

Ans – B

3. प्राचीन काल में किस स्थल मार्ग से एशिया और यूरोप का व्यापार होता था?

(a) सूती मार्ग

(b) रेशम मार्ग

(c) उत्तरा पथ

PDF SARTHI.COM

(d) दक्षिण पथ

Ans – B

4. सिकंदर कहाँ का निवासी था?

(a) रोम

(b) चीन

(c) यूनान

Ans – C

(d) मिस्र

5. आधुनिक युग में अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में होनेवाली सबसे बड़ी क्रांति कौन-सी थी?

(a) वाणिज्यिक क्रांति

(b) औद्योगिक क्रांति

(c) साम्यवादी क्रांति

(d) भौगोलिक खोज

Ans – B

6. ईस्ट इंडिया कंपनी अफीम किस देश में भेजती थी?

(a) अफगानिस्तान

(b) अमेरिका

(c) जापान

PDF SARTHI.COM

(d) चीन

Ans – D

7. विश्व बाजार के स्वरूप का आधार क्या था?

(a) रेशम उद्योग

(b) लोहा उद्योग

(c) कोयला उद्योग

(d) वस्त्र उद्योग

Ans – D

8. विश्व बाजार का विस्तार आधुनिक काल में किस समय से आरंभ हुआ?

(a) 15वीं शताब्दी

(b) 18वीं शताब्दी

(c) 19वीं शताब्दी

(d) 20वीं शताब्दी

Ans – B

9. बाजार को स्वरूप विश्वव्यापी किस क्रांति के बाद हुआ?

(a) औद्योगिक क्रांति

(b) अमेरिकी क्रांति

(c) फ्रांसीसी क्रांति

(d) चीनी क्रांति

PDF SARTHI.COM

Ans – A

10. भारत के किस प्रदेश से अधिकांश गिरमिटिया श्रमिक बाहर ले जाए गए?

(a) राजस्थान से

(b) केरल से

(c) पंजाब से

(d) उत्तर प्रदेश से

Ans – B

11. गिरमिटिया मजदूर बिहार के किस क्षेत्र से भेजे जाते थे?

(a) पूर्वी क्षेत्र से

(b) पश्चिमी क्षेत्र से

(c) उत्तरी क्षेत्र से

(d) दक्षिणी क्षेत्र से

Ans – B

12. 'गिरमिटिया' किसे कहते हैं?

(a) अनुबंधित मजदूर को

(b) रोगियों को

(c) छिपकली को

(d) अंग्रेजी को

Ans – A

PDF SARTHI.COM

13. भारत में अकाल कब पड़े थे?

(a) 1850 1920

(b) 1860 1920

(c) 1870 से 1920

(d) 1870 1930

Ans – A

14. कच्चा कपास का निर्यात 1800 से 1872 के बीच 5 प्रतिशत से बढ़कर कितना प्रतिशत हो गया था?

(a) 40 प्रतिशत

(b) 35 प्रतिशत

(c) 50 प्रतिशत

(d) 45 प्रतिशत

Ans – B

15. इंग्लैंड कपास का आयात मुख्य रूप से कहाँ से करता था?

(a) भारत से

(b) चीन से

(c) फ्रांस से

(d) स्पेन से

Ans – A

16. पेरिस शांति समझौता कब हुआ था?

PDF SARTHI.COM

(a) 1918 में

(b) 1919 में

(c) 1920 में

(d) 1921 में

Ans – B

17. प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद किसके द्वारा यूरोप की अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया?

(a) रूस

(b) जर्मनी

(c) अमेरिका

(d) फ्रांस

Ans – B

18. 1923 में विश्व को पूँजी देने वाला दुनिया का सबसे बड़ा कर्जदाता देश कौन था?

(a) फ्रांस

(b) अमेरिका

(c) जर्मनी

(d) इंगलैंड

Ans – B

19. 'दि कॉमर्स ऑफ नेशन' पुस्तक के लेखक कौन थे?

PDF SARTHI.COM

(a) एडम स्मिथ

(b) काडलिफ

(c) कीन्स

(d) हैरोल्ड लास्की

Ans – C

20. विश्व व्यापी आर्थिक संकट किस वर्ष आरंभ हुआ था?

(a) 1914

(b) 1922

(c) 1929

(d) 1927

Ans – C

21. भारत में आर्थिक मंदी का सबसे बुरा प्रभाव किस पर पड़ा?

(a) मध्यम वर्ग

(b) जमींदारों पर

(c) किसानों पर

(d) व्यापारियों पर

Ans – C

22. गुलामी प्रथा का प्रचलन किस देश में था?

(a) भारत

PDF SARTHI.COM

(b) चीन

(c) अमेरिका

(d) रूस

Ans – C

23. आर्थिक महामंदी का विश्व अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा?

(a) उत्पादन में तेजी

(b) उपभोक्ता वस्तुओं की माँग में तेजी

(c) अकाल

(d) बेरोजगारी

Ans – D

24. कार्न लॉ द्वारा ब्रिटेन में किस अनाज को आयात प्रतिबंधित कर दिया गया?

(a) गेहूँ का

(b) चावल का

(c) मक्का का

(d) दलहन का

Ans – C

25. 1820 से 1914 के बीच विश्व व्यापार में कितना गुना की वृद्धि हो चुकी थी?

(a) 15 से 20 गुना

(b) 25 से 40 गुना

PDF SARTHI.COM

(c) 20 से 40 गुना

(d) 30 से 50 गुना

Ans – B

26. अमेरिकी मुद्रा का नाम क्या है?

(a) पौंड

(b) डॉलर

(c) मार्क

(d) रूबल

Ans – B

27. आर्थिक संकट (मंदी) के कारण यूरोप में कौन-सी नई शासन प्रणाली का उदय हुआ?

(a) साम्यवादी शासन प्रणाली

(b) लोकतांत्रिक शासन प्रणाली

(c) फाशीवादी नाजीवादी शासन

(d) पूँजीवादी शासन प्रणाली

Ans – C

28. वह देश जिसपर आर्थिक मंदी का प्रभाव बिलकुल नहीं पड़ा था?

(a) इंगलैंड

(b) अमेरिका

(c) जर्मनी

PDFSARTHI.COM

(d) रूस

Ans – D

29. अमेरिका के किस राष्ट्रपति डोल नवीन आर्थिक नीतियों को लागू

(a) निक्सन

(b) जार्ज वाशिंगटन

(c) फॅक्लीन डी रूजवेल्ट

(d) जार्ज बुश

Ans – C

30. वृहत् उत्पादन को नीति किसने अपनाई?

(a) रूजवेल्ट ने

(b) विंस्टन चर्चिल ने

(c) हेनरी फोर्ड ने

(d) स्टालिन ने

Ans – C

31. ओटावा सम्मेलन किस वर्ष हुआ था?

(A) 1929 में

(B) 1930 में

(C) 1932 में

(d) 1935 में

PDF SARTHI.COM

Ans – C

32. बृहत् उत्पादन व्यवस्था किस देश में आरंभ की गई?

(a) ब्रिटेन में

(b) रूस में

(c) अमेरिका में

(d) जर्मनी में

Ans – C

33. ब्रेटन वुड्स सम्मेलन किस वर्ष हुआ?

(a) 1947

(b) 1948

(c) 1944

(d) 1952

Ans – C

34. संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन किस वर्ष हुआ था?

(a) 1932 में

(b) 1933 में

(c) 1943 में

(d) 1944 में

Ans – D

PDF SARTHI.COM

35. 1945 के बाद विश्व में कितने अर्थव्यवस्था का प्रभाव बढ़ा?

(a) एक

(b) दो

(c) तीन

(D) चार

Ans – B

36. साम्यवादी अर्थव्यवस्था वाले देशों के गुट का नेतृत्व कौन कर रहा था?

(a) सोवियत रूस

(b) अमेरिका

(c) ब्रिटेन

(d) जर्मनी

Ans – A

37. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था वाले देशों के गुट का नेतृत्व कौन कर रहा था?

(a) सोवियत रूस

(b) इंगलैंड

(c) अमेरिका

(d) फ्रांस

Ans – C

PDFSARTHI.COM

38. 1945 से 1960 के दशक में महत्वपूर्ण संबंधों का विकास कहाँ हुआ था?

(a) पूर्वी यूरोप

(b) पश्चिमी यूरोप

(c) अमेरिका

(d) अफ्रीका

Ans – B

39. व्रिया किस देश के विदेश मंत्री थे

(a) फ्रांस

(b) इंगलैंड

(c) अमेरिका

(d) जर्मनी

Ans – A

40. ब्रेसेल्स संधि कब हुआ?

(a) 1946

(b) 1948

(c) 1945

(d) 1944

Ans – B

41. W.T.O (विश्व व्यापार संगठन) की स्थापना किस वर्ष की गई?

PDF SARTHI.COM

(a) 1995

(b) 1994

(c) 1996

(d) इनमें से कोई नहीं

Ans – A

42. दक्षेस की स्थापना किस वर्ष हुई?

(a) 1964

(b) 1967

(c) 1971

(d) 1985

Ans – D

43. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय का प्रवाह किस पर

(a) व्यापार

(b) श्रम

(c) पूँजी

(d) उद्योग

Ans – D

44. भूमंडलीकरण शब्द का ईजाद किसने किया?

(a) कीन्स ने

PDF SARTHI.COM

(b) स्त्रियाँ ने

(c) फ्रेडरिक विलियम ने

(d) जॉन विलियम्सन ने

Ans – D

45. जी-8 की स्थापना कब हुई थी?

(a) 1975 में

(b) 1977 में

(c) 1978 में

(d) 1979 में

Ans – A

46. भूमंडलीकरण की शुरुआत किस दशक में हुई?

(a) 1990 के दशक में

(b) 1970 के दशक में

(c) 1960 के दशक में

(d) 1980 के दशक में

Ans – A

47. द्वितीय महायुद्ध के बाद यूरोप में कौन-सी संस्था का उदय आर्थिक दुष्प्रभावों को समाप्त करने के लिए हुआ?

(a) सार्क

(b) नाटो

PDF SARTHI.COM

(c) ओपेक

(d) यूरोपीय संघ

Ans – D

48. विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय कहाँ है?

(a) जेनेवा

(b) पेरिस

(c) न्यूयार्क

(d) वाशिंगटन

Ans – A

49. विश्व बैंक की स्थापना कब हुई?

(a) 1919

(b) 1929

(c) 1944

(d) 1949

Ans – C

50. भूमंडलीकरण की शुरूआत कब से हुई?

(a) 1990

(b) 1991

(c) 1992

PDF SARTHI.COM

(d) 1994

Ans – B

51. 1991 के बाद संपूर्ण विश्व में किस क्षेत्र का विस्तार काफी तीव्र गति से हुआ?

(a) सेवा क्षेत्र

(b) कृषि क्षेत्र

(c) उद्योग क्षेत्र

(d) व्यापार क्षेत्र

Ans – A

PDF SARTHI.COM

8.प्रेस, संस्कृति और राष्ट्रवाद

छापाखाना के विकास कई चरणों में हुए :-

- **प्रथम चरण:-** आरंभ से गुटेनबर्ग तक प्रिंटिंग प्रेस का विकास ।
- **द्वितीय चरण:-** गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग प्रेस का विकास।
- **तृतीय चरण:-** गुटेनबर्ग के बाद का तकनीकी विकास ।

आरंभ से गुटेनबर्ग तक प्रिंटिंग प्रेस का विकास :-

- 105 AD में टसूप्लाइलून (चीनी नागरिक) ने कागज बनाया। मुद्रण की पहली तकनीक चीन, जापान और कोरिया में विकसित हुई।
- 10वीं सदी के पूर्वाद्ध तक ब्लॉक प्रिंटिंग द्वारा मुद्रा-पत्र छापे गए
- 1041 ई० में चीनी व्यक्ति पि-शेंग ने मिट्टी की मुद्रा बनाई
- शंघाई प्रिंट संस्कृति का केन्द्र बना, सिविल सेवा के आकांक्षी छात्रों को पुस्तक की छपाई से अध्ययन में मदद मिली।
- अध्येता के रूप में विद्वान, व्यापारी एवं सम्पन्न वर्ग सामने आया।

ब्लॉक प्रिंटिंग:- स्याही से लगे काठ के ब्लॉक पर कागज को रखकर छपाई करने की विधि को ब्लॉक प्रिंटिंग कहते हैं।

गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग प्रेस का विकास :-

- रेशम मार्ग से ब्लॉक प्रिंटिंग के नमूने ईसाई मिशनरी एवं मार्कोपोलो द्वारा रोम पहुंचा। (यूरोप)
- रोमन लिपि में अक्षरों की संख्या चीनी लिपि से कम होने के कारण छपाई संस्कृति का तेजी से विकास ।
- कागज बनाने की कला 11वीं सदी में यूरोप पहुंची तथा 1336 में प्रथम पेपर मिल की स्थापना जर्मनी में हुई।
- बिखरी हुई मुद्रण कला को जर्मनी के स्ट्रेसवर्ग शहर के गुटेनवर्ग ने एकत्रित कर पंच, मेट्रिक्स मोल्ड को योजनाबद्ध तरीके से बनाया।
- सीसा रांगा और स्याही का उपयोग शुरू।

PDF SARTHI.COM

- कम्पोज टाईप मैटर का मुद्रण शोध 1440 में शुरू।
- 42 लाइन एवं 36 लाइन (1448) के बाइबिल की छपाई गुटेनबर्ग के द्वारा।
- 421 लाइन वाले बाइबल का मुद्रण गुटेनबर्ग द्वारा शुरु किया गया लेकिन फर्स्ट शुओफर द्वारा इसे पूर्ण किया गया।
- सुओफर ने इण्डलजेंस की छपाई की।
- बेसल्स, रोम, वेनिस, एण्टवर्ष एवं पेरिस मुद्रण के प्रमुख केन्द्र पुनर्जागरण के भी केन्द्र बने।
- 1475 में सर विलियम्स कैकस्टन शूटर मुद्रण कला को इंग्लैंड में ले तथा वेस्ट मिनस्टर कस्बे में उनका प्रथम प्रेस स्थापित हुआ।
- 1544 में मुद्रण कला की शुरुआत पुर्तगाल में हुआ।

गुटेनबर्ग के बाद का तकनीकी विकास :-

- 1475 में इंग्लैंड में मुद्रण कला की शुरुआत।
- पुर्तगाल में 1544 ई० में तथा पुर्तगालियों द्वारा ही 16वीं सदी में भारत में मुद्रण की शुरूआत।
- अब प्रेस धातु के बनने लगे (18वीं सदी से)
- एम०हो० ने शक्तिचालित वेलनाकार प्रेस बनाया। 18वीं सदी के अन्त तक ऑफसेट प्रेस द्वारा 6 रंगों में छपाई ।
- 20वीं सदी में पेपर रील और फोटो विद्युतीय नियत्रण कार्य शुरू

मार्टिन लूथरः

- मार्टिन लूथर ने रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों का रचना करते हुए अपनी 95 स्थापनाएं लिखी।
- मार्टिन लूथर ने कहा "मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है सबसे बड़ा तोहफा।"
- कैथोलिक चर्च के द्वारा इनकीजीशन शुरू किया गया है।

भारत में दो प्रकार के प्रेस थे:-

(i) एंग्लो इंडियन प्रेस

(ii) भारतीय प्रेस

PDF SARTHI.COM

अंग्रेज द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र की विशेषता :-

1. फूट डालो एवं शासन करो की नीति का प्रचार प्रसार

2. सरकारी खबरें एवं विज्ञापन छापना

3. भाषा अंग्रेजी एवं संपादन कार्य कंपनी के अधिकारियों द्वारा

अंग्रेज द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र :- बंगाल गजट एवं इंडिया गजट: जे०के० हिकी (1780) कलकत्ता कैरियर, एशियाई मिरर, ओरियंटल स्टार, बंबई गजट, हेराल्ड, मद्रास गजट-इनका क्षेत्र कंपनी के अधिकारियों व्यापारियों तक सीमित था।

भारतीयों द्वारा समाचार पत्र की विशेषता :-

- राष्ट्रवादी विचार का प्रचार प्रसार
- अंग्रेजी शासन की आलोचना

भारत में प्रेस का विकास

- पांडुलिपियाँ ताड़ के पत्तों या हाथ से बने कागज पर नकल कर बनाई जाती थीं। हाथों से लिखी पुस्तकों को पांडुलिपियाँ कहते हैं।
- कैथोलिक पुजारियों ने 1579 ई. में कोचीन में पहली तमिल किताब छापी और 1713 ई. में उन्होंने ही पहली मलयालम पुस्तक छापी।
- जेम्स ऑगस्टस हिकी ने 1780 से 'बगाल गजट' नामक एक साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन/प्रकाशन आरम्भकिया। बंगाल गजट ही भारतीयों द्वारा प्रकाशित प्रथम अखबार बा, जिसे गंगाधर भट्टाचार्य ने प्रकाशित करना शुरू किया था।
- प्रिटिंग प्रेस सबसे पहले भारत में पुर्तगालियों द्वारा 16वीं सदी में लाया गया।
- आधुनिक भारतीय प्रेस का प्रारंभ 1766 में विलियम बोल्टस द्वारा एक समाचार पत्र के प्रकाशन से हुआ।
- भारतीयों द्वारा प्रकाशित प्रथम समाचार पत्र 1816 में गंगाधार भट्टाचार्य का साप्ताहिक बंगाल गजट था।
- फारसी भाषा के साप्ताहिक समाचार पत्र मिरात-उल-अखबार के संस्थापक राजा राममोहन राय थे।

PDFSARTHI.COM

- 1899 में अंग्रेजी मासिक पत्रिका ने हिन्दुस्तान रिव्यू की स्थापना और संपादन सच्चिदानंद सिन्हा ने की। इसका प्रकाशन इलाहाबाद स्थित इंडियन प्रेस ने किया था।

राजा राममोहन द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र निम्न हैं-

1. 1821 में बंगला भाषा में 'संवाद कौमदी

2. 1822 में फारसी भाषा में 'मिरातुल अखबार'

- मद्रास में 1878 में साप्ताहिक रूप से प्रकाशित होने वाला हिन्दू, 1881 में दैनिक रूप में परिवर्तित हो गया। इस पत्र का दृष्टिकोण उदारवादी था।
- डॉ. एनी बेसेन्ट ने भी मद्रास स्टैंडर्ड को अपने संचालन में लेकर न्यू इंडियन का नामक होमरूल का नारा जन-जन तक पहुँचाया।
- गाँधीजी ने यंग इंडिया और हरिजन पत्र का प्रकाशन किया।
- मोतीलाल नेहरू ने 1919 में 'इंडिपेंडेन्स' का और शिव प्रसाद ने हिन्दी दैनिक 'आज' का प्रकाशन किया।
- के. एम. पत्रिकर ने 1922 में हिन्दुस्तान टाइम्स का संपादन प्रारंभ किया।
- बाद में हिन्दुस्तान टाइम्स का सम्पादन कार्य मदनमोहन मालवीय के हाथ में आया।
- एम.ए. राय ने अग्रेजी माध्यहिक इंडिपेंडेन्ट 1930 प्रकाशित किया।
- एस. सदानंद के संपादन में ही फ्री प्रेस जर्नल का प्रकाशन शुरू किया गया।
- मौलाना आजाद के संपादन में 1912 में 'अल हिलाल' तथा 1913 में 'आम बिलाल कलकता से निकलना प्रारंभ हुआ।
- मोहम्मद अली ने अंग्रेजी में 'कामरेड' तथा उर्दू में 'हमदर्द' का प्रकारान किया।
- 1910 में गणेश शंकर विद्यार्थी के संपादन में 'प्रताप' का प्रकाशन कानपुर से प्रारंभ हुआ।
- 1913 में 'गदर' का प्रकाशन हरदयाल के द्वारा मैन फ्रांसिस्को से किया गया।
- अंग्रेजों ने पौष्यकालीन राजधानी शिमला को बनाया था।
- बाल गंगाधर तिलक द्वारा 1881 में बंबई में अंग्रेजी भाषा में 'मराठा' और मराठी भाषा में 'केसरी' की शुरुआत की। (2022)

PDFSARTHI.COM

- 1862 में एम.जी. रानाडे ने 'इन्दु प्रकाश' तथा फिरोज शाह मेहता ने 1913 में 'बाम्बे क्रॉनिकल' का प्रकाशन आरंभ किया।
- बंगाल में उग्रवाद फैलाने का काम आबिद घोष और वरिंद्र घोष ने जुगांतर तथा वदेमातरम् के माध्यम से किया।
- गाँधीजी ने यंग इंडिया और हरिजन पत्र का प्रकाशन किया। (2019, 2022)
- हिन्द स्वराज पुस्तक के लेखक महात्मा गाँधी थे। (2018)
- 'एम.एन. राय ने अंग्रेजी साप्ताहिक इंडिपेंडेन्ट 1930 में *एम.एन. राय प्रकाशित किया।

भारतीय प्रेस की राष्ट्रीय आन्दोलन में भूमिका :-

- साम्राज्यवादी शोषण का विरोध करना ।
- राष्ट्रीय चेतना का प्रचार-प्रसार करना।
- सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन को बढ़ावा देना ।
- लोकमत का प्रतिनिधित्व करना।
- नई शिक्षा नीति के प्रति असंतोष को उजागर करना।
- विदेश नीति के प्रति आलोचनात्मक एवं समीक्षात्मक दृष्टिकोण।
- धार्मिक सद्भाव एवं समन्वय स्थापित करना।

प्रेस के विरुद्ध प्रतिबंध :-

- 1799 का समाचार पत्रों का पत्रेक्षण (सेंसर) अधिनियम लार्ड वेलेजली।
- 1823 के अनुज्ञप्ति नियम जॉन एडमस।
- भारतीय समाचार पत्रों की स्वतंत्रता अधिनियम 1835 विलियम बैंटिक ।
- 1857 का अनुज्ञप्ति अधिनियम।
- देशी समाचार-पत्र अधिनियम (वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट) 1878 लार्ड लिटन।
- 1908 का भारतीय समाचार पत्र अधिनियम ।
- 1910 का भारतीय समाचार पत्र अधिनियम ।
- 1931 का भारतीय समाचार पत्र अधिनियम (संकटकालीन शक्तियों)।

PDF SARTHI.COM

- समाचार पत्र जाँच समिति- 1947 ।
- 1951 का समाचार पत्र आपत्तिजनक विषय अधिनियम ।

स्वतंत्र भारत में प्रेस की भूमिका :-

- साहित्य एवं समाज में चेतना जागृत करना।
- भाषा शास्त्र के विकास में योगदान देना।
- समाज में नवचेतना, मानवतावाद, तर्कवाद का विकास करना।
- सामाजिक बुराईयों एवं अंधविश्वासों का विरोध करना।
- स्वस्थ मनोविनोद का प्रयास करना।
- दिन प्रतिदिन की उपलब्धियों एवं सूचनाओं का प्रसारण करना।
- चौथे स्तंभ के रूप में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का दायित्व निभाना ।

1. गुटेन्बर्ग ने छापाखाना (मुद्रण यंत्र) का आविष्कार कैसे किया ?

उत्तर - गुटेन्बर्ग ने जैतून पेरने की मशीन को आधार बनाकर प्रिंटिंग प्रेस का ईजाद किया। इस मशीन में पेंच की सहायता से लंबा हैंडल लगा होता था। पेंच को घुमाकर प्लाटेन को गीले कागज पर दबाया जाता था। साँचे का उपयोग कर अक्षरों की धातु की आकृतियों को ढाला गया। इन टाइपों को घुमाने या 'मूव' करने की व्यवस्था भी की गई। इसलिए, इस प्रेस को मूवेबल टाइप प्रिंटिंग मशीन कहा गया। मुद्रण स्याही भी बनाई गई।

2. मार्टिन लूथर कौन था ? अपने धार्मिक विचारों का प्रचार करने के लिए उसने मुद्रित सामग्री का व्यवहार कैसे किया ?

उत्तर - मार्टिन लूथर जर्मनी का एक धर्मसुधारक था। उसका जन्म 1485 में जर्मनी में हुआ था। उसने धर्मविज्ञान में डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की। वह रोमन कैथोलिक चर्च में व्याप्त कुरीतियों का विरोधी था। अपने विचारों के प्रचार के लिए उसने मुद्रण का सहारा लिया। 1517 में उसने 'पंचानबे स्थापनाएँ' लिखकर इसकी एक प्रति विटेनबर्ग चर्च के दरवाजे पर टाँग दी। इसकी प्रतियाँ छापकर चर्च को वाद-विवाद करने की चुनौती दी गई। आगे चलकर लूथर के समर्थक 'प्रोटेस्टेंट' कहलाए।

PDFSARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

3. इन्दवीजीशन से आप क्या समझते हैं? इसकी क्या आवश्यकता थी?

उत्तर - यूरोप में पुस्तकों के प्रकाशन से नई राजनीतिक एवं धार्मिक मान्यता का विकास हुआ। धर्म-विरोधी विचारों के प्रसार को रोकने के लिए रोमन चर्च ने इन्क्वीजीशन का गठन किया। यह एक प्रकार का धार्मिक न्यायालय था । इसका कार्य धर्म-विरोधियों की पहचान कर उन्हें दंडित करना था । इटली के मेनोकियो ने जब बाइबिल और उसके उपदेशों की नई व्याख्या की, तो उसे मृत्युदंड दे दिया गया।

4. रोमन चर्च प्रतिबंधित पुस्तकों की सूची क्यों रखने लगा ?

उत्तर - रूढ़िवादी और कट्टर चर्च को भय सता रहा था कि पुस्तकें नई धार्मिक विचारधारा का प्रसार कर चर्च की सत्ता को चुनौती दे रही हैं। इसे रोकने के लिए चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तकविक्रेताओं पर प्रतिबंध लगाया। इसका उद्देश्य धार्मिक स्वरूप को चुनौती देनेवाली सामग्री का प्रकाशन रोकना था। 1558 से चर्च प्रतिबंधित पुस्तकों की सूची रखने लगा जिससे उनका पुनर्मुद्रण और वितरण नहीं हो सके।

5. मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए किस प्रकार अनुकूल परिस्थितियाँ बनाईं ?

उत्तर - मुद्रित सामग्री ने निम्नांकित तीन प्रकार से क्रांति लाने में सहयोग दिया।

(i) इसने ज्ञानोदय के विचारों का प्रसार किया। इन्हें पढ़कर लोगों में नई चेतना जगी। मॉन्टेस्क्यू, वाल्तेयर और रूसो के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा।

(ii) मुद्रण ने वाद-विवाद की संस्कृति का भी विकास किया। लोग अब परंपराओं और अंधविश्वासों को तर्क की कसौटी पर कसने लगे।

(iii) बुद्धिजीवियों ने निरंकुशवाद, दरबार की विलासिता एवं उसके नैतिक पतन को उजागर किया। इसने राजशाही के विरुद्ध असंतोष को बढ़ावा देकर क्रांति की भावना को बलवती बनाया।

6. 1799 के समाचारपत्रों के पत्रेक्षण अधिनियम के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर - इस अधिनियम को गवर्नर-जनरल वेलेस्ली ने भारत में फ्रांसीसी क्रांति के प्रभावों को फैलने से रोकने के लिए पारित किया। इसके द्वारा समाचारपत्रों पर सेंसरशिप लगा दिया गया। प्रत्येक समाचारपत्र के लिए यह आवश्यक बना दिया गया कि वह समाचारपत्र में संपादक, मुद्रक एवं प्रेस के मालिक का नाम प्रमुखता से प्रकाशित करे।

PDF SARTHI.COM

प्रकाशन के पूर्व सभी समाचारों को सरकार के सचिव से अनुमति लेना आवश्यक बना दिया गया। 1807 में यह व्यवस्था समाचारपत्रों के अतिरिक्त पत्रिकाओं, छोटे प्रकाशनों एवं पुस्तकों पर भी लागू की गई।

7. 1867 के पंजीकरण अधिनियम पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर - इस अधिनियम द्वारा भारतीय प्रेस को नियंत्रित करने के नियम बनाए गए। इस अधिनियम के अनुसार प्रत्येक पुस्तक, समाचारपत्र एवं पत्र-पत्रिकाओं पर प्रकाशक, मुद्रक तथा मुद्रण के स्थान का नाम देना आवश्यक बना दिया गया। इसके साथ-साथ प्रकाशक को प्रकाशित पुस्तक की एक प्रति सरकार के पास जमा करना भी अनिवार्य था। राजद्रोहात्मक समाचार प्रकाशित करनेवाले संपादकों एवं लेखकों को दंडित भी किया जा सकता था। इससे प्रेस पर सरकारी नियंत्रण बढ़ गया।

8. स्वतंत्र भारत में प्रेस की भूमिका पर प्रकाश डालें।

उत्तर - स्वतंत्र भारत में प्रेस की प्रभावशाली भूमिका रही है। यह राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विकास में प्रभावशाली भूमिका निभा रहा है। यह अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक, क्षेत्रीय घटनाओं, सरकारी नीतियों, खेल-कूद तथा मनोरंजन की सूचना देनेवाला प्रमुख माध्यम है। यह सरकार पर प्रभावशाली नियंत्रण रखता है तथा लोकतंत्र के 'चौथे स्तंभ' के रूप में कार्य करता है।

9. स्वतंत्र भारत में प्रेस के प्रति सरकारी नीति की समीक्षा करें।

उत्तर - स्वतंत्र भारत में सरकार ने औपनिवेशिक नीति से भिन्न नीति अपनाई । यद्यपि समाचारपत्रों को अधिक स्वतंत्रता दी गई तथापि उनपर कुछ अंकुश भी लगाए गए। 1951 में समाचारपत्र (आपत्तिजनक विषय) अधिनियम पारित किया गया। इसके द्वारा आपत्तिजनक समाचार प्रकाशित करनेवाले प्रेस को सरकार जब्त कर सकती थी। इसका विरोध होने पर सरकार ने एक प्रेस कमीशन नियुक्त किया जिसकी अनुशंसा पर अखिल भारतीय समाचारपत्र परिषद् का गठन किया गया। कमीशन के अन्य सुझाव भी स्वीकार कर लिए गए। आपातकाल में प्रेस की स्वतंत्रता पर पुनः आघात हुआ, परंतु सामान्यतः भारतीय प्रेस स्वतंत्र हैं।

प्रेस, संस्कृति और राष्ट्रवाद

PDFSARTHI.COM

1. मुद्रण यंत्र की विकास यात्रा को रेखांकित करें। यह आधुनिक स्वरूप में कैसे पहुँचा ?

उत्तर - मुद्रण का आरंभ चीन से हुआ। 105 में टस्-प्लाई-लून ने कागज का आविष्कार कर उसपर छपाई आरंभ की। आरंभ में मुद्रण हाथ से किया गया, परंतु 6ठी शताब्दी में काठ की तख्ती या वुड ब्लॉक पर छपाई की जाने लगी। 8वीं शताब्दी तक चीन में वुड ब्लॉक छपाई का प्रचार बढ़ गया। 1041 में पि-शेंग ने मिट्टी से अक्षरों की छाप बनाई। इन्हें एक साथ जोड़कर पंक्ति बनाई जा सकती थी। ब्लॉक प्रिंटिंग का चलन हो गया। 1295 में मार्कोपोलो चीन से वापस लौटते समय अपने साथ वुड ब्लॉक छपाई की तकनीक इटली लाया । इटली में वुड ब्लॉक छपाई की तकनीक आरंभ हुई। इटली से इसका प्रसार यूरोप के अन्य भागों में भी हुआ। 1336 में कागज बनाने का पहला कारखाना जर्मनी में खुला। इससे मुद्रण का विकास हुआ। मुद्रण वास्तविक क्रांति 1448 में तब आई जब योहान गुटेन्बर्ग ने जर्मनी में छापाखाना या में प्रेस का आविष्कार किया। इस मशीन को 'मूवेबल टाइप प्रिंटिंग मशीन' कहा गया। उसने रोमन वर्णमाला के 26 अक्षरों के टाइप और स्याही भी बनाई। इनसे मुद्रण का तेजी से विकास हुआ। जर्मनी के अतिरिक्त यूरोप के अन्य भागों में भी छापाखाना खुलने लगा। इससे यूरोप में जैसे-जैसे छपाई का विस्तार हुआ वैसे-वैसे छापाखाना में भी निरंतर सुधार किए गए। 18वीं सदी के अंतिम चरण तक धातु के बने प्रेस काम करने लगे। 19वीं - 20वीं सदी में छापाखाना में और अधिक तकनीकी सुधार किए गए। 19वीं शताब्दी में एम० ए० हो ने बेलनाकार प्रेस का आविष्कार किया। 20वीं सदी के आरंभ से ऑफसेट प्रेस बनाए गए। आगे चलकर कागज लगाने की विधि में सुधार किया गया तथा प्लेट की गुणवत्ता बढ़ाई गई। साथ ही, स्वचालित पेपर-रील और रंगों के लिए फोटो-विद्युतीय नियंत्रण का व्यवहार किया जाने लगा। इन तकनीकी बदलावों ने प्रेस और प्रिंटिंग को नया आयाम प्रदान किया।

2. यूरोप में मुद्रण का धर्म पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - मुद्रण क्रांति ने यूरोपीय धर्म पर व्यापक प्रभाव डाला। प्रकाशित पुस्तकों को पढ़कर प्रचलित धार्मिक मान्यताओं पर प्रश्न उठाए जाने लगे, उनपर वाद-विवाद होने लगे। सबसे पहले इंगलैंड के जॉन विकलिफ ने रोमन चर्च में व्याप्त कुरीतियों और पोप के विरुद्ध आवाज उठाई। विकलिफ के कार्य को जर्मनी निवासी मार्टिन लूथर ने आगे बढ़ाया। 'पंचानबे स्थापनाएँ' लिखकर लूथर ने चर्च में व्याप्त कुरीतियों पर प्रहार किया। इसकी एक प्रति विटेनबर्ग चर्च के दरवाजे पर टाँगकर लूथर ने वाद-विवाद के लिए खुली चुनौती दी। लूथर के तर्कों का जनमानस पर व्यापक प्रभाव पड़ा, बड़ी संख्या में लोग उसके समर्थक बन गए। वे 'प्रोटेस्टेंट' कहलाए। इससे चर्च में विभाजन

PDFSARTHI.COM

हो गया - 'प्रोटेस्टेंट' और 'कैथोलिक'। प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म का प्रमुख संप्रदाय बन गया। कैथोलिकों का प्रभाव कमजोर पड़ गया।

रोमन चर्च अभी भी अपना प्रभाव बनाए रखना चाहता था। पुस्तकों द्वारा प्रसारित नई मान्यताओं को चर्च दबाये रखना चाहता था। इसलिए रोमन चर्च ने 'इन्क्वीजीशन' नामक संस्था का गठन किया। इसका कार्य धर्म-विरोधियों की पहचानकर उन्हें दंडित करना था। नए धार्मिक विचारों के प्रचार-प्रसार को रोकने के लिए प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया। अनेक पुस्तकों को प्रतिबंधित भी कर दिया। इतना ही नहीं, 1558 से चर्च प्रतिबंधित पुस्तकों की सूची भी रखने लगा जिससे उनका पुनर्मुद्रण नहीं हो सके। इस प्रकार, प्रकाशित पुस्तकों ने यूरोपीय धर्मसुधार आंदोलन को बढ़ावा दिया।

3. 19वीं सदी में भारत में प्रेस के विकास को रेखांकित करें।

उत्तर - यूरोप की तुलना में भारत में प्रेस का विकास देरी से हुआ। यूरोपियनों के प्रभाव से भारत में भी प्रेस खोले गए। पुर्तगाली धर्मप्रचारकों, जेसुइटों ने 16वीं सदी के मध्य में पहली बार प्रेस स्थापित किया। उनलोगों ने स्थानीय लोगों से कोंकणी भाषा सीखकर उसमें अनेक पुस्तके छापी। इसी प्रकार कैथोलिक पादरियों, डच धर्मप्रचारको ने तमिल, मलयालम और कन्नड़ भाषा में अनेक पुस्तकें प्रकाशित कीं। 18वीं - 19वीं शताब्दी में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन अन्य भाषाओं में भी आरंभ हुआ। 1857 के विद्रोह के बाद इसमें और तेजी आई। अँगरेजी और देशी भाषा में अनेक पुस्तकें, पत्र - पत्रिकाएँ एवं समाचारपत्र प्रकाशित किए जाने लगे। आधुनिक भारतीय प्रेस का आरंभ 1768 से माना जाता है। इस वर्ष विलियम बोल्टस ने अपना समाचारपत्र प्रकाशित किया जो शीघ्र ही बंद हो गया। 1780 में जेम्स के हिक्की ने 'बंगाल गजट' प्रकाशित किया। 18वीं सदी के अंत तक 'इंडिया गजट', 'बंबई गजट', 'मद्रास गजट' जैसे समाचारपत्र भी प्रकाशित होने लगे। देशी भाषाओं में भी अनेक समाचारपत्र प्रकाशित हुए। देशी भाषा में प्रकाशित होनेवाला पहला समाचारपत्र था गंगाधर भट्टाचार्य का 'बंगाल गजट' जो 1816 में बँगला में प्रकाशित हुआ। 19वीं शताब्दी में पुस्तकों, पत्र - पत्रिकाओं और समाचारपत्रों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई। 1821 में राजा राममोहन राय ने बँगला में 'संवाद कौमुदी' का प्रकाशन किया। इस सदी के अन्य प्रकाशनों में उल्लेखनीय हैं— 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'स्टेट्समैन', 'पायनियर', 'इंगलिशमैन', 'सिविल एंड मिलिट्री गजट', 'मराठा', 'केसरी', 'हिंदू पैट्रियट', 'अमृत बाजार पत्रिका', 'हिंदू', 'आर्यावर्त' इत्यादि । 20वीं शताब्दी में क्रांतिकारी गतिविधियों और राष्ट्रवाद से उत्प्रेरित अनेक प्रकाशन हुए; जैसे- 'युगांतर', 'न्यू इंडिया' इत्यादि। इन समाचारपत्रों एवं

PDFSARTHI.COM

पत्र-पत्रिकाओं ने औपनिवेशिक नीतियों की आलोचना की, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का समर्थन किया एवं भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

4. प्रेस के प्रति औपनिवेशिक सरकार की नीतियों की समीक्षा कीजिए। अथवा, औपनिवेशिक सरकार ने भारतीय प्रेस को प्रतिबंधित करने के लिए क्या किया ?

उत्तर - समाचारपत्र सरकार और उसकी नीतियों की आलोचना करते थे। अतः, इन्हें नियंत्रित करने के प्रयास आरंभ कर दिए गए। ऐसा दो कारणों से किया गया। (i) ईस्ट इंडिया कंपनी ऐसा कोई समाचार प्रकाशित नहीं होने देना चाहती थी जिससे कंपनी की अर्थव्यवस्था और भ्रष्टाचार का समाचार छपे जिससे इंगलैंड की सरकार उसके विरुद्ध कार्रवाई करे, उसके व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दे। (ii) अँगरेजी राज में राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार पर नियंत्रण लगाना आवश्यक हो गया। अतः, समय-समय पर प्रेस पर नियंत्रण लगाने के लिए कानून बनाए गए।

वेलेस्ली के पूर्व तक प्रेस के लिए कोई निश्चित आचार संहिता नहीं थी, परंतु उसके समय से प्रेस को नियंत्रित करने का प्रयास आरंभ हुआ। (i) वेलेस्ली ने भारत में फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव को रोकने के लिए 1799 में समाचारपत्रों का पत्रेक्षण अधिनियम पारित किया। इसके अनुसार, समाचारपत्रों पर यह प्रतिबंध लगा दिया गया कि कोई भी समाचार प्रकाशित करने के पूर्व उसकी समीक्षा सरकारी पदाधिकारियों से करवा लें। (ii) 1823 में अनुज्ञप्ति नियम या लाइसेंसिंग अधिनियम बना। इसके अनुसार, प्रेस स्थापित करने के पहले सरकार की अनुमति लेना आवश्यक था। इसी प्रकार, 1857 के लाइसेंसिंग अधिनियम तथा 1867 के पंजीकरण अधिनियम द्वारा प्रेस और समाचारपत्रों पर अंकुश लगाया गया। प्रेस को प्रतिबंधित करनेवाले अधिनियमों में सबसे कठोर और विवादास्पद 1878 में लिटन द्वारा पारित वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट था। इसने समाचारपत्रों पर पूर्ण अंकुश लगा दिया। भारतीयों में इसकी कड़ी प्रतिक्रिया हुई। सरकार ने अन्य अनेक अधिनियम भी पारित किए; जैसे - 1898 का अधिनियम, 1908 का समाचारपत्र अधिनियम, भारतीय समाचारपत्र अधिनियम, 1910 तथा भारतीय समाचारपत्र अधिनियम, 1931. इन सबका उद्देश्य समाचारपत्रों को स्वतंत्रतापूर्वक काम करने से रोकना तथा सरकारी हित के विरुद्ध समाचारों को प्रकाशित होने से रोकना था।

6. भारतीय प्रेस की विशेषताओं को लिखें।

अथवा, बदलते परिप्रेक्ष्य में भारतीय प्रेस की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक समाचारपत्रों, पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का प्रकाशन सीमित स्तर पर होता था। इसका प्रमुख कारण था कि सामान्य जनता, समृद्ध कुलीन और सामंती वर्ग की रूचि प्रेस में नहीं थी। प्रेस चलाना घाटे का व्यवसाय माना 'जाता था। साथ ही, सरकारी कोपभाजन का भी खतरा था। इसके बावजूद समाचारपत्रों ने सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों को समर्थन देकर तथा शासकीय प्रजातीय विभेद की नीति की आलोचना कर राष्ट्रीय चेतना जगाई। 1857 के विद्रोह के बाद समाचारपत्रों के प्रकाशन में तेजी आई। इस समय से समाचारपत्रों के स्वरूप में भी परिवर्तन आया। समाचारपत्र प्रजातीय आधार पर दो वर्गों- (i) ऐंग्लोइंडियन तथा (ii) भारतीय प्रेस में विभक्त हो गए। ऐंग्लोइंडियन प्रेस ने सरकार समर्थक दृष्टिकोण अपनाया। इस समय अँगरेजी भाषा और अँगरेजों द्वारा संपादित और प्रकाशित समाचारपत्रों में उल्लेखनीय हैं- 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'स्टेट्समैन', 'इंगलिशमैन' इत्यादि। इसके विपरीत भारतीय प्रेस, जो अँगरेजी और देशी भाषाओं में समाचारपत्र प्रकाशित करते थे, ने अँगरेजी सरकारी नीतियों की आलोचना की। इसने राजनीतिक-सामाजिक ज्वलंत प्रश्नों पर भारतीय दृष्टिकोण को रखा। इसने भारतीयों में राष्ट्रीयता एवं एकता की भावना जागृत करने का प्रयास किया। ऐसे समाचारपत्रों में 'सोमप्रकाश, हिंदू पैट्रियट', 'अमृत बाजार पत्रिका' के नाम महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें प्रकाशित प्रबुद्ध भारतीयों के लेखों से राष्ट्रीय आंदोलन को गति मिली। इसलिए, भारतीय प्रेस को नियंत्रित करने के लगातार प्रयास किए जाते रहे।

7. तकनीकी विकास का मुद्रण पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - योहान गुटेन्बर्ग द्वारा 1448 में प्रिंटिंग प्रेस 'मूवेबल टाइप प्रिंटिंग मशीन का आविष्कार करने के पचात तकनीक की सहायता से प्रिंटिंग प्रेस में लगातार सुधार कर इसे और अधिक उन्नत बनाया गया। जैसे-जैसे छपी हुई सामग्रियों (पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं) की माँग बढ़ती गई, वैसे-वैसे छापाखाना में निरंतर सुधार किए गए। इसका उद्देश्य कम लागत मूल्य और समय में अधिक-से-अधिक मुद्रित सामग्री का प्रकाशन करना था। 18वीं सदी के अंतिम चरण तक धातु के प्रेस बनने लगे। 19-20वीं सदी में छापाखाना में और अधिक सुधार किया गया। 19वीं शताब्दी के मध्य में न्यूयॉर्क निवासी रिचर्ड एम. हो ने शक्तिचालित 'बेलनाकार प्रेस' का आविष्कार किया। इसके द्वारा प्रति आठ हजार ताव छापे जा सकते थे। इसी सदी के अंत तक 'ऑफसेट प्रेस' का भी इजाद किया गया। इसके द्वारा एक ही साथ छह रंगों में छपाई की जा सकती थी। बीसवी सदी के आरंभ से बिजली-संचालित प्रेस व्यवहार में आया। इसने छपाई को और अधिक गति प्रदान की। प्रेस में अन्य तकनीकी सुधार भी किए गए। कागज लगाने की विधि में सुधार किया गया तथा प्लेट की गुणवत्ता बढ़ाई गई। स्वचालित पेपर-ल और रंगों के लिए फोटो-

PDF SARTHI.COM

विद्युतीय नियंत्रण का व्यवहार किया जाने लगा। वर्तमान समय में प्रेस में और अधिक तकनीकी सुधार किए गए हैं। इससे पुस्तकें कम खर्च और कम समय में तथा नई साज-सज्जा के साथ बाजार में आने लगी है।

8. Press Culture And Nationalism

1. किसके आविष्कार का महत्व भौतिक संसार में आग, पहिया और लिपि की तरह है?

(a) छापाखाना

(b) रेलवे

(c) वायुयान

(d) मुद्रा

Ans – A

2. कागज का आविष्कार किस देश में हुआ?

(a) चीन

(b) जर्मनी

(c) जापान

(d) रोम

Ans – A

3. किस देश में सरकारी नौकरियों की प्रतियोगिता परीक्षाओं में मुद्रित सामग्रियों की माँग बढ़ा दी?

(a) जापान में

(b) चीन में

(c) भारत में

PDF SARTHI.COM

(d) इंगलैंड में

Ans – B

4. विश्व में सर्वप्रथम मुद्रण की शुरुआत कहाँ हुई?

(a) भारत

(b) जापान

(c) चीन

(d) अमेरिका

Ans – C

5. जापान में छपाई की तकनीक किनके द्वारा लाई गई?

(a) मंगोल विजेताओं द्वारा

(b) यूरोपीय व्यापारियों द्वारा

(c) ईसाई धर्म प्रचारकों द्वारा

(d) चीनी बौद्ध भिक्षुओं द्वारा

Ans – D

6. चीनी व्यक्ति पि-शेंग ने मिट्टी की मुद्रा कब बनाई?

(A) 1841

(B) 1041

(C) 1031

PDF SARTHI.COM

(D) 1240

Ans – B

7. वुड ब्लॉक छपाई की तकनीक सबसे पहले कहाँ विकसित की गई?

(a) मिस्र में

(b) भारत में

(c) जापान में

(d) चीन में

Ans – D

8. 13वीं सदी में किसने ब्लाक प्रिंटिंग के नमूने यूरोप में पहुँचाए?

(a) मार्कोपोलो

(b) निकितिन

(c) इत्सिंग

(d) मेगास्थनीज

Ans – A

9. यूरोप में कागज बनाने का पहला कारखाना कहाँ खोला गया?

(a) इंगलैंड में

(b) रूस में

(c) जर्मनी में

(d) इटली में

PDF SARTHI.COM

Ans – C

10. गुटेनवर्ग का जन्म हुआ था—

(a) अमेरिका में

(b) जर्मनी में

(c) जापान में

(d) इंग्लैण्ड में

Ans – B

11. इंगलैंड में मुद्रणकला को पहुँचाने वाला कौन था?

(a) हैमिल्टन

(b) कैक्सटन

(c) एडिसन

(d) स्मिथ

Ans – B

12. गुटेनवर्ग ने सर्वप्रथम किस पुस्तक की छपाई की?

(a) कुरान

(b) गीता

(c) हदीस

(d) बाइबिल

Ans – D

PDF SARTHI.COM

13. बेलनाकार प्रेस का आविष्कार किसने किया?

(a) गुटेनबर्ग ने

(b) ग्रिम बंधुओं ने

(c) रिचर्ड एम० हो ने

(d) कैक्सटन ने

Ans – C

14. छापाखाना का आविष्कार किसने किया?

(a) गुटेनवर्ग ने

(b) कैक्सटन ने

(c) एम० हो ने

(d) इनमें से कोई नहीं

Ans – A

15. किसने कहा, मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है, सबसे बड़ा तोहफा?

(a) महात्मा गाँधी

(b) मार्टिन लूथर

(c) मुहम्मद पैगम्बर

(d) ईशा मसई

Ans – B

16. मार्टिन लूथर कौन थे?

PDF SARTHI.COM

(a) समाज सुधारक

(b) दार्शनिक

(c) राजनीतिज्ञ

(d) धर्म सुधारक

Ans – D

17. एक पैसिया मैगजीन किस देश में प्रकाशित हुई?

(a) फ्रांस में

(b) जर्मनी में

(c) इंगलैंड में

(d) रूस में

Ans – B

18. पंचानवे स्थापनाएँ किसने लिखी?

(a) मार्टिन लूथर ने

(b) ज्विंगली ने

(c) काल्विन ने

(d) इग्नेशियस लॉयोला ने

Ans – A

19. किस शताब्दी के अंत तक प्रेस लगे धातु के बनने थे? धातु के बनने

(a) 16वीं शताब्दी

PDF SARTHI.COM

(b) 17वीं शताब्दी

(c) 18वीं शताब्दी

(d) 19वीं शताब्दी

Ans – C

20. बेलनाकार प्रेस में प्रतिघंटे कितनी ताव छापे जा सकते थे?

(a) 5000

(b) 8000

(c) 7000

(d) 9000

Ans – B

21. बिजली से चलने वाले छापाखाने का प्रारंभ कब से हुआ?

(a) 18वीं सदी के प्रारंभ से

(b) 16वीं सदी के प्रारंभ से

(c) 19वीं सदी के प्रारंभ से

(d) 20वीं सदी के प्रारंभ से

Ans – D

22. भारत में पहला छापाखाना किन लोगों ने लगाया?

(a) पुर्तगालियों ने

(b) डचों ने

PDFSARTHI.COM

(c) फ्रांसीसियों ने

(d) अंग्रेजों ने

Ans – A

23. भारत में पहला छापाखाना कहाँ लगाया गया?

(a) बंबई में

(b) गोवा में

(c) कलकता में

(d) मद्रास में

Ans – B

24. जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने किसका प्रकाशन किया?

(a) बंगाल गजट का

(b) इंडिया गजट का

(c) बंबई गजट का

(d) मद्रास गजट का

Ans – A

25. भारतीय समाचार पत्रों के 'मुक्तिदाता' के रूप में कौन गवर्नर-जनरल विख्यात है?

(a) वारेन हेस्टिंग्स

(b) वेलेस्ली

(c) चार्ल्स मेटकॉफ

PDF SARTHI.COM

(d) लिटन

Ans – C

26. भारत में प्रथम समाचार-पत्र निकालने का श्रेय

(a) गंगाधर भट्टाचार्य

(b) चार्ल्स मेटकॉफ

(c) जे० ए० हिक्की

(d) राममोहन राय

Ans – C

27. 'संवाद कौमुदी' का प्रकाशन किसने किया?

(a) राजा राममोहन राय

(b) महात्मा गाँधी

(c) बालगंगाधर तिलक

(d) लोकमान्य तिलक

Ans – A

28. 'भारत मित्र' समाचार द्वारा भारत से हो रहे किस चीज के निर्यात का विरोध किया गया?

(a) गेहूँ

(b) चावल

(c) चीनी

(d) दाल

PDF SARTHI.COM

Ans – B

29. भारतीय प्रेस का प्रारंभ विलियम वोल्टास द्वारा कब किया गया?

(a) 1766

(b) 1765

(c) 1760

(d) 1740

Ans – A

30. भारतीयों द्वारा प्रकाशित प्रथम समाचार-पत्र था-

(a) बंगाल गजट

(b) पायोनियर

(c) अमृत बाजार पत्रिका

(d) सुलभ समाचार

Ans – A

31. संवाद कौमुदी का प्रकाशन किस भाषा में हुआ?

(a) हिंदी में

(b) बंगला में

(c) अंगरेजी में

(d) गुजराती में

Ans – B

PDF SARTHI.COM

32. राजा राममोहन राय ने फारसी में किस पत्रिका का संपादन किया?

(a) रास्त गोफ्तार

(b) जामें जमशेद

(c) अखबारे सौदागर

(d) मिरातुल अखबार

Ans – D

33. देशी भाषा में प्रकाशित पहला समाचार पत्र था—

(a) हिन्दू पैट्रियट

(b) स्टेट्स मैन

(c) बंगाल गजट

(d) मद्रास मेल

Ans – A

34. किस विद्रोह के पश्चात् समाचार पत्रों की प्रकृति का विभाजन प्रजातीय आधार पर किया जा सकता है?

(a) 1757 का विद्रोह

(b) 1857 का विद्रोह

(c) जनजातीय विद्रोह

(d) चंपारण विद्रोह

Ans – B

35. कौन सा समाचार पत्र उदार विचारों का पोषक था?

PDF SARTHI.COM

(a) इंग्लिशमैन

(b) मद्रासमेल

(c) स्टेट्समैन

(d) पायनियर

Ans – C

36. 'हिन्दुस्तान रिव्यू' का प्रकाशन किसने आरम्भ किया?

(a) रामकृष्ण वर्मा

(b) श्री कृष्ण सिंह

(c) मजहरुल हक

(d) सच्चिदानंद सिन्हा

Ans – D

37. लाला हरदयाल ने किस समाचार पत्र का प्रकाशन किया?

(a) गदर का

(b) युगांतर का

(c) वंदे मातरम का

(d) हिंदू का

Ans – A

38. 'बांबे क्रॉनिकल' का प्रकाशन किसने किया?

(a) एम०जी० राणाडे ने

PDF SARTHI.COM

(b) बाल गंगाधर तिलक ने

(c) गोपाल कृष्ण गोखले ने

(d) फिरोजशाह मेहता ने

Ans – D

39. श्रीमती ऐनी बेसेंट ने होमरूल के पक्ष में लोकमत का गठन किस पत्रिका द्वारा किया?

(a) यंग इंडिया

(b) न्यू इंडिया

(C) वंदे मातरम

(d) स्वराज्य

Ans – B

40. सोमप्रकाश का प्रकाशन किसने किया?

(a) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

(b) राममोहन राय

(c) सुरेन्द्रनाथ टैगोर

(d) महात्मा गाँधी

Ans – A

41. अमृत बाजार पत्रिका का प्रकाशन किसने आरंभ किया?

(a) बालगंगाधर तिलक

(b) गंगाधर भट्टाचार्य

PDF SARTHI.COM

(c) मोतीलाल घोष

(d) राजा राममोहन राय

Ans – C

42. अलहिलाल के संपादक कौन थे?

(a) मोहम्मद अली

(b) मौलाना अबुल कलाम आजाद

(c) महात्मा गाँधी

(d) सर सैयद अहमद खान

Ans – B

43. महात्मा गाँधी ने किस समाचार पत्र के माध्यम से अपने विचारों का राष्ट्रवादी आंदोलन का प्रचार किया?

(a) न्यू इंडिया

(b) हिन्दुस्तान टाइम्स

(c) यंग इंडिया

(d) वंदेमातरम

Ans – C

44. महात्मा गाँधी ने किस पत्र का संपादन किया?

(a) कामनवील

(b) यंग इंडिया

(c) बंगाली

PDF SARTHI.COM

(d) बिहारी

Ans – B

45. किस पत्र ने रातों-रात वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट से बचने के लिए अपनी भाषा बदल दी?

(a) हरिजन

(b) भारत मित्र

(c) अमृत बाजार पत्रिका

(d) हिन्दुस्तान रिव्यू

Ans – C

46. 'हरिजन' पत्रिका का प्रकाशन किसने आरंभ किया था?

(a) राममोहन राय

(b) फिरोजशाह मेहता

(c) महात्मा गाँधी

(d) जवाहरलाल नेहरू

Ans – C

47. तिलक ने 'केसरी' का प्रकाशन किस भाषा में किया?

(a) हिन्दी में

(b) अंग्रेजी में

(c) मराठी में

(d) कोंकणी में

PDF SARTHI.COM

Ans – C

48. अंग्रेजों द्वारा पक्षपात की नीति की आलोचना किसने की?

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(b) रामधारी सिंह दिनकर

(c) राममोहन राय

(d) केशवचन्द्र सेन

Ans – A

49. कांग्रेस में वैचारिक मतभेद के फलस्वरूप सूरत फूट कब हुआ?

(a) 1906

(b) 1907

(c) 1908

(d) 1909

Ans – B

50. स्वतंत्र भारत में समाचार पत्र अधिनियम किस वर्ष पारित हुआ?

(a) 1950 में

(b) 1951 में

(c) 1952 में

(d) 1953 में

Ans – B

PDF SARTHI.COM

51. न्यूज पेपर एक्ट कब पास किया गया?

(a) 1906

(b) 1905

(c) 1908

(d) 1909

Ans – C

52. वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट किस वर्ष पारित हुआ?

(a) 1878

(b) 1872

(c) 1876

(d) 1875

Ans – A

53. 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' किस गवर्नर जनरल के समय में पारित हुआ?

(a) वारेन हेस्टिंग्स

(b) लार्ड डलहौजी

(c) लार्ड लिटन

(d) लार्ड रिपन

Ans – C

54. आजादी के बाद समाचार पत्र आपत्तिजनक विषय अधिनियम कब पारित हुआ?

PDF SARTHI.COM

(a) 1951

(b) 1953

(c) 1954

(d) 1956

Ans – A

55. प्रेस लोकतंत्र के किस स्तंभ के रूप में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने हेतु सजग प्रहरी के रूप में खड़ा है?

(a) पहला

(b) दूसरा

(c) तीसरा

(d) चौथा

Ans – D

56. पत्रकारिता साहित्य, मनोरंजन, ज्ञान-विज्ञान प्रशासन, राजनीति आदि को प्रत्यक्ष रूप से कौन प्रभावित कर रहा है?

(a) सिनेमा

(b) नाटक

(c) प्रेस

(d) टेलीविजन

Ans – C

PDF SARTHI.COM